Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2.2

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by ...

...द्वा की दिव्य विभूति

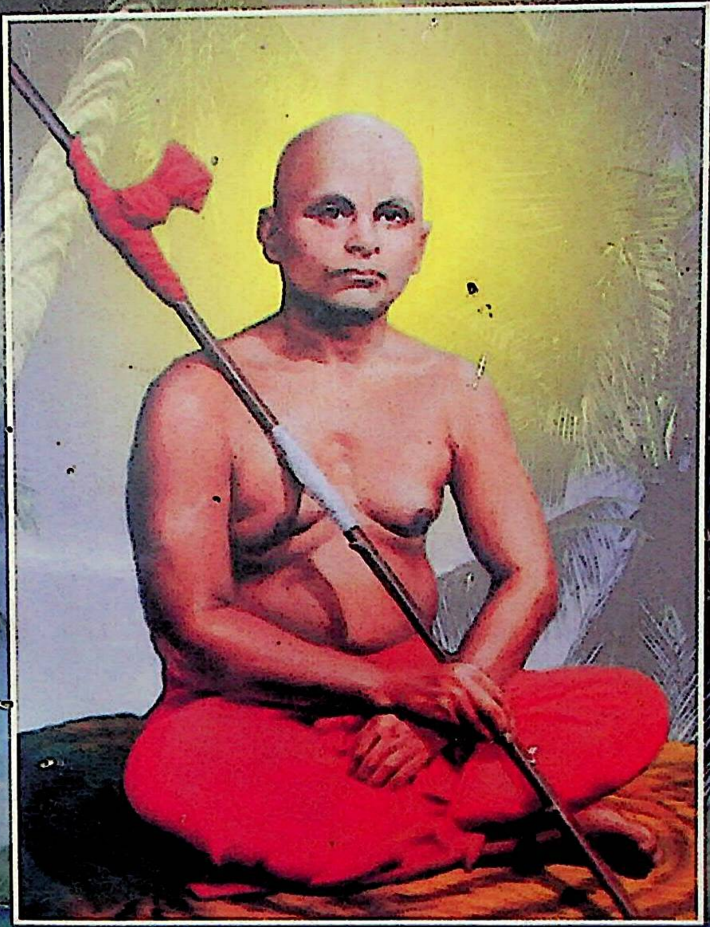

जननायक दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती

अवतरण
महाशिवरात्रि सं०१९४५ वि०

निर्वाण
आषाढ़ कृष्ण ११ सं० २००७ वि०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवा की दिव्य विभूति

• गाथा काव्य •

दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती
राजगुरु मठ, शिवालाघाट, वाराणसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

© स्वामी सहजानंद सरस्वती शोध संस्थान

प्रकाशक : स्वामी सहजानंद सरस्वती शोध संस्थान
बी–३/१७५, राजगुरु मठ,
शिवाला घाट, वाराणसी–१

मुद्रक : वर्क सेंटर
ए–३२/४१, शाह एण्ड नाहर इन्ड. एस्टेट,
लोअर परेल, मुंबई ४०० ०१३

टाईप सेटिंग : संयोग प्रकाशन
काशी विश्वनाथ नगर,
भायंदर (पूर्व), मुंबई ४०१ १०५
फोन : ८१५ १७ ३७

मूल्य : श्रद्धा–प्रेम भाव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवा की दिव्य विभूति

प्राक्कथन

धर्म-रक्षा के लिए, कर्मणा-मनसा-वाचा, शूर-वीरों की तरह संघर्ष करनेवाले, आदर्शचरित्र के ब्राह्मणों के कुल में अवतरित बुंदेल-खण्ड के 'जजाक् भुक्ति या जुझौती प्रदेश से, मध्य युगीन राष्ट्र-विप्लव के समग्र, अपने पूर्वजों के स्थानान्तरण से, दैवयोग से, गाजीपुर जनपद के देवा नामक गाँव में, स्वनाम धन्य 'नवरंग राय', वेद-मंत्र-द्रष्टा ऋषियों के पावन-कुल में, दिव्य विभूति के रूप में अवतरित, अभ्युदय के जिज्ञासु-पथिकों को, अपने आदर्श-चरित्र से आलोक प्रदान करनेवाले, केवल मध्य विद्यालय तक की शिक्षा ग्रहण करके, भगवान की खोज में निकले और चित्रकूट के कामतानाथ, गुप्त-गोदावरी, अनुसूया-मंदाकिनी होते, नर्मदा पार के माने गाँव तक पहुँचकर, अपनी अगली छलांग में ऋषिकेश, हरिद्वारा भी गये। किन्तु उन्हें कहीं भगवान् से भेंट नहीं हुई। वे पुनः काशी लौटे और गाजीपुर के ही, पुरैना गाँव के पूर्व-अधिवासी, दण्डिवासी पूर्णानन्द सरस्वती की प्रेरणा से, गुरुवर्य दण्डिस्वामी अद्वैतानन्द सरस्वती से दीक्षित हो दण्डिस्वामी सहजानन्द हो गये। अपने बड़े गुरुभाई दण्डिस्वामी पूर्णानन्द सरस्वती के संरक्षण में ही रह, उनके सहयोग से, उन्होंने काशी के तत्कालीन पंडितराज, महामहोपाध्याय पं. शिवकुमार शास्त्री से अल्पकाल में वेद-शास्त्रों का सांगोपांग अध्ययन किया। पुनरपि अपनी ज्ञान-पिपासा शान्त करने के लिए, वे मिथिला के देश-विख्यात मीमांसक पं. चित्रधरं मिश्र के यहाँ भी गये और उनसे पूर्णरूपेण मीमांसा का अध्ययन किया। इसके बाद उन्होंने मिथिला के रामेश्वर-लता-महाविद्यालय में पं. बालकृष्ण मिश्र से न्याय का अध्ययन किया, जो इनकी विलक्षण प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए। आखिर नव्य-न्याय की अपनी पीपासा-शांति के लिए वे बंगाल की अनूठी विद्याभूमि नदिया-शांति भी गये।

अंत में उन्हें भगवान किसानों में मिले और उन्होंने 'वन्दे अन्नदातारम्' का नारा देकर बहुतों को आश्चर्य-चकित कर दिया।

महात्मा गांधी के बारह वर्षों तक निजी-सचिव रहे, गुजरात के विधिवेत्ता इन्दुलाल याज्ञिक, 'बार ऐट-ला' ने अपनी हिन्दी भक्ति से अहमदाबाद की किसी हिन्दी मासिक पत्रिका में एक निबंध पढ़कर कि-'भगवान् बड़ा नहीं है, रोटी बड़ी है'-इनसे संपर्क किया कि-'आप तो खतरनाक संन्यासी हैं, मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।' यह बात १९३६ ई. की है। लखनऊ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हो रहा था। पं. जवाहरलाल नेहरू दूसरी बार अधिवेशन के अध्यक्ष बने थे। स्वामी जी भी विगत १९२० से ही अ. भा. कांग्रेस कमेटी के परम्परागत सदस्य होते आये थे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे लखनऊ पहुँचे तथा इन्दुलाल याज्ञिक से उनका संपर्क जुड़ा । वहीं आन्ध्र के कांग्रेस नेता प्रो. एन. जी. रंगा से भी उनका संबंध जुड़ा और अ.भा. किसान-सभा का देशव्यापी संगठन खड़ा हो गया । स्वामी सहजानन्द सरस्वती सभा के सर्वप्रथम अध्यक्ष बने और उन्होंने लाखों किसानों को उनके वर्गीय हितों की रक्षा के लिए संबोधित और अनुप्राणित किया ।

आठ वर्षों के बाद वेजवाड़ा में अ.भा. किसान-सभा के आठवें अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पाँच लाख किसानों को अपनी दैवी-प्रतिभा से संबोधित और उद्वेलित किया, उनमें स्फूर्ति और चेतना जगायी ।

आपने दण्डधारी शांकरमार्गी संन्यासी के वेश में देशकाल-परिस्थिति के अनुसार धारा प्रवाह अंग्रेजी भाषा में अपना व्याख्यान दिया । उन्होंने आंकड़ों के आधार पर बताया कि देश की नब्बे प्रतिशत आबादी किसानों की है और ये किसान गाँवों में रहते हैं । अत: किसान ही भारत या हिन्दुस्तान हैं । दूसरे दिन मद्रास के अंग्रेजी दैनिक पत्र ''हिन्दु'' ने अपने संपादकीय अग्रलेख में लिखा कि 'किसान इज इंडिया' और इस प्रकार स्वामी जी की ऐतिहासिक घोषणा का समर्थन किया । आज तो स्वामी जी भारत में किसान-जागरण के जन्मदाता के रूप में विश्व-विख्यात हो चुके हैं । प्रो.एन.जी. रंगा ने स्वामी जी के नेतृत्व में रहकर किसानों में कामं करना सीखा ।

स्वामी जी की अनुकंपा से ही वे बिहार के शेरघाटी नामक स्थान में तृतीय बिहार प्रान्तीय किसान-सम्मेलन के अध्यक्ष बने और किसानों को संबोधित किया ।

ऐसे ही अनेक अलौकिक कार्यों के काव्यात्मक चित्रण के रूप में-'देवा की दिव्यविभूति' नामक उनका गाथाकाव्य-राजगुरुमठ, शिवाला घाट, वाराणसी के श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती शोध-संस्थान की ओर से लोक-कल्याण की भावना से, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बिहार-प्रान्तीय प्रमुख नरेन्द्र जी एवं प्रबंध निदेशक, गल्फा लेबोरेटरीज श्री नवलकिशोर सिंहजी की परमकृपा से प्रकाशित हो रहा है । अत: श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती शोध संस्थान उनका चिरऋणी रहेगा ।

भवदीय,

प्रमोदकुमार दीक्षित, एम.ए. (हिन्दी, समाजशास्त्र)
साहित्याचार्य, बी.एड.
स्थायी निदेशक एवं सचिव,
स्वामी सहजानन्द सरस्वती शोध संस्थान
बी-३/१७५, राजगुरु मठ, शिवाला घाट, वाराणसी-१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवा की दिव्य विभूति

वेदमंत्र द्रष्टा ऋषियों के
पावन कुल की
मंगलकारी दिव्य विभूति
नयी ज्योति नवयुग की
उतरी मूर्तिमान हो
देवा की धरती पर
नवरंग संज्ञा धारी ।
देवा उत्तर प्रदेश के
सबसे पूर्वी छोर -
और बिहार से मिले
गाजीपुर मंडल के
सैयद्पुर तहसील मनोरम
नेक शादियाबाद परगना
थाना बिरनो भीतर
एक पुराना गाँव
ऐतिहासिक है ।
वहां सुसंस्कृत-
सभ्य और संपन्न
कुछ जुझौतिया ब्राह्मण
कई पीढ़ियों से रहते हैं ।
उनकी यह छोटी-सी टुकड़ी
कब सुदूर पश्चिम से
कैसे वहाँ पहुँचकर
टिकी-बसी, यह पता नहीं है ।
हो सकता है
सदियों पहले
कभी देश में
अप्रत्याशित विप्लव-
और राजनीतिक,
उलट-फेर के चलते
पश्चिम के बुंदेलखण्ड से
जुझौतिया ब्राह्मण लोगों का
यह दल संकट की घड़ियों में
भूला-भटका,
आ पहुंचा हो कभी वहाँ पर ।
कान्यकुब्जवर्गीय द्विजों की
एक प्रमुख शाखा ही
जुझौतिया कहलाती है ।
जजाक् भुक्ति या जजहुति,
पुण्य भूमि के अंग
उस बुंदेलखण्ड के पास
एक क्षेत्र का
अति प्राचीन नाम है ।
वहां निवास करने से
वंशमूल के,
आदि ठाँव के चलते
ये ब्राह्मण क्षेत्रीय वहाँ के
कालान्तर में
जुझौतिया कहलाये ।
लोग वहाँ के
खूब वीर होते थे

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह तो सर्वविदित है ।
और वस्तुत: इसका
साक्षी है इतिहास ।
इसीलिए बुंदेलखण्ड को
कभी जुझौती भी कहते थे ।
जुझौतिया ब्राह्मण अधिकांश
उसी भाग में
और हमीरपुर-ललितपुर,
झांसी में पाये जाते हैं ।
देवा के जुझौतिया ब्राह्मण
कश्यप या कश्यप गोत्रीय
निपुन काश्यपी-सेवक *१
प्रगतिशील पौरुष-प्रवीण हैं ।
शूर लड़ाकू जुझौतियों की
इस छोटी टुकड़ी को
समय परिस्थिति के वश
अपने उस विस्तृत समाज से
कटकर यहाँ पहुँचने पर भी
अपनी सत्ता कायम रखने
और शांति सुविधा सुख
चिर उज्ज्वल भविष्य की
मधुर लालसा लिये हृदय में
सुधी पूर्व पुरुषों से प्राप्त
सहज वंशगत स्वभाववश
एवं बद्धमूल सामाजिक
रीति-संस्कारों के चलते
क्रियाशील रह
लोहा लेना पड़ा यहां भी ।
गढ़ खाई दूहों के,
जिन्हें मोरचा भी कहते हैं,
अति महत्त्व के
इस जीवंत गाँव की
लम्बी और पुरानी ईंटें,
पूज्य कोट-देवी प्राचीन,
तथा पास की
कब्र शहीद मर्द की
इसके पक्के प्रमाण हैं ।
प्राचीनों की
कठिन मूक भाषा को
सुनकर सहज समझनेवाले
पुरातत्त्व-मर्मज्ञ मनीषी
कुटिल काल-विश्लेषक
कभी गाँव की परिक्रमा कर
सारी कथा पुरानी
उस जीवन-संघर्ष विषम की
शौर्य-धैर्य पुरुषार्थ शील की
ध्यान मग्न हो सुन सकते हैं ।
उसी पुनीत गाँव देवा में
भद्र विशिष्ट पितामह
ठाकुर प्रसाद राय कुलवंत
एवं सुकृति तपस्वी
मर्यादा मूर्द्धन्य
बेनीराय महान् पिता के
सात्विक कुल में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जन्म-जन्म के
संचित पुण्य-प्रतीक स्वरूप
वह शुभ सर्व-शक्तिधर
पुंजीभूत विलक्षण-ज्योति
सत्य-शील-निष्ठा-मनस्विता
विद्या विनय-विवेकशीलता
योगयुक्त पौरुष-प्रवीणता,
शौर्य-धैर्य ऋजुता दयालुता
अतुल त्याग सर्वात्म-भावना
आदि मुख्यत:
नव प्रकार के
दिव्य गुणों से भूषित
लग्न मुहूर्त घड़ी शुभ जान
लीला-चरित प्रदर्शित करने
वसुधा तल पर
सगुणं रूप में आयी।
भुवन सातवें
सत्यलोक की
द्रवीभूत यह विद्युत्-शक्ति निराली
ईसवी वर्ष
अठारह सौ नवासी
मधुर मास फागुन की
दिव्य महाशिवरात्रि मंडिता
मंगल तिथि को
सत् संविद् प्रकाश बन
तम को दूर भगाने आयी।
माता-पिता दिव्य-कुल वैभव
वैदिक-संस्कार-संस्कृति से
नयी ज्योति नवजीवन पाकर
विनय-शील संयम की
सहज मूर्ति वह
समय परिस्थिति की पुकार पर
प्रचलित रीति नियम की
राह पकड़कर
पढ़ने-लिखने शिक्षा पाने
चली गाँव से बाहर !
सन् अठारह सौ निनानबे
शुरू जनवरी में ही,
बस दो मील दूर देवा से
विदित जलालाबाद
बड़ा गाँव-बाजार
पहुँच वहाँ पर
एक अपर-प्राइमरी
नगद पाठशाला में
नाम लिखाकर
प्रकृति-विलक्षण बालक नवरंग
पढ़ने जाने लगा नियम से,
छ: कक्षाओं की शिक्षा को
तीन वर्ष में पूरी करके
सन् उनइस सौ दो ईस्वी की
अंत जनवरी हो या
शुरू फरवरी का दिन
सुगम जलालाबाद
उच्च प्राथमिक विद्यालय से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चलकर सुदूर
गाजीपुर से पश्चिम
परगना करंडा भीतर
गाँव गोसंदेपुर में
नवरंग के अध्यापक
लेकर उन्हें गये थे,
प्राइमरी की
अंतिम कक्षावाली
मुख्य परीक्षा दिलवाने को,
राजकीय शिक्षा अधिकारी
स्कूलों के डिप्टी साहेब
वहां निरीक्षण में आये थे,
उन्होंने बटुरे छात्रों की
स्वयं परीक्षा ली थी ।
प्रत्युत्पन्न बुद्धि के
इस अनुरागी निपुन छात्र ने
बेखटके पूर्णाङ्क बीस में
उनइस अंक सहज ही पाये,
एक अंक इसलिए कटा कि
हिन्दी के व्याकरण विषय का
एक प्रश्न जो
डिप्टी ने पूछा था
वह निर्दिष्ट व्याकरण-पोथी
से बाहर का था ।

सन् उनइस सौ दो ईसवी के
शुरू समय में
उच्च प्राथमिक शिक्षा
जब नवरंग ने पूरी कर ली
मर्यादा के साथ,
तब फिर घरवालों की
इच्छा के अनुसार शीघ्र ही
उनके चरण चारिका करते
पहुंचे गाधिपुरी में,
जहां कोट पर
तहसीली की
हिन्दी मिडिल-पाठशाला में
नामांकन की विधि पूरी कर
पढ़ने लगे नियमतः ।
प्रथी पूर्व पुरुषों की
शिक्षा-पद्धति से अनुप्राणित
वे गुरुकुल की तरह वहाँ पर
छात्रावास व्यवस्था में रह
विमल ज्ञान की अतुलित सम्पत्ति
निजी पुराकृत संचित निधि से
आवश्यकता के अनुसार
हस्ताक्षर कर
धीरे-धीरे लेने लगे समय से ।
पढ़ने-लिखने में पटुं
और प्रकृति से-
नटखट नहीं धीर मृदु
उनका अपने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्यापक लोगों से
रहा मधुर सम्बन्ध ।
तीक्ष्ण बुद्धि के
दक्ष छात्र नवरंग का
गणित विषय से
था हार्दिक अनुराग,
विद्यालय में
पढ़ते समय वहां पर,
विश्वम्भरपुर वासी,
अमृत राय जी उनके,
थे घनिष्ठ प्रेमी सहपाठी ।
क्योंकि वे भी
प्रखर बुद्धि के
गणित-प्रवीण छात्र थे ।
सन् उनइस सौ चार ईसवी
नयें वर्ष के शुरू समय में
अंतिम मिंडिल-परीक्षा
हुई छात्र नवरंग की
जोकि सरकारी होती थी
और जिसका परिणाम
शासन-घोष-पत्र में
सदा छपा करता था,
कई महीने बीत चुके थे,
ग्रीष्म ऋतु आयी छायी थी,
उसी सयम पर
उत्तर प्रदेश के सभी
मिडिल स्कूलों की
हुई परीक्षा का फल
एक साथ निकला था
और सर्वसाधारण
धुनी प्रौढ़ पढ़वइया छात्र
कितने ही हजार-
उत्तीर्ण हुए थे,
उसमें पूरे प्रदेश भर में
गुणानुक्रम नवरंग का
अति प्रशंस्य
बहुमान्य सातवाँ था ।
ग्रीष्मावकाश में
ननिअउरे की
यात्रा के अवसर पर
मामा जी के साथ स्वयं ही
आजमगढ़ के, सदर नगर में जाकर
कुशल छात्र नवरंग ने
घोष पत्र देखा था ।
उचित समय आने पर
छात्रवृत्ति भी मिली उन्हें थी ।
ग्रीष्मावकाश के बाद
विद्यालय खुलने पर
गाजीपुर के
जर्मन-मिशन-प्रबंधित
हाई इंगलिश स्कूल विदित में
विद्याव्रती अलौकिक छात्र
नवरंग नाम लिखाकर
पढ़ने-लिखने लगे प्रेम से ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अबकी उनका
शुभ निवास था-
हरिशंकरी महल्ला
विश्रुत गुणेश्वर महादेव के
विमल रम्य-मंदिर में ।
अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल
सात-आठ दोनों वर्गों की
दो वर्षों की जटिल पढ़ाई
एक वर्ष में
भली भांति पूरी कर
आप्तकाम वे हुए सहज ही,
लेकिन उनकी इतर परीक्षा
छात्रवृत्ति की
वाराणसी नगर के
ख्यात क्वींस कालेज भवन में
हुई व्यवस्था के अनुसार,
उसमें भी वे
श्रद्धा-शील सत्य-निष्ठा से
बहुत प्रतिष्ठा पूर्वक
बने कृती उत्तीर्ण हुए ।
पुन: उन्होंने,
छात्रवृत्ति भी प्राप्त किया ।

सन् उनइस सौ छ: ईसवी की,
बात गर्मियों की है,
प्रथम बार जब
थोड़ी-सी वैराग्य भावना
उर अंतर अंकुरित हुई थी,
उसी बीच अवसर पा
उद्वेलित-चित नवरंग
संन्यासी बनने की
उत्कट अभिलाषा से
घर से चुपके,
हरिद्वार के लिए निकलकर
काशी पहुंचे ।
लेकिन टिकट वहाँ का
मिलने में कुछ कठिनाई थी
अत: लखनऊ का ही
टिकट कटा वे
गाड़ी में सवार हो
अन्त: प्रेरित
चले सहज पश्चिम को,
किन्तु प्रकृति अभिलषित और था
इस कारण से अबकी उनको
बीच राह से काकोरी से
वापस आना पड़ा
नगर को अपने ।

विधि-विधान से निर्मित
भावी प्रौढ़ कर्म-रथ
कुटिल गूढ़ प्रारब्ध-मार्ग में
रुका रहा कुछ दिन तक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसी बीच धूमायित धूमिल
इस उलझन प्रपंच के
सघन वायुमंडल में
मिडिल पास होते ही
घरवालों ने
गतिविधि का विचार कर
चतुराई से
नवरंग की गरदन में
सांसारिक माया का
फंदा डाल दिया था ।
गाजीपुर मण्डल के
सादात रेलवे-
स्टेशन के पास
गांव मौधिंया में, समान के
सात्विक कुल में
उनका शुभ विवाह-
हो गया तभी था ।
लेकिन इस विवाह के
दो वर्षों के भीतर
संभवत:-
सन् उनइस सौ छ: के,
जाड़ों में ही
नवागता वह पत्नी
सुभगा सुयोग से
मुक्त हुई बैकुण्ठ गयी ।

——

हरिद्वार की पहली यात्रा
जिसमें कि काकोरी से ही
तरुण मनस्वी नवरंग
असफल हो लौटा था
उसके कुछ पहले ही,
पत्नी का वह बंधन
आज्ञा से अदृष्ट की
द्रुत हट गया स्वत: था ।
राह परिष्कृत-
सुगम रम्य अब
थी हो गयी दैव इच्छा से ।
इस प्रकार यात्रा से लौटा ।
चिंतनशील साहसी नवरंग
नवल धवल कल कुसुमित
सुरभित किशोर जीवन में
ललित गाधि नगरी में
विद्या के नंदनवन भीतर
देवि शारदा की वीणा का
होता है कल नाद जहाँ,
पहुँच वहाँ पर
सुषमा से सज्जित मंदिर में
हो पर्यङ्कबद्ध
मनचित बटोर कर
कठिन त्याग तप
बुद्धियोग से
जन्म-जन्म के संचित
बीजभूत प्रारब्ध कर्म से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नवक्रियमाण कर्म कौशल से
योग युक्त हो
विमल हृदय-लोचन को खोल
सहज आत्मदर्शन की
मधुर लालसा लिये सँजोये
अडिग बद्धपरिकर हो
चिन्तन-मनन-साधना पूजा
विहित अर्चना सहित वंदना
नैसर्गिक परमाणु शक्ति के
नाभकीय की
ऋत् आ सत् के
अक्षय गत्वर धर्मचक्र की
करने लगा विरज हो,
किन्तु पुन: अनुराग भीतरी
और संत दर्शन से
उद्वेलित अनुप्राणित
जीवन-यज्ञ-कुण्ड में
सुत-वनित-वैभव विलास की
लोक-सुयश-कांचन-कुरंग की
आहुतियाँ प्रदान कर
निपुन अग्निहोत्री की भांति
ज्ञान-पिपासा जिज्ञासा से
त्वरित तड़ित गति से आगे बढ़
विद्या-धर्म-ज्ञान गरिमा की
मोक्षदायिका नगरी
वाराणसी विराजित
विभु व्यापक शिव-
ब्रह्मवेद अनुरागी
देवदूत देवाविभूति वह
जुझउतिया-कुल-दीपक
लाल अनूठा नवरंग
कांतिमान अनुपरम अनमोल
परखा गया कसौटी पर कस
रख खराद पर
गया तराशा कुछ-कुछ
बस इतने से
लगा झलकने उसका
अंतरंग बहिरंग स्वरूप ।
नामरूप गति-विधि मरजादा
सब में परिवर्तन कर
तरुणाई के विकट मोड़ पर
जा पहुंचा वह परिव्राजक बन
जीवन के चौथे आश्रम में,
यद्यपि नया निराला
कठिन कंटकाकीर्ण मार्ग था
पर स्वभाव गुण काल कर्म से
प्रेरित अनुप्राणित हो
अभय भाव से अविरत गति से
सत्य-शूरता
लगन धीरता वाला
सुदृढ़ धर्मरथ उसका
श्रद्धा-शम-दम
उपरति और तितिक्षा के बल
चलता रहा सजग हो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लक्ष्य ब्रह्म की ओर ।
बहती जहाँ युगों से
श्रद्धा प्रेम विराग ज्ञान की
गंगा सरस्वती कालिंदी
उगे व्योम में
क्षय कलंक से रहित सुधाकर
अस्ति भाँति प्रिय
विमल सच्चिदानन्द,
डुबकी वहां लगायी उसने
भक्तिभाव विह्वल हो
इड़ा-पिंगला और सुषुम्णा
धवल त्रिवेणी की धारा में,
जंगम तीरथ राज प्रयाग
सुधी संत चरणों को धोया
मल-मल धोया
काया वाणी मन को ।
माँ कृतार्थ हो गयी जन्म दे
ऐसे महापुरुष को,
कुल पवित्र हो गया पुण्य से
आगे-पीछे कई पीढ़ियाँ
आरक्षण के बल से
सहज भाव से जायेंगी अब
निसंदेह गो लोक,
जीवन-मुक्ति विदेह मुक्ति की
जननी जन्म भूमि अति प्यारी
ब्रह्मरूप शंकर की
पुरी पुनीत दुलारी

तत्व ज्ञान की
विमल ज्योति फैलानेवाली
उस मूर्द्धन्य दार्शनिक
नृपति अजातशत्रु की
सिद्धि-साधना-वाली
काशी तीन लोक से न्यारी ।
वहां क्रांति की
चिनगारी आ पहुंची ।
आया महा मनस्वी
मेधावी ओजस्वी
अग्रदूत अब
नूतन युग का
नया धर्म संदेश सुनाने
नव-प्रभात की
नयी विभा झलकाने
नव आलोक मधुर फैलाने ।
देखा परखा उसने
अभ्यूदय के शुभ-विकास के
गूढ़ सूक्ष्म सूत्रों को,
मानवता के प्रहरी
महामनीषी
सिद्ध संत ब्रह्मर्षि कुलों के
यती-मुनियों के
मूलाधार-अनाहत-आज्ञा
दिव्य-सहसदल-कमल सुगंधित
प्रिय-आनन्दकुंज-कानन में
पैठ बैठ सत्संग ध्यान में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोध बोध कुछ पाया ।
डूबा अतल क्षीर सागर में
ज्ञान-सुधा घट ढूँढा ।
वेद संहिता-ब्राह्मण
आरण्यक उपनिषद् छान छकि,
ब्रह्मसूत्र गीता षड्दर्शन
तत्त्वज्ञान के सद् ग्रंथों को
पढ़ा पचाया
गूढ़ मर्म को समझा ।
ज्ञान-पिपासा-व्यग्र विवेकी
कभी काल उस धुनी पथिक ने
पुण्यभूमि मिथिला की
दौड़ लगायी-
पहुंच गये दरभंगा
और वहाँ पर
श्रीरामेश्वर लता प्रतिष्ठित
विद्यालय में
कई महीने रहकर
पंडितराज-बालकृष्ण मिश्र
बुद्धि-विलक्षण
सहज उदार हृदय से
नव्य न्याय के
सत् प्रतिपक्ष और बाध आदि
कुछ अनुपम ग्रंथों को
तथा साथ ही
काव्य प्रकाश गहन को
पढ़ हृदयङ्गम किया
सहज ही ।
उसी सिलसिले में यतिवर अजब
पंडितराज महाकवि
कुशल दार्शनिक
उस श्रीहर्ष सुधी का
ग्रंथ क्लिष्टतम
वह वेदांत केशरी
'खंडन खंड खाद्य' पढ़ते थे
तब उसमें उनको कुछ
ज्योतिष और वैद्यक के
सिद्धान्तों की
बातें कई मिली थीं
जिनका ठीक-ठीक अभिप्राय,
उस समय नहीं
वे समझ सके थे ।
बस इतना ही,
उस चाणक्य-प्रकृति के
संन्यासी के लिए अलम् था,
चट उद्यत हो उनने
ज्योतिष् एवं-
कर्मकाण्ड विद्या का
अध्ययन किया
सुचारु रूप से,
'कर्मकलाप' उसी का प्रतिफल
अनुपम मधुर सुधा है ।
और वहीं पर
प्रतिभाशाली यती ने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महामहोपाध्याय
विश्रुत चित्रधर मिश्र
महामनीषी मीमांसक से
परिचय करके
मीमांसा के
अति महत्त्व के
कुछ ग्रंथों को
मनोयोगपूर्वक विनीत हो
पढ़ा-विचारा ।
कभी पहुँचकर नदिया शांति
गहन शास्त्र चिन्तन से
ज्ञान-बुभुक्षा शांत किया,
कभी भावना की लहरों में
कूद तैरकर
गिरि-गह्वर बीहड़-वन भीतर
परमपिता परमेश्वर
नारायण गोलोक निवासी
गति निर्वाण शांति-सुख-दाता
दु:ख त्राता को
विकल व्यग्र हो खोजा ।
हरिद्वार में हृषीकेश में
मिले साधु संतों से
पाया बोध ज्ञान कुछ सीखा,
हृषिकेश में
स्वामी योगानन्द यती के
छोटे-से मठ में रह
विद्या-व्यसनी
संन्यासी जी
उसी बगल के,
थोड़ी अधिक ऊँचाई ऊपर
बने रम्य
कैलाश नाँव से-
ख्यात, पुराने मठ में,
वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली
नित पढ़ने जाते थे,
पुन: संतमुनि-
जड़ी-बूटियों के चक्कर में
निकल पड़े यात्रा पर,
तब केदारनाथ का,
बदली-नारायण का दर्शन किया
पुण्य-सुख लूटा,
भागीरथी अलकनंदा की
लहरों से हिलमिल कर
परम्परा को समझा-बूझा,
मज्जन किया मंदाकिनी में
घूम-टहलकर बांयें-दाहिने
घने वनों में
योगि-यती सिद्धों को ढूँढा,
इस प्रकार
वे तपोभूमि उत्तराखण्ड से
टहल घूमकर
काशी वापस आये ।
और वहां कुछ दिन निवास कर
घोर शास्त्र मंथन के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिव्य कर्म में
लगे रहे मनचित बटोर कर ।

संन्यासी होने पर
प्रथम चरण में
थोड़ा बहुत योग का चसका
लगा लिया था उनने ।
अत: शुरू में
बहुत फिक्र यह थी कि
अच्छे योगी ढूँढ खोजकर
प्राणायाम और कुछ
योगाभ्यास सीख लूं उनसे
सांसारिक कामों से
बहुत घृणा थी उनको,
यह भी यहाँ जान लेना कुछ
आवश्यक-सा है कि
प्राणायाम ध्यान तप
योगाभ्यास समाधि-
और वेदांत चिन्तन,
इनके सिवा और बाकी को
वे उस समय,
बस सांसारिक-
काम ही मानते थे ।
यही लालसा लिये हृदय में
तरुण तपस्वी यती सूरमा
पुन: तीर्थयात्रा पर निकले ।
अबकी उनके डेग साहसी
बढ़ते हुए गये दक्षिण को,
काशी से वे
पहले चित्रकूट जा पहुंचे,
वहां उन्होंने कामदगिरि का
भक्तिभाव से
दर्शन किया शुरू में,
पुनि प्रमोदवन होते,
दुर्गम पथ से चलकर
पहुंच गये उस-
जल प्रपात रमणीय
पुण्य तीर्थ,
हनुमानधारा को ।
फिर अनुसूया टहलघूम कर,
आश्रमवासी
बहुत साधुसंतों से-
मिले और कुछ सुना-विचारा ।
चिन्तन-मनन-आत्मविश्लेषण
किया ठहरकर
वहां कुटी-कानन में ।
कभी नर्मदा तट के
सघन विपिन क्षेत्रों में
कभी किनारे के गांवों में
परिभ्रमण कर
सिद्ध योगियों को उन्होंने
उत्सुकतावश खोजा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुनः नर्मदा पार गये वे
मध्य प्रान्त के,
जिला नरसिंहपुर अन्तर्गत
ख्यात गाँव माने में
किसी साधुसेवी ठाकुर की
श्रद्धाभक्ति संत-सेवा से
आकर्षित आमंत्रित होकर,
और वहां वेदांतशास्त्र के
चिन्तन-मनन-कथन में
एक मास का समय बिताया ।
बाद वहां के,
सुधीभक्त ठाकुर साहेब से-
छुट्टी पाकर
यतिवर ने पश्चिम को
स्वाभाविक प्रस्थान किया,
इस प्रकार वे धीरे-धीरे,
ओंकारेश्वर पहुंचे ।
और वहां से
परिव्राजक की
मुक्तवृत्तियों के अनुसार
ओंकारेश्वर के दर्शन कर
पहुंचे सिप्रा तट उज्जैन
महाकाल शिव-
ज्योतिर्लिंग ब्रह्म का
दर्शन किया वहां पर ।
कभी जहां पर
कालिदास की
काव्य-भारती गूंज रही थी,
मीमांसक मण्डन का
पुण्यधाम था ।
तोते जहां वेदमंत्रों का
उच्चारण करते थे ।
जहां घोर शास्त्रार्थ हुआ था
कर्म-ज्ञान के जटिल प्रश्न पर
भगवन् आद्य शंकराचार्य-
और सुधी मंडन में ।
मंडन मिश्र पराजित होकर
यती सुरेश्वराचार्य बने थे ।
फिर उज्जैन धाम से
राजकोट हो मथुरा आये,
जोकि कभी असल में
मधुरा थी ही ।
और वहां आह्लादित चित्त से
प्रेमा-भक्ति-मधुरता-सिंचित
पुण्यवती मधुमती निराली
योगेश्वर युग-पुरुष कृष्ण की
लीलावाली-
व्रज की धरा धन्य की
विधिवत् परिक्रमा की ।
ऐसे ही पदयात्रा करते
क्रमशः आगे बढ़ते
हृषिकेश से
हरिद्वार से होकर
वाराणसीपुरी को पहुंचे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ दिन वहाँ ठहरकर
पठन-मनन विश्राम किया ।
योगी सिद्ध ढूँढने निकले,
परिभ्रमण भी किया बहुत ही,
और थके से
असफल अभियानी की भांति
शिव निवास काशी को लौटे ।
किन्तु अभी शास्त्रों में
माथा-पच्ची करने को भी
मन तैयार नहीं था
अत: शीघ्र ही
गंगा तट की राह पकड़कर
गाजीपुर से होते
कोटवां-नारायणपुर पहुंचे
और वहां पर टिके रहे
कुछ दिन तक ।
पुन: वहां से बढ़ते,
देख-ताकि उजियार गाँव को
गये भरौली ठहरे ।
वहां उन्हें संन्यासी-मठ के
बाबा शिवप्रसाद गिरिजी ने
प्रेम-भाव से कह समुझाकर
चतुर्मास में रोक लिया ।
इस प्रकार फिर चतुर्मास के बाद
लौट वहीं से
मठ के एक युवक संन्यासी
रामचन्द्रगिरि जी का
साथ पकड़कर
प्रतिभाशाली
ज्ञान-पिपासु यतिवर
काशी आये जमकर बैठे ।
और शास्त्र-अध्ययन की
अग्नि-परीक्षा में भी
पूरे उत्तीर्ण हुए ।

पुनरपि काल विघूर्णित
प्रबल चक्र से
उद्वेलित अद्वैत-भाव से
चरण पखार कठिन सेवा कर
यती सिर मौर तपस्वी
गुरु अद्वैतानंद संत के
नैष्ठिक भक्ति लगन से,
यती-धर्म की,
सास्त्र विहित मर्यादा मान
दण्ड ग्रहण कर प्रज्ञा के बल
सहज स्वरूप सहज में
देखा पाया पहुँचा ।
वीतराग परिव्राजक
दण्डी स्वामी
श्री अद्वैतानंदमहान्
सच्चे भजनानंद
योगि पारंगत

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सिद्ध पुरुष थे ।
जीवन के आखिरी दिनों
वाराणसी पुरी में
वरुणा तट पर
चौकाघाट-रम्य एकान्त
अपनी छोटी संत-कुटी में
त्रिबिध एषणाओं से मुक्त
मन-चित बुद्धि एक कर
सम्यक भजन-ध्यान-तप-चिंतन
किया उन्होंने ।
वे शतायु योगी ऐसे थे
जिन्हें तुरीयावस्थावाली
सहज अलौकिक शांति प्राप्त थी ।
पूज्यपाद मेरे स्वामी जी
अपने प्रिय गुरुवर के
ब्रह्मलीन होने के
महत्वपूर्ण आखिरी समय में,
उनकी सेवा-शुश्रुषा में
श्रद्धापूर्वक रहे उपस्थित ।
बस तब क्या था,
गुरु की सहज कृपा से,
सहजानंद मगन मन होकर
तत्वज्ञान का
फैलाया आलोक चतुर्दिक,
छूट गया भ्रम
'सर्प नहीं यह तो रस्सी है',
ब्रह्म स्वरूप जगत् को जाना ।
जान लिया कि
राम वही जो
सबका परमप्रकाशक
सबमें रमा हुआ है ।
आखिर उसकी विमल दृष्टि ने
शोषित दलित किसानों में ही
नारायण को देखा ।
सहज बोध हो गया उसे कि
दुखी दीन दलितों की सेवा
ईश्वर की पूजा है ।
भक्तिभाव श्रद्धामय
आराधन अच्युत का ।

——

कहाँ बाज की तरह मृत्यु कब
मुँह फैलाकर
लोगों को खाती है ?
है प्रमाद ही मृत्यु असल में
लोक वेद की यह सम्मति है ।
पड़ प्रमाद में
अपने को जो भूल चुका है,
जिसमें कुल के स्वाभिमान का
लेश नहीं है,
देश-जाति के गौरव को जो
गवाँ चुका है,
सच पूछो तो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मानव कहलाने का
अधिकारी वह कभी नहीं है ।
कश्यप-भृगु, संस्कृति, सांख्यायन
भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ
कौशिक कात्यायन
श्रोतिय ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों के
पावनकुल की परम्परा में
सुधी पूर्व पुरुषों की
मर्यादा रक्षा के हेतु
कुलाचार कर्तव्य-धर्म को
जाना-माना नहीं तनिक भी
ऋषि-पितरों के ऋण को
नहीं चुकाया
भूल गया उनकी सेवा को,
वह बिलकुल नरपशु है,
जीवित-पर जीवन-विहीन है,
मुरदा के समान है ।

———

यही शील-सिद्धान्त परिष्कृत
पुण्य-शांति-सुख
प्रगति-समन्वयवाला
अपने सन्मुख रखकर
प्रथम चरण में उसने
अपना थोड़ा समय लगाया
"उस ब्रह्मर्षि वंश के-
कुछ दिग् भ्रमित-
भटकते-गिरते
स्वाभिमान से रहित जनों को
प्रिय स्वधर्म की
गति रहस्यमय समझाने में,
युगानुरूप कर्तव्य-कर्म का
सरल सुगम पथ दिखलाने में,
-जो कि कभी देश का
कर्णधार था,
संरक्षक था आर्य-धर्म का
सदाचार का
सत्य-अहिंसा-दया-त्याग-तप
सहिष्णुता-सेवा के,
सबल सूक्ष्म परमाणु कणों से
निर्मित भारतीय संस्कृति का ।"
नव-जागरण चेतनावाली
इसी परिस्थिति पृष्ठभूमि में,
अवसर पाकर
अपने वरिष्ठ गुरु भाई
स्वामी पूर्णानन्द
सरस्वती जी
और उनके चिर-परिचित
कई साथियों के कहने से
योद्धास्वभाव के यतिवर
बलिया पहुंचे ।
बात दिसम्बर
सन् उनइस सौ चौदह की है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वहाँ उन्होंने
भूमिहार ब्राह्मण-महासभा के
अधिवेशन में शामिल होकर
गौरव-गरिमावाला
समयोचित व्याख्यान दिया ।
भूमिहार-ब्राह्मण समाज में
ब्राह्मणोचित अभिमान-भान
का ही अभाव
और वस्तुत:
तद्नुकुल कर्तव्य आचरण की
अत्यन्त कमी से,
और दूसरे लोगों द्वारा,
इसीलिए पूरे समाज के
बारे में ईर्ष्यावश
कुत्सित और बेतुकी
निराधार कल्पनाओं ने
उस समाज के
कितने ही सच्चे
सुधी सेवकों को भी
विचलित एवं मर्माहत-सा
था कर दिया अवश्य
इसके चलते उनके भीतर
एक तड़प यह थी कि
कैसे इसका
किया जाय प्रतिकार ?
और वे लोग अपनी-अपनी
शक्ति और मति के अनुसार
पुण्य कार्य यह
करते भी थे,
उनके लिए किन्तु यह
था समुद्र-मंथन या-
नगपति हिमगिरि का आरोहण ।
अत: नीतिपटु धर्म-धुरंधर
शास्त्र विशारद
उस यतिवर ने
विस्मृत-विफल और अन्हुवाये
उस ब्राह्मण-समाज की
सेवा का शुभ कार्य किया कुछ-
जनहित का विचार कर,
सन् उनइस सौ पन्द्रह के ही
उत्तरार्द्ध में उनने
शास्त्र-पुराणों का मंथन कर
आक्षेपों के उत्तर
चट मुंह तोड़ और प्रमाणिक
दिया, अनेक सभाएं करके
और ग्रंथ अनमोल बनाकर
इस प्रकार वह पहली पुस्तक
सामाजिक इतिहास विषय की
'भूमिहार ब्राह्मण परिचय'
सन् उनइस सौ सोलह में,
हुई प्रकाशित सबने देखा
पढ़ा विचारा संबल पाया ।
तत्कालीन पत्रिका हिन्दी,
'सरस्वती' मासिक के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संपादक आचार्य विप्रवर
महावीर प्रसाद द्विवेदी
ने भी उसको,
अपने गहन समीक्षाक्रम में
विस्तृत विवेचनात्मक और
प्रामाणिक बतलाया ।
आगे चलकर
अनुसंधान और करने पर
दान-प्रतिग्रह-पुरोहिती के
उलझे से सवाल को लेकर
यती ने शीघ्र दूसरी पुस्तक
'ब्राह्मण-समाज की स्थिति'
रची बनायी
और भ्रांति को दूर किया,
इसके बाद भ्रमण के प्रेमी
रमताराम यती ने
गाजीपुर मंडल अन्तर्गत
करीमुद्दीनपुर थाने के
विश्वंभरपुर ख्यात गाँव में
सन् सोलह-सतरह में
दो ढाई वर्षों तक
अपना शुभनिवास रख
चारों ओर प्रचार किया ।
इसी पर्यटन-क्रम में
बक्सर के उस पार पास ही
गंगा के उत्तर किनार पर
कोटवां-नारायनपुर
जहां और पहले भी
वे प्राय: जाया करते थे,
अब की फिर ठहरे स्वभावत:
और वर्षों तक रुककर
पढ़ने-लिखने में रमे रहे,
क्योंकि वहां पठन-पाठन का
अच्छा प्रचार है
वेदांत आदि का विचार भी
होता रहता है,
नारायनपुर-
गाँव सुखी-संपन्न,
संन्यासी लोगों का
नैष्ठिक सेवक रहा सदा है ।
वैसे तो उन दिनों वहां पर
संत-सेवकों के समाज में
श्री आदित्यराय जी
प्रथमकोटि के,
संन्यासी सेवक थे,
उनके भाई गंगा राय
और उनके परिवारवाले
और लोग भी वैसे ही थे
गाँव की ही प्राय:
रीति-नीति वैसी थी,
रहकर वहीं उन्होंने
पहले पहल
राजनीतिक बातों की
थोड़ी-बहुत जानकारी की,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे सामान्य भाव से सब दिन
समाचार पत्र
पढ़ा करते थे ।
उस रौलट-कानून भयंकर
और सहज सम्बन्धित उससे
पंजाब मार्शल-ला के
हत्याकाण्ड जघन्य अन्यतम
अति रोमांचकारी का
द्रावक वर्णन भी
पढ़ा वहीं उन्होंने,
बाद उसी के
अमृतसर में
कांगरेस का-
जो अधिवेशन
हुआ महत्ववाला था,
उसकी भी खबर वहीं पर
पढ़ने को मिली उन्हें थी ।
वे नारायनपुर में
समाचार-पत्र हिन्दी का
'प्रताप' पढ़ते थे ।
उसमें ही उन्होंने
स्वर्गीय लोकमान्य तिलक की
असामयिक मृत्यु की
खबर पढ़ी थी ।
मृत्यु तिलक की
उनइस सौ उनइस की
इकतीस जुलाई को
अर्द्ध रात्रि के बाद हुई थी ।
पहली अगस्त को
खिलाफत संगठन के
अनुशासन अनुरोध पहल पर
असहयोग दिवस-
देश भर में
मनाया जाने को था,
गांधी जी उसके
प्रबल पक्षपाती थे
और मालवीय जी आदि
उसका विरोध करते थे,
लाला लाजपत राय की
अध्यक्षता में,
कांगरेस का-
विशेष अधिवेशन
कलकत्ते में
सन् उनइस सौ बीस के
सितम्बर में
सम्पन्न हुआ था,
उसका विवरण भी
उनने पढ़ा और जाना था ।
इस प्रकार वे
सन् उनइस सौ उनइस
और बीस में
बहुत राजनीतिक बातों का
तथा देश में होनेवाली
तन्मूलक घटनाओं का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मानस-पटल-शुभ्र पर
सविधि संकलन
करने लगे सदा थे,
आगे चलकर
यती विरागी
राजनीति के कार्यक्षेत्र में
कैसे उतरे,
और कर्मणा-मनसा-वाचा
जनसेवा का
पुण्य कार्य संपन्न किया
उसे आप सुनिये अब
उसकी बातें ऐसी हैं कि-
जन-जागृति की लहर देश में
बढ़ते देख बहुत तेजी से
कुटिल विदेशी शासक
धैर्य छोड़ घबड़ाये ।
इसीलिए उन्होंने
रौलट कानून बनाकर
लोकतंत्र के
उगते हुए नये पौधे को
शीघ्र उखाड़ फेंकना चाहा,
उसकी ही प्रतिक्रिया स्वरूप
सजग शूरवीरों की धरती
उस सुदूर पंजाब-प्रान्त में
रावी तट पर
जालियांवाले बाग भीतर
भारी हत्याकाण्ड हुआ ।

उसके चलते
असंतोष की अग्नि-शिखाएं
दुखी देश के
हर कोने में फैल चुकी थीं
वैसी विकट परिस्थिति में तब
कोई कैसे
भला अछूता रह सकता था ?
सन् उनइस सौ बीस ईसवी,
मास दिसम्बर का वह
था पहला सप्ताह,
जब गांधी जी
पंजाब काण्ड रोमांचक
और खिलाफत आंदोलन का
सघन कार्यक्रम लेकर
असहयोग के लिए देश को
उद्यत करने के विचार से
अबुल क़लाम आजाद
और मुहम्मद अली
दोनों मौलाना लोगों को
लिये साथ में
दौरा करते
पटना में आये थे,
मौलाना मजहरूल्हक के
मकान पर,
ठहरे थे वे लोग ।
उसी समय यतिवर ने
केवल कौतूहल वश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और सहज सामान्य-
जानकारी के विचार से
पांच दिसम्बर के दिन
ठीक दस बजे
गांधी जी से मिलकर
घंटे भर तक
देश-काल-संबंधी
बहुतेरी बातें कीं ।
कुछ स्वाभाविक
बातचीत के बाद
राजनीति की बातें
होती रहीं बहुत-सी ।
उसी बीच में
कुशल विचारक यती ने उनसे
अपने मन की
शंका कही बतायी यह कि-
ऐसा कहीं न हो कि
प्रश्न खिलाफत का
हल हो जाने पर
बीच राह में ही झट
ये मौलाना
और चतुर नेतागण
इस राष्ट्रीय लड़ाई से हट
दूर खड़े हों,
और अकेले,
बस हिन्दू लोगों को
लड़ना पड़े ।

अंत में गांधी जी ने
यतिवर को आश्वस्त किया कि
ऐसा कभी नहीं हो सकता ।
मुझे हिन्दुओं की गीता पर
है पूरा विश्वास ।
जब तक है वह
हिन्दू धर्म सुदृढ़ है,
कोई उसका
कुछ कर नहीं सकेगा,
इस प्रकार से बात अंत में
आयी पहुंच किनारे ।
बातचीत का
यह परिणाम हुआ कि
सरल-हृदय-संन्यासी
आगे चलकर
राजनीति में
शीघ्र कूद ही पड़े कमर कस ।
उनके कुछ साथी-सहयोगी
जिला मुंगेर खगड़िया,
दुर्गापुर के
श्री उमेश्वर बाबू
और कन्हैयाचक के
श्री सूर्यनारायण बाबू
आदि भद्रपुरुषों ने
इस निर्णय का
अनुमोदन भी किया हृदय से ।
बातचीत के बाद शीघ्र ही

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यतिवर गये खगड़िया ।
और वहाँ से
उसी उमेश्वर बाबू
निपुन देशसेवक के साथ
शीघ्र नागपुरवाले
कांगरेस के अधिवेशन में
दर्शक बनकर पहुंचे ।
वहीं उन्होंने पहली बार
जगन्नाथ के
सुधी शंकराचार्य
कृष्ण भारती तीर्थ मान्यवर-
को देखा कि
वे लखनऊ निवासी
नारायण स्वामी के साथ
कांगरेस के उस मेले में
शामिल होने ही आये थे ।
लौट नागपुर अधिवेशन से
प्रतिभाशाली उस यतिवर के
चरण भाग्य से
पुण्यतीर्थ बक्सर में उतरे,
असहयोग में
केन्द्र बना वह उनका,
वहां ठहर कर
मास्टर साहब-
जय प्रकाशलाला के साथ
कांगरेस के अति महत्व के
सघन कार्य में
वे जुट गये लगन से ।
कांगरेस के
मेंबर एक करोड़ बनाना,
तिलक स्वराज्य-कोष में
रुपये एक करोड़ जुटाना
एक लाख चर्खे बनवाना
ये तीनों ही चीजें
शीघ्र देश में
अगले मास जुलाई तक ही,
बस पूरी हो जायं,
गांधी जी का
था ऐसा आदेश,
इस प्रसंग में
अभी यहां पर
यह कह देना
अधिक उचित होगा कि
कट्टर गांधीवादी के हो
सही रूप में यती ने
कांगरेस में-
और देश की राजनीति में
शामिल होकर
कार्य लगन से शुरू किया था,
अत: प्रेम से
गांधी जी के
हर आदेश का वे
अक्षरश: पालन करते थे
और दूसरों से भी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करवाने की
पूरी कोशिश करते थे ।
वे यह आशा करते थे कि
पढ़े-लिखे और
समझदार जो लोग
कांगरेस में शामिल होंगे
वे तो गांधी जी के
आदेशों का
और बताये-
सहज मान्य नियमों का
मन-चित से अवश्य ही
नियमित अनुसरण करेंगे,
लेकिन पीछे चलकर
जब वे जेल गये तो
उन्हें निराशा हुई भयंकर ।

——

कांगरेस में
यती ने ज्यों ही डेग रखा
जन-जागरण संगठन-सेवा
चर्खे-कर्घे का प्रबन्ध कुछ
खादी-उत्पादन-प्रचार की
उचित व्यवस्था आदि
सभी कार्य वे
दत्तचित्त हो
करने लगे नियम से ।

युगद्रष्टा यतीन्द्र ने
सीखा कुछ अतीत से
वर्तमान को देखा समझा
भावी युग की
मधुर कल्पना
मानस में रख
युग के नगद धर्म को
देशवासियों को बतलाया
नया पैंतरा बदला
बिगुल बजाया
सुधीजनों को नवयुवकों को
नये स्वरों में
उद्बोधित-संबोधित करके
सजग किया ललकारा-
'पराधीन है देश युगों से
भारतमाता
जंजीरों में बंधी बिलखती
ममतावश आतुर हो
ताक रही है
नीर भरे नयनों से
लाख-करोड़ ललनाओं को,
माँ के ऋण से
पुत्र उऋण कब हो सकता है ?
बंधन मुक्त करो माता को
यही आज के युग का
परम धर्म सात्विक है ।'
दशा काम की उनके

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

थी ऐसी कि-
जाड़ा गर्मी और बरसात
इनकी तनिक नहीं चिन्ता कर
रहे घूमते-
गाँव-गाँव दिन रात ।
जिला भोजपुर
गंगा तटवर्ती सुक्षेत्र में
गाँव प्रमुख सिमरी को
यती ने अपना
सेवा-केन्द्र बनाया ।
बक्सर था उपकेन्द्र
सिमरी गांव निराला
लोग वहां के सीधे-सच्चे,
इस प्रकार उद्यत हो
सत्य-अहिंसा सत्याग्रह की
असहयोग की राह पकड़ कर
स्वतंत्रता की समर-भूमि में
यती ने डेग बढ़ाया
दूर फिरंग देश के जालिम
कुटिल दुरंगी-नीति-विशारद
दुराग्रही दुर्दान्त फिरंगी
शासन से लड़ने को ।
सुख-स्वराज्य के लिए देश में
होती रही लड़ाई कुछ दिन
सिर पर कफन लपेटे
स्वतंत्रता सेनानी
बलिदानी वीरों की टोली
लड़ती रही अडिग हो ।
शूर सपूत तरुण बड़भागी
क्रांतिदूत अनुरागी त्यागी
उस बलवंत-
वासुदेव फड़के की,
बालकृष्ण-रामा-दामोदर
चापेंकर भाई लोगों की
वाणी अब भी गूंज रही थी
निखिल देश के,
क्षुब्ध वायुमंडल में-
'शूर धर्म है अंगारों पर चलना
तलवारों की तेजधार पर
रखकर पाँव मचलना ।
हो जाना भयभीत मृत्यु से
कायरता है दुःख है,
हंसकर चढ़ना बलिवेदी पर
निर्भयता है सुख है ।'
अमर शहीदों की यह वाणी
सुनकर सावधान हो
जित्वर तरुणाई ने
अंगड़ाई ले कदम बढ़ाया ।
कुछ हंस चढ़े पुण्य वेदी पर
कुछ गोली के हुए शिकार ।
कुछ ने मंद-मंद मुसकाकर
मधु सौरभ से भरा सुकोमल
जीवन-पुष्प चढ़ाया
भारत-माता के चरणों पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंडमान के वंदीगृह में
अथवा इरावती तटवर्ती
दूर मांडले की कारा में,
कुछ स्वदेश के हर प्रदेश में
भिन्न-भिन्न जेलों में
तरह-तरह से गये सताये ।
उनमें से कुछ ने तो
दारुण उत्पीड़न से
भीतर ही दम तोड़ा,
क्रूर यंत्रणा के शिकार हो
कितने बालक बूढ़ जवान
बने निकम्मे बाहर आये ।
'जोर जुल्म की'
इसी परिस्थिति
पृष्ठ भूमि में
पूरे भारत भर में
नित्य-निरंतर
रही क्रान्ति की आग सुलगती ।

———

भारतीय-प्रज्ञा के सूर्य
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक,.
देश के स्वाभिमान के,
विमल स्वरूप पूर्व-पुरुषों के
त्याग-तपस्या विनयशील के
पुण्य-सुयश के
सुधी शूर सेनानायक थे,
स्वतंत्रता के प्रेमी
सभी देश भक्तों की
प्रतिनिधि संस्था
कांगरेस के
अतुल क्रांतिकारी नेता थे ।
वे स्वराज्य के
मधुर स्वप्न द्रष्टा थे,
यह उनकी ही रणभेरी का
था मौलिक उद्घोष निराला
सात्विक समयोचित यथार्थ कि
'जन्मसिद्ध अधिकार हमारा
है स्वराज्य, यह जानो
उसे प्राप्त करना ही
आर्य धर्म है मानो ।'
लोकमान्य के बाद देश में
आजादी का
सुनियोजित संघर्ष चला जब
उसे चलानेवाला
कांगरेस का
वह व्यापक राष्ट्रीय संगठन
बना चला तेजी से
गांधी जी के नायकत्व में,
तब उसका स्वरूप रचने में
सजने सुदृढ़ बनाने में
धुन के धनी लगन के पक्के
सुधी संत उस संन्यासी ने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

था अपूर्व कौशल दिखलाया ।

———-

परिश्रमी किसान थे,
पंडित रामसुभग पांडे जी,
और उन्हीं के-
काका बंधु,
पंडित रामदर्श पांडे जी
पूज्यपाद स्वामी के
नैष्ठिक भक्त पुजारी
आज्ञाकारी दास,
स्वतंत्रता-सेनानी कट्टर
और देश-सेवक प्रवीण थे ।
उनकी सहायता ले
कुशल क्रांतिदर्शी यतिवर ने
बक्सर अनुमंडल के
चारों ओर भीतरी
बहुतेरे गांवों में
और सदर आरा के
उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम
सभी सघन क्षेत्रों में
नई चेतना फूंक शीघ्र ही
सुदृढ़ संगठन सजा बनाया ।
टहल-घूमकर
खादी का प्रचार भी
किया उन्होंने
गाँवों-नगरों में तेजी से,
और योजनाबद्ध रूप में
सातों सिमरी
तथा नगर बक्सर में
खादी के कपड़े बिनवाकर
गाजीपुर या-
और दूर पश्चिम तक,
पहुँचाने की
उचित व्यवस्था किया कराया ।

———-

उन्हीं दिनों की
कुछ पहले की
घटना एक विलक्षण
ऐसी है कि
लौट नागपुर अधिवेशन से
संन्यासी जी
जब बक्सर में
उतर गये थे,
उसी समय-
कौंसिल का,
चुनाव होनेवाला था
कांगरेस तो उसके
वहिष्कार का
थी निश्चय कर चुकी पूर्व ही ।
महाराजा हथुआ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कांगरेस की बात
नहीं मानकर
खड़े हुए थे ।
अत: धुनी यतिवर ने
बक्सर भभुआ
दोनों अनुमंडल के
बहुतेरे गांवों का
दौरा करके
कांगरेस का
शुभ संदेश सुनाया
और विरोध किया राजा का ।
आखिर चुनाव के-
पहले दिन,
वे मंगराँव गाँव से
खीरी होते
मानिकपुर पहुंचे थे,
और वहाँ से
रातों-रात,
और वहाँ से चले बैलगाड़ी से,
जो जा सकी
दुमदुमा तक ही ।
पुन: वहां से-
कुछ लोगों के साथ,
बढ़ुपूर होते
प्रात: आठ बजे के लगभग,
पहुंच रामगढ़ ठहरे,
और कई गाँवों में जाकर

किया प्रचार का कार्य ।
इसी बीच-ईसवी-सन्
उनइस सौ इक्कीस
ग्रीष्म ऋतु के दिन थे
जब गांधी जी
उत्तर प्रदेश के
दौरे पर थे
और बिहार भी
आने ही वाले थे ।
किन्तु यती ने ही प्रयास कर
अपने कार्य क्षेत्र बक्सर में
पहली बार उतारा उनको
एवं निर्मल संत-हृदय से
श्रद्धा प्रेम और आदर दे
भारी जन-समूह को
वैसे कुशल राष्ट्रनायक का
दर्शन भव्य कराया ।
देश-सेवा का कठिन
कार्य करने में
कार्य क्षेत्र बक्सर में
अनुभव हुआ उन्हें कि
असहयोग की
उस पवित्र धारा में
ना जाने कि कितने
आकर घुसे नहाने
घृणित पुराने पापी
वे ऐसे बगुला भगत

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और महात्मा
बन गये सहज कि
लोगों को आश्चर्य हुआ
और भक्ति भी उमड़ी,
बहुतों ने समझा कि
गांधी जी के
जादू ने यह कार्य किया
जिससे इन-
भले मानुसों के
दिल भी पलट गये
संत बने वे लोग
इतने अनशन और-
व्रत भी करने लगे,
जिसे देखकर सचमुच
दंग रहना पड़ता था ।
कितनों ने तो
गैरिक वसन
धारण कर लिया ।
ठीक ही है,
सामूहिक आंदोलन में
उन्हें रोक सकता है कौन ?
बहती गंगा में
भला नहाना
कौन पसंद नहीं करता ?
परिस्थिति का कुछ ऐसा
प्रभाव भी हो जाता है कि
हिम्मत नहीं-

पापियों को होती कि
अपना पापाचार
जारी रखे रहें वे ।
वायु-मंडल की
यही तो खूबी है ।
किन्तु बात यह,
जादू इस प्रकार का,
प्रभाव ऐसा
टिकता नहीं बहुत दिन ।
आखिर मसान में
मुरदा जलाते समय
विराग तो होता ही है,
लेकिन वह तो
होता नहीं टिकाऊ,
ठीक यही बात
वायु-मंडल के
वशीभूत हो
काम करनेवालों की
देखी जाती है ।

———

वह भी पीछे
कुछ समय
व्यतीत होने पर
वही पुराना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चिर-परिचित मार्ग
अपनाने लगते हैं ।
इसको कोई शक्ति
रोक नहीं सकती है ।
कुछ ही दिनों के बाद
यतिवर ने देखा कि
इस प्रकार के लोग
लगे बदलने,
अवसर देख,
करवटें अपनी ।
अपने विकराल रूप की,
सही सूचना देना
शुरू कर दिया उन्होंने,
लेकिन उससे,
यती के पूर्व नियोजित,
सेवा कार्य सुभग में,
बाधा नहीं हुई कुछ,
कुशल कर्मयोगी वे
सक्रिय रहे सदा ही ।
आखिर में जून महीना
आते न आते
तिलक स्वराज्य कोष की
पूर्ति-क्रिया में,
पिल पड़े सभी सम्बन्धित ।
श्री राजेन्द्र बाबू का,
आरा और बक्सर में,
शुभागमन तब
हुआ इसीलिए था ।
बक्सर ही-
कार्य क्षेत्र था यती का
नगर छोटा है,
उस समय वहां पर
कोई व्यापार कार्य भी
नहीं चमकता था ।
लेकिन तो लोगों की
श्रद्धा ही के चलते,
फिर भी आरा के सम्मुख
बाजी सहज मार ली उसने ।
श्री राजेन्द्र बाबू को,
दौरे में आरा से,
मिले तीन सौ रुपये थे
और बक्सर से एक हजार ।
वे रुपये तो
चले गये उनके ही साथ
लेकिन बीच-बीच में
जो रुपये वसूल होते थे,
उसमें से कुछ
सोझ प्रान्त के
कार्यालय में
भेज दिये जाते थे ।
और कुछ
मंडल, अनुमंडल थाने में
रह जाते थे ।
यतिवर ने देखा कि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उन्हीं रुपयों को लेकर
शुरू हुई गड़बड़ी वहां पर
संस्था में स्वभावत: ।
कुछ भले मानुसों ने
इधर-उधर उड़ाने का कार्य
शुरू कर दिया ।
बलात बात यह
उनको सहन नहीं थी ।
यती विरागी
सार्वजनिक पैसे को
सबसे अधिक
पवित्र वस्तु मानते थे,
लेकिन पैसों के आते ही
कुछ लोगों ने
पलटा अपना रूप,
फलत: उनसे
और वहां के
बहुत कार्यकर्ताओं से
तनानती हो गयी शुरू ।
अंत हुआ उसका तब,
उन्होंने जब ऊब अंत में,
बक्सर छोड़ा,
और नवम्बर के आखिर में
चले गये गाजीपुर ।

———-

बात ऐतिहासिक यह
युग-परिवर्तन वाली
जो अपना महत्व रखती है,
सन् उनइस सौ बाइस के-
शुरू समय की है कि,
कांगरेस के
अधिवेशन में
शामिल होकर
अहमदाबाद से
लौटते ही
प्रात:काल जनवरी दो को
गाजीपुर,
जिला-कांगरेस समिति के
कार्यालय में
गिरफ्तार हो पहली बार
क्रांति-पुजारी यती तपस्वी
गये जेल को ।
विधि-विधान शासन का,
कुछ दिन में पूरा होने पर,
गाजीपुर के जिला-जेल से
साथ साथियों के बहुतेरे
उनको वाराणसी जेल में
भेजा गया समय से ।
वहां जेल में
स्वतंत्रता-सेनानी
शूर साहसी
निपुन देश भक्तों की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जुटी एक लम्बी जमात से
उनकी स्वाभाविक भेंट हुई ।
उनमें थे काशी के
श्री सम्पूर्णानन्द
और आचार्यवर कृपलानी
एवं गोरखपुर के
बाबा राघवदास
आदि मुख्य कुछ ।
वहां जेल में
गांधी जी के
भक्त और अनुयायी
सत्य-अहिंसावादी
जुटे राजबंदी लोगों की
रीति-नीति धींगा-मुस्ती से
बहुत क्षुब्ध थे यतिवर
किन्तु मंडली वह शंकर की
अनुशासन विवेक से
नहीं नेह नाता रख
अपनी डफली अपना राग
नित्य अलापा करती
और जेल में
सुख-सुविधा की
बहुरंगी मांगें रख
खुराफात रचती रहती थी ।
इसी वायुमंडल में
कतिपय मांगों को ले
कुछ लोगों ने
अनशन ठाना ।
फलत: उन निस्पृह यती को भी
सुहृद राजबंदी समाज की,
मर्यादा के हेतु
अनशन करना पड़ा वहां पर,
आखिर में बाहर के
संगी-साथी शुभेच्छुओं के
कहने-समझाने से
चार दिनों के बाद
अनशन टूटा,
मिटा बखेड़ा,
किन्तु परिस्थिति
काबू में आने पर
तुरत जेल के
कुशल शासनिक
अधिकारी लोगों ने
जुटी राजनीतिक जमात को
टुकड़ों में विखराकर
भिन्न-भिन्न जेलों में भेजा ।
अत: इसी सुनियोजित
कार्यक्रम के अनुसार
चुने हुए कुछ
राजवंदियों की छोटी-सी
एक जमात के साथ
भेजे गये यतीश्वर
फैजाबाद जेल में ।
फिर थोड़े दिन बाद वहां से,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाबा राघवदास और कृपलानी
आदि चार के साथ
उन्हें लखनऊ की कारा में
भेजा गया, जहां पर
सभी प्रथम श्रेणी के
चुने राजबंदी रहते थे ।
यों तो गीता
यतिवर के जीवन का
रही सदा ही
अंग अभिन्न ।
गीता का विचार उन्होंने
और सभी ग्रंथों से
अपेक्षाकृत अधिक किया है,
किन्तु उस बार
फैजाबाद जेल में
कुछ तो परिस्थितिवश
और कुछ
अंतरतम की
गूढ़ प्रेरणा से भी
यतिराज ने
टीका और भाष्यों से
निपट दूर रह
पूर्ण स्वतंत्ररूप से
मनोयोगपूर्वक गीता का
किया परायण-मंथन
चिन्तन और मनन भी ।
इस प्रकार जब उनने
शुरू किया अभ्यास
तो कुछ ही दिनों में
उनके ही शब्दों में
उनकी आंखों के
पर्दे उघर गये ।
और उन्हें एक
निराली दुनिया
दीख पड़ी तब ।
उनने नया अपूर्व अर्थ-
पाया गीता में ।
प्राय: अर्थ पुराना ही था
लेकिन नयी ज्योति उसमें थी,
नई आभा थी,
नया तेज था,
जिससे खिल गयी
हृदय की कलिका ।
उनके कथनानुसार
जीवन में उनके
यह पहला ही अवसर था
जब उन्होंने
गीता के रहस्य को समझा
और जीवन की
विघ्न-बाधाओं
तथा चिन्ताओं से
हो गये मुक्त निश्चिंत,
आजीवन वेदांत
और अन्य दर्शनों के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पढ़ने से
शांति नहीं
उपलब्ध हुई जो
वह गीता की
परमकृपा से
फैजाबाद जेल में
मिली उन्हें थी ।
जीवन उनका
पूर्ण और स्थिर
हो गया तभी से ।

———

लखनऊ जेल में ही
यतिवर को
पंडित जवाहरलाल नेहरू से
विशेष बातचीत
और परिचय का
अवसर मिला ।
वहीं पर रहते समय
जिला मेरठ
असौढ़ा के चौधरी
रघुवीर नारायण सिंह भी
आये,
यती स्वामी का उनसे
पुराना परिचय था,
वे बहुत बड़े
जमींदार और रईस थे,
अमीरी भी उनकी
खूब रही है,
बातों के प्रसंग में यती ने
उनसे पूछा कि-
आप अपना आराम छोड़कर
इसमें क्यों पड़े भला ?
वे पढ़े-लिखे अच्छे थे,
और बुद्धि भी उनकी
बहुत तेज थी,
इसीलिए उन यती को
आश्चर्य हुआ कि
वे इस राजनीति में
कैसे आ फंसे ?
किन्तु उनकी बातों से
पता लगा कि
समझ-बूझकर खूब
पड़े थे इसमें वे,
उनकी तीक्ष्ण बुद्धि ने
जमाने का रुख
बता दिया था उनको,
फलत: उनने
समझ लिया था
कि ये जमींदार अब
बदली हुई परिस्थिति-
और वायुमंडल में
नहीं सहज बच सकते,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि वे आज देश के
जन-स्वातंत्र्य समर में
भाग नहीं लें ।
इसीलिए उन्होंने
पूर्ण किया अपना कर्तव्य
और अपने अन्य
जमींदार भाइयों को भी
न कि केवल मौखिक
बल्कि व्यावहारिक
उपदेश दिया ।
इससे यती की उन पर
श्रद्धा बढ़ गयी विशेष,
वहीं जेल में
प्रोफेसर धर्मवीर जी
एम. ए. की
यती से भेंट हुई थी,
वे शांत और
पानी के जैसे
ठंढे स्वभाव के
सुधी मनुजवर
और मूर्ति स्वरूप शुभ
शांति-सादगी के थे ।
ऐसे योग्य सज्जन को
पुलिस ने पकड़ा था जब
तो कमर में रस्सा बांध
बस पैदल ही
नगर के हिन्दू-कॉलेज से
थाने लाई थी ।
वे गणित-विद्या के
बहुत बड़े प्रेमी थे
स्लेट लेकर दिन-रात
उसमें ही रमते थे ।

——

यतिवर का यह कहना था कि
राज़बंदियों की जमात में
वहां बहुत से
थे मौलाना लोग साथ ही
फलस्वरूप इस्लाम धर्म के-
बारे में भी,
चर्चा कुछ होती रहती थी,
बात वस्तुत: ऐसी है किं
एक दूसरे के धर्मों को
ठीक-ठीक हमलोग
नहीं जानते ।
इसीलिए उनके बारे में
बहुत गलत-फहमी होती है ।
निसंदेह वह,
निराधार होती है,
जो कट्टर धार्मिक होते हैं,
वे तो और भी, निरे-
कूप-मंडूक की भांति,
अपने धर्म-मत के अतिरिक्त

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जानते ही नहीं,
अन्य धर्मों को ।
अगर जानते भी कुछ हैं तो
बस उल्टा ही ।
बचपन में उनकी भी,
दशा यही थी ।
वे इस्लाम धर्म से
बहुत घृणा करते थे ।
था विचार उनका कि
'वह तो जोर जबर्दस्ती-
और मारकाट
सिखलाता है
उसे अन्य धर्मों के प्रति
सहनशीलता
तो कतई है नहीं,
बाद धारण तो उनकी यह
बेशक खत्म हो गयी जड़ से ।
असहयोग के युग में,
मौलानाओं के भाषण कुछ
कहीं-कहीं सुनने से,
और हिन्दुओं का सम्मान
करते उन्हें देखकर
पूर्व धारणा पर थोड़ा-सा
धक्का लगा अवश्य था
किन्तु जेल में जाने पर वह
हो गयी निर्मूल पूर्णतः ।
तदुपरान्त तो उनमें

तत्संबंधी धारणाओं में
परिवर्तन आमूल हो गया,
वहां असल में
मौलाना लोगों ने
पढ़ कुरान की
आयतों को
यह दिखलाया कि
मंदिर और गिरजे आदि
सभी धर्म-स्थानों की
मान प्रतिष्ठा करने
या उनका अपमान
नहीं करने का
उसी कुरान में
दिया गया है आदेश ।

———

उससे यती ने-
पाया लाभ बड़ा ।
पीछे तो स्वयमेव उन्होंने,
उस कुरान का
हिन्दी - अनुवाद
आद्योपांत पढ़ा
और अपने
दिल को साफ किया ।
सुधी विलक्षण उस यतिवर ने
लखनऊ जेल में भी,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्तर्मन के प्रेरित
गिने साथियों के कुछ
जिज्ञासु एक दल को
गीता नित्य पढ़ाने
समझाने का,
अनुपम शुभ कार्य किया ।
वह दल अच्छे-अच्छे
अंग्रेजी पढ़े-लिखे
लोगों का था ।
उनमें पंडित नेहरू
और कृपलानी
आदि बहुत थे ।

वहां जेल में यती ने
आवश्यकता-
और परिस्थिति का विचार कर
जल-चिकित्सा की
पूरी पद्धति का
भली-भांति अभ्यास किया ।
असल में उनको
उससे पूरा लाभ हुआ ।
और भक्त वे उसके
होकर रहे सदा के ।
उसके आचार्य-
लूई कुने की,
रची पुस्तकें पढ़कर विधिवत्
उनने समझ लिया था ।
स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्होंने
टहलने ही को
सबसे उत्तम
हितकारी व्यायाम बताया ।
दण्ड-बैठक या आसन-दौड़
करके अभ्यास सभी का,
किया मिलान टहलने से,
और उसे सर्वोत्तम पाया ।

लखनऊ जेल में
नित्य नरंतर
आठ-नौ महीने तक
बड़ी धूमा-चौकड़ी
उच्छृंखला बहुत
मनमानी-घर जानी भारी,
देख विरक्त यती ने
कुछ निष्कर्ष निकाला
वहां उन्होंने देख लिया कि
शायद ही कोई
जेल-नियमों की
अवहेलना नहीं करता हो,
आपस में कुछ चंदे करके
लुक-छिप के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अखबार तो
प्राय: आते ही थे ।
चोरी-चुपके
चिट्ठियां भी
लिखी जाती थीं ।
यह भी देखा उनने कि
जेल अधिकारी
जिस पर रंज हुए
हटा उसी को
बस धीरे से
भेजा नैनी जेल ।
उस समय का-
वह नैनी जेल,
जेलों का जेल भयंकर
माना जाता था,
वहां लोगों को
बड़े कष्ट दिये जाते थे ।
इसीलिए पीछे तो
ऐसा भी देखा कि
लोग कितने ही
जेलवालों की
चापलूसी में
सदा लगे रहते थे
ताकि जाना न पड़े नैनी,
इससे वे चिन्तक संन्यासी
इस नगद नतीजे पर
जेल में ही पहुंचे कि

राजनीति को
देकर नैतिक रूप
इतनी जल्दी
गांधी जी ने
इसको जो
सार्वजनिक बना दिया ।
गलती हुई बड़ी वह
अपना कदम उन्हें फिर
पीछे को लौटाना होगा ।
ठीक-ठीक इसको यदि
ले चलना है
तो अब तक का
बना-बनाया
महल गिराना होगा ।
सिर्फ नींव भर रखनी होगी
उसी पर धीरे-धीरे
फिर से महल
खड़ा सुदृढ़ करना होगा ।
नहीं तो यह आंदोलन
कोरी राजनीति या-
सिवाय दूषित राजनीति के
और नहीं कुछ रह जायेगा ।
धारणा यतिवर की
पहले तो यह थी कि
ये सब त्रुटियां
मालूम होते ही
गांधी जी कुछ यत्न करेंगे,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हालांकि पीछे के
अनुभवों ने बताया कि
उनके ख्याल गलत थे ।
गांधी जी ने-
सभी बातें जानीं
और बखूबी जानीं,
किन्तु किया क्या ?
अखबारों में लिखने
और भाषण देने से
सामूहिक आंदोलन में,
जो जन-आंदोलन है,
नैतिक परिवर्तन
नहीं हो सकता
वह तो कुछ चुने हुए
लोगों में ही
हो सकता है ।
गण-आंदोलन भी
बनाये रखना
और उसे
धर्मनीति के
कठिन मार्ग पर
ले चलने की
आशा भी करना,
ये दोनों ही बातें
एक साथ
कब चल सकती हैं ?
निरी असंभव-सी हैं ।

तो भी गांधी जी ने
यही किया है ।
नतीजा उसका
आंखों के आगे है ।
सत्य-अहिंसा-सदाचार के
शुभ्र नाम पर
कांगरेस में
केवल दंभ-प्रवंचना
हिंसा और असत्य का
बाजार गर्म है ।
खूबी तो यह कि
जो लोग स्पष्ट वक्ता हैं
गांधी जी के दल में
उनको स्थान नहीं है,
और 'बहुत' बगुला भगत लोग
सर्वेसर्वा बन बैठे हैं ।
धर्म के नाम पर तो
ऐसी चीजें होती ही थीं,
किन्तु धर्म जब
राजनीति में पैठा
तो यहां भी
वही बाजार गर्म है ।

———

एक वर्ष के बाद
उनइस सौ तेइस के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुरू में ही यतिराज
लखनऊ जेल से
बाहर आये,
वे बाहर आने पर
पहले तो गाजीपुर आये
लोग जुलूस बनाकर
स्टेशन पर लेने आये थे
वह उमंग अच्छी थी ।
किन्तु बाहर का
वायुमंडल दूषित
और अप्रिय दर्शन था,
समय वह नाजुक था
कांगरेस-संगठन
दो प्रचण्ड दलों में
बंटा नजर आता था,
एक वर्ग था
देशबंधु चित्तरंजन दास-
और मोतीलाल नेहरू का
जो कि परिवर्तनवादी था
और दूसरा, अपरिवर्तनवादी,
राज गोपालाचार्य
आदि विज्ञों का,
लड़ाई दोनों की
चलती रही बहुत वर्षों तक
यतिवर जब कि
जेल बनारस में थे
उसी समय चौरा-चौरी की
घटना घटी अप्रिय थी,
उत्पीड़ित जनता के
क्षोभ-रोष के चलते
वह स्वाभाविक
लघु विस्फोट हुआ था,
फलत: गांधी जी ने,
'उनइस सौ बाइस के'
बारदोली में
फरवरी महीने में
सत्याग्रह-आन्दोलन
स्थगित करने की
अप्रिय घोषणा कर दी,
जब उपयुक्त समय पा
सेना उमंग से
समरांगण में
बढ़ती जा रही सजग हो
और देश में सगरे
जोश की लहरें
उफनाती हों
ठीक उसी मौके पर
बिना लक्ष्य पाये ही
सहसा 'रुक जाओ की'
आज्ञा लेकर
अस्त्र-शस्त्र रखवा देने की
पटुता भरी बात का
परिणाम दूसरा
हो ही क्या सकता था ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जटिल अहिंसा के
बाल की खाल गांधी जी की भांति
खींचना तो कोई
जानता न था।
इस कारण से
साधारण लोगों के
और देशबंधु तथा
मोतीलाल नेहरू जैसे
नेताओं के
दिमाग में भी
बात कभी यह
आ सकी नहीं,
इसीलिए वे लोग क्षुब्ध थे,
और लड़ाई को
चाह रहे थे,
देना ऐसा रूप
जिसमें कि आंतरिक प्रेरणा
या दैवी पुकार की तरह
किसी चीज की जरूरत न हो,
इसीलिए तो उन लोगों ने
फिर कौंसिल प्रवेश का
प्रश्न उठाया।
और उनइस सौ तेइस के,
बीतते-न–बीतते,
सफलीभूत हुए भी।

———

हाँ तो गाजीपुर में
देश-सेवा का
करते रहे कार्य वे यतिवर
और जगाने में लोगों को
रहे पूरे तल्लीन,
लेकिन खान-पान में
होती रही गड़बड़ी
कुछ ऐसी कि-
कार्य बाहरी दौड़धूप का
सहन नहीं होता था।
पहले से ही दूध-मशाला
छोड़ा था उन्होंने
नमक जेल में छूटा
पर पीछे चल
अनुभव हुआ उन्हें कि
साधारणत: बिना दूध के
थोड़ा भी कुछ कार्य मानसिक
करने लायक
रह ही नहीं जाते हमलोग,
फलत: उनइस सौ तेइस की
गर्मियों में लू का,
थोड़ा असर होने से
खाना-पीना,
रुचिकर नहीं लगता था।
प्यास बहुत लगती थी,
किन्तु पानी भी
नहीं अच्छा लगता था

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हुई परेशानी बड़भारी ।
फिर आखिर वे
बक्सर क्षेत्र सिमरी में
गये और विश्राम तथा
प्राकृतिक उपचार किया कुछ,
कुछ दिन बाद स्वस्थ हो
फिर गाजीपुर लौटे
और वहीं ठहरे कुछ काल,
उस कार्य-क्षेत्र से ही वे
उत्तर-प्रदेशीय
कांग्रेस-समिति-
और अखिल भारतीय
महासमिति के
बहुचर्चित वक्ता सदस्य थे,
अत: वहीं से
अहमदाबाद बैठक में
गये भाग लेने को,
इस प्रकार ईस्वी सन्
उनइस सौ चौबीस के
उत्तरार्द्ध के शेष दिनों में
यतिवर का सम्बन्ध
फिर बिहार से
स्थापित हो गया पूर्ववत्
यों तो-
उत्तर प्रदेश में भी
उनका आना-जाना
होता ही रहता था,

उन दिनों परिस्थिति
कांगरेस की
ऐसी थी कि
उसके सम्मुख
कुछ काम नहीं था,
चर्खा और खादी का काम
कुछ ऐसे महत्व का-
काम नहीं है,
जो जनता को,
आकर्षित कर सके विशेष ।
वह तो राजनीति-सम्बन्धी
रौनक पसन्द करती है
जिसे जन्म से मरण-पर्यंत
जीविकार्थ प्रतिदिन ही
धरती-हवा-सूर्य-पानी से
और मनुष्यों के साथ
करना पड़ता है बरबस ही
सतत भीषण-संघर्ष ।
वही जनता तब
संघर्ष प्रबल के अतिरिक्त
दूसरी पद्धति को
वास्तविक हितकारी
कैसे समझे ?

———-

इधर देश की आजादी के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जनसंघर्ष विकट में
यतीराज के पड़ जाने से
भूमिहार-ब्राह्मणों के
पूर्व आंदोलन के
विरोधियों की
हिम्मत बढ़ी हुई थी
वे जहां-तहां इनको
लगे दबाने में थे।
पुरोहितों ने न सिर्फ
पुरोहिती न करने की
धमकी दी
बल्कि बहुत जगहों में
भूमिहार-ब्राह्मणों की
पुरोहिती का-
परम्परागत कार्य
विवाह श्राद्ध आदि सब
कराना छोड़ दिया,
इससे समाज में
मचा हाहाकार-सा,
विरोधी समझते थे कि-
अब स्वामी जी,
इन कामों में
नहीं पडेंगे,
समाज के लोग भी
कुछ ऐसा ही समझ रहे थे
उन लोगों ने
बड़ी करुण-वाणी में
बार-बार अपनी स्थिति
उन्हें सुनाई।
फलत: कोमल-हृदय यती का
फिर हो गया दयार्द्र,
एक तो कोई-
राजनीतिक
काम नहीं था,
दूसरे यदि
जालियांवाले बाग के
करुण-क्रन्दन ने उन्हें
उधर घसीटा था तो
इनका क्रन्दन भी तो
लगा घसीटने इनकी ओर,
जिस आत्म-सन्मान पर
चोट होने से
वे और उनके साथ
हजारों और
जेलों तक में जा पहुंचे थे
उसी आत्म-सम्मान पर
फिर दूसरी तरफ से
और तरह का-
आघात हुआ।
जिससे विचलित हुए लोग थे,
सरकार-बहादुर की
यदि धमकी वह,
कुछ कर न सकी तो
पुरोहितों की धमकी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कैसे विचलित करती ?
पुरोहितों ने,
और बहुत से
उनके निकट साथियों ने भी
यह प्रचार था किया चतुर्दिक
कि स्वामी जी
तो ऐसे ही
छोड़ बीच में ही सब काम
अलग हो जाते हैं ।
उन्होंने देखा कि
इस प्रचार का
असर भी हो रहा है ।
फिर ऐसी ललकार भला कब,
शूर-वीर-चाणक्य-स्वभावी
संन्यासी जी,
सहज सहन करनेवाले थे ?
बस उन्होंने
उसी समय चट
चातुर्मास्य अवधि के
सिर्फ दो महीनों में
क्रांति-भूमि सिमरी में
शूर क्रांतिकारी सिपाहियों
पंडित रामसुभग पाण्डे जी
और उनके ही
कर्मवीर त्यागी सहयोगी
पंडित रामदर्श पांडे जी
जन्मभूमि में उन लोगों की

शुभ सात्त्विक सेवा से
उद्वेलित हो,
जीवन में उपयोगी
सभी संस्कारों के
एवं शास्त्र-विहित कर्मों के,
यावत् कर्म-काण्ड के विश्वकोश
सम बारह सौ पृष्ठों का ग्रंथ अनूठा
'कर्म-कलाप' रचा
तब और विरोध-पक्ष की
दबी-छिपी-सी मंद चुनौती का,
उत्तर दिया यथार्थ,
पुन: उसी प्रसंग में
सामाजिक इतिवृत्त बोध का
ग्रंथ ऐतिहासिक वह
'ब्रह्मर्षि-वंश-विस्तार' भी,
रच तैयार किया उन्होंने
जिसकी गौरव-गरिमा अकथनीय है ।
उस उलझी हुई परिस्थिति में
पुरोहिती का प्रश्न अहं था,
सोये सम्मानित समाज को
शीघ्र जगाकर,
उसका महत्व बतलाना
और साथ ही
पुरोहितीवाला प्रस्ताव
इस समाज की महासभा से,
कमर बांधकर था स्वीकार कराना ।
इसके लिए,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनस्वी और लड़ाकू यती ने,
आधे उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य में,
घूम-घूम कर, प्रमुख गांव-नगरों में
सैकड़ों सभाएं कीं और
भूमिहार-ब्राह्मणों को
ललकारा कि आत्मसम्मान का
यह वास्तविक तकाजा है-
कि 'पुरोहिती स्वयं करो'
कर्मवीर उन यती-राज के
ठोस शास्त्र-सम्मत व्याख्यानों
और परम उपयोगी
समयोचित सुझाव की
क्रांतिकारी बातें सुन
आँखें खुलीं तुरंत लोगों की,
और लगन साहस दृढ़ता से,
सामाजिक-सुधार के पुण्य कार्य में
लपट गये तत्काल।
लेकिन उसमें सबसे भारी बाधक
दकियानूसी विचार के,
जमींदार और राजे-महाराजे आदि थे।
नासमझी के कारण
पुरोहिती को बुरा बताते थे वे लोग,
यद्यपि घृणित से घृणित काम भी,
पैसों के लिए
करते ही थे,
तर्क-युक्तियों से वे
मानते न थे,

अत: विवेकी यतीराज ने
बड़े भाग्य से अवसर पाकर
उनइस सौ पचीस की
उन्हीं गर्मियों में
काशी की नगरी में
होनेवाले भूमिहार-ब्राह्मण सभा के
अधिवेशन में उस प्रभावशाली
सवाल को
सर्व शक्तिशाली समाज के
सन्मुख रखकर
अनुरागी समाज भक्तों की
सहायता से पास कराया।
आत्मसम्मान और स्वावलम्बन की
बात मार्मिक जो थी
तथा चुनौती का
जवाब जो देना था
इसीलिए युवकों ने उस मौके पर
यतिवर की अपील पर
जनता को विमुग्ध कर
आशातीत सफलता पायी,
काशी में 'दृढ'
स्तम्भ सभा के
और प्रबंधक अधिवेशन के,
श्री कवीन्द्र नारायण
पुरोहिती के प्रबल विरोधी थे।
उन्होंने प्रस्ताव स्वीकृति को
समझ लिया अपना अपमान।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

क्योंकि बाघ की मांद में ही
संन्यासी ने
उसको नाथ दिया था,
अत: क्रोध में
सुधि-बुधि खोकर
बाघ कहें या सिंह,
उस कवीन्द्र बाबू ने
चाहे जैसी भी हो
उर को खलनेवाले
स्वाभाविक अपमान क्लेश का
प्रतीकार करने की ठान-ठान ली ।
बड़े भाग्य से उनके तुरत
उसी साल दिसम्बर में
उत्तर प्रदेश जिला बस्ती के गांव
खलीलाबाद सुभग में
अखिल भारतीय भूमिहार-ब्राह्मण
महासभा का अधिवेशन होनेवाला था
और हुआ भी ।
उधर मकसूदपुर गया के
राजा चन्द्रेश्वर नारायण
अधिवेशन के
मिली-भगत अध्यक्ष बने थे,
कवीन्द्र बाबू की
सांठ-गांठ थी उनसे,
कुशल सभापति ने
अधिवेशन में अपना
पढ़ा लिखित भाषण जो
हृदय खोलकर उसमें
पुरोहिती के प्रचार का
कड़ा विरोध किया था ।
यतिवर ने जब
पेश किया प्रस्ताव सभा में तो
कवीन्द्र बाबू ने उसका
तीव्र विरोध किया,
और दबाव डालकर
तमकुहीं राजा साहेब से
उस विरोध का अनुमोदन करवाया ।
प्रस्ताव रखते समय यती ने
ओजस्वी व्याख्यान दिया था
और लोग भी हुए प्रभावित
उभयपक्ष की
हुई बहस के बाद
उत्तर देते समय वहां पर
सुधी संत ने पुनरपि
हृदय बेधनेवाला
जैसा भाषण शायद ही
कभी दिया हो ।
बहुत देर तक रहे बोलते
वे ऐसे कि
पसीज जाय पत्थर भी,
मत लेने का जब अवसर आया
तो हाथ उठाये गये
विरोध में हाथ थोरे थे
और पक्ष में असंख्य,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लेकिन फिर भी
सभाध्यक्ष के कान में
कुछ फुसफुसा कर
कवीन्द्र बाबू ने घोषित
करा दिया कि
प्रस्ताव गिर गया,
इस पर यती के पक्षधरों ने
विभाग करके अलग-अलग
फिर गिनवाने की
मांग पेश की, पर पहले की
गुप्त मंत्रणा के चलते ही
नहीं एक भी सुनी गयी ।
और सभा का कार्य
कठिन द्वन्द्व के बीच लगा किनारे ।
इस प्रकार कवीन्द्र बाबू की
रह गई मूंछ कैसे हू ।

———-

महासभा का अगला
तूफानी अधिवेशन
पटना में होनेवाला था,
दुंदासिंह की
लंबी चौड़ी ठाकुरवाड़ी
बाकरगंज सुभग से
अधिवेशन करने का निश्चय
हुआ सर्व सम्मति में
उसी सुरम्य मन्दिर में
विनयशील सेवा के
उज्ज्वल रूप अनूप ।
सर गणेशदत्त का शुभ निवास था,
सन् उनइस सौ चौबीस में जब
पुरोहिती का आंदोलन
चल पड़ा तो कुछ लोगों ने
सर गणेश से की शिकायत कि
स्वामीजी तो बड़ी तेजी से
भूमिहार ब्राह्मणों को
पुरोहिती की ओर
घसीटे जा रहे हैं ।
दैवयोग से
उनके निवास पर
कुछ लोगों के साथ एक दिन
स्वामी जी भी बैठे थे कि
चर्चा छिड़ गयी इसी की ।
सर गणेश ने तब प्रसंगवश
कहा स्वत: कि आप तो
हमारे समाज को
चौपट कर रहे हैं
लड़कों और जवानों का
पढ़ना छुड़ाया,
और उन्हें तथा औरों को
जेल भेजवाया,
अब भिखमंगीवाला
पुरोहिती का काम सिखाकर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रहे-सहे को भी बस
चौपट करना चाह रहे हैं,
बात यहां तक पहुंच गई कि
सर गणेश ने झोंक में
यह कह दिया कि
'यदि बाभन का बच्चा
कथा बांचकर पैसा ले तों
डूब मरने की चीज होगी ।'
स्वामी जी भी इस पर
हो आवेश प्रभावित
बोल उठे कि-
'यदि बाभन का बच्चा
कथा बांचकर करे जीविका
तो वह, उसके लिए
डूब मरने के बदले
चीज गौरव की होगी ।
क्योंकि वह तो ब्राह्मण है,
और कथा बांचना
ब्राह्मण का ही
सहज धर्म होने से
वैसा करने की
उसकी मजबूरी है ।
यदि जो ब्राह्मणपन का दावा करे
पहनकर चोंगा,
और कचहरी में
गंगा-तुलसी उठवाकर
झूठी शपथ खिलवावे
एवं उसके
पारिश्रमिक के पैसे
ले तो उसको
चुल्लू भर पानी में
डूब मरना चाहिए ।'
बात यहीं पर टूट गयी,
और वहां से यतीराज वे
इतना कहकर चले आये ।
सर गणेश दत्त सिंह,
उन दिनों मंत्री थे,
और वकालत करते थे,
किन्तु तब तक
'सर' नहीं बने थे,
लक्ष्य उन्हीं को करके
यतिवर ने वे शब्द कहे थे,
जिससे वे जल-भुन गये थे ।

———

पटने वाले अधिवेशन में
पुरोहिती का
महत्वपूर्ण प्रस्ताव यती ने अपने
श्री रामदयाल सिंह, श्री कृष्ण सिंह,
श्री रामचरित्र सिंह, और धनराज शर्मा
आदि अनुरागी पक्षधरों की सहायता से
अध्यक्षासन से पास कराकर
सब दिन खातिर किया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

झमेला खत्म ।
आत्मसम्मान की भावना
और पुकार ने ही
भूमिहार-ब्राह्मणों के
सामाजिक कार्यों में
उस विरक्त यतिवर को
थोड़े समय के लिए
घसीटा और अभ्युदय-विकास के
हितकारी शुभ कार्य कराया ।
उसमें कोई निहित स्वार्थ या
ओछी राजनीति की भावना नहीं थी,
केवल गिरे हुए या यों कहिये कि
बलात् गिराये गये
संभावित समाज को
सीख दे उठाना था,
और उसमें
आत्मगौरव की रूह फूंकनी थी ।
जो बहुत अंशों में
खत्म हो चुकी या
हो रही थी ।
उस मेधावी संन्यासी ने
किताबें पढ़कर राजनीति या
उग्र राजनीति भी नहीं सीखी थी ।
वे तो धीरे-धीरे आगे बढ़े थे,
उनके अनुभवों ने ही,
उनके गुरु शिक्षक
और पुस्तकों का काम दिया था ।

बेशक स्वभावत: उनकी
प्रवृत्ति उत्तरोत्तर
आगे जाने की थी
और बनी भी रही अंत तक ।
अनुभव के बल
एक-एक कर
सीढ़ी-दर—सीढ़ी
चढ़ते-चढ़ते,
बढ़कर वे ऊपर पहुंचे थे,
अनुभवों के सहारे
आगे बढ़ने का यह सुन्दर
परिणाम हुआ कि-
उनका मूलाधार होता गया
सदा मजबूत,
और क्रमश: वर्द्धनशील रहा,
फिर पीछे जाने की
संभावना रही नहीं ।
जिसका कि-
बहुत बड़ा खतरा
राजनीति में रहता है ।

———

हां तो जब पुरोहित वर्ग ने
इधर घूमकर
असहयोग आरम्भ किया
और इस भांति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूमिहार ब्राह्मणों को
तथा परिणाम स्वरूप
उन यतिवर को झुकाना
और गिराना चाहा
तो उन्होंने
दृढ़ निश्चय कर लिया तभी कि-
'ऐसा कभी न होने दूंगा',
इस प्रकार उन पुरोहितों के
अतिक्रम के विरोध में
ऊंचा किया क्रांति का झण्डा,
इसी बीच कानों में उनके
ऐसी खबरें भी पहुंचीं कि
भूमिहार ब्राह्मण-छात्रों को
काशी अथवा और दूसरी
जगहों में भी
संस्कृत पढ़ाना
प्राय: बंद-सा है ।
इसी को यों भी
इधर-उधर कुछ
कहते सुना गया कि
इनको संस्कृत पढ़ाना
दूध पिलाना है
भुवंग को,
खुली चुनौती और व्यंग्य की
वैसी बिषम दशा में
उस संभावित
सुधी यती के सम्मुख
भारी समस्या थी
जो पहाड़ की तरह खड़ी थी,
और उन्हें तत्काल
उसको हल करना था,
या विरोधियों के
आगे झुकना था,
उस मौके पर तरह-तरह की
उन शतरंजी चालों का
साफ अर्थ यह था कि
पुरोहित समाज का
कपटपूर्ण आयोजन था कि
भूमिहार ब्राह्मण कुल के
लड़के कहीं भी
संस्कृत पढ़ने न पावें ।
उस हालत में बगावत का झण्डा
कैसे ऊंचा हो
इसे सोचना पड़ा उन्हें ।
फलस्वरूप पटना के बिहटा,
राधोपुर में
सामाजिक-उत्कर्ष के
दिव्य प्रतीक रूप में
श्री सीताराम श्रम की
सोच-समझ स्थापना हुई तब,
मुजफ्फरपुर के पंडित रामबहादुर शर्मा
एक वकील निपुन,
पटने के जो कि
सामाजिक कामों में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी जी के सहयोगी थे,
और भक्त भी उनको
वह बखूबी स्वामी जी के
उर अन्तर की घनी वेदना
समझ रहे थे,
सन् उनइस सौ सताइस की
गर्मियों में वे उनसे मिले और
अनुरोध किया कि
बिहटा, राधोपुर में
परम विरागी एक
वृद्ध परमहंस
श्री सीतारामदास रहते हैं ।
उनका एक बाग
और उसमें मकान वगैरह हैं ।
वह भूमिहार-ब्राह्मण हैं ।
उनकी मनोकामना है कि
'मृत्यु से पहले
उन सब चीजों को
ऐसे आदमी को सौंप दें
जो वहां ब्रह्मचर्याश्रम
परम पुनीत बनाकर
भूमिहार-ब्राह्मण कुल के
बालकों को वेद शास्त्रादि
पढ़ा सकें ।
यतीराज की आंखें ऐसा सुनकर
सहसा चमक उठीं कि-
जो चाहता था, वही मिला ।

उस प्रसंग में
परमहंस जी से कई बार
विधिवत बातें होती रहीं
और अंत में
सर गणेशदत्त सिंह
पंडित रामबहादुर शर्मा
तथा अन्य कुछ
श्रद्धावान् जनों को लेकर
नव सदस्यों की
एक न्यास-परिषद का
गठन हुआ विधि-सम्मत,
जिसके अध्यक्ष
बने स्वामी जी,
और उन्हीं की देख-रेख में
आश्रम का संचालन
होने लगा समय से ।
विहित योजना के अनुसार,
उस आश्रम में
भूमिहार ब्राह्मणों के ही
लड़के पढ़ते थे
और उन्हें ही सहायता मिलती थी।
वैयाकरण ज्योतिषी,
वैदिक पंडित,
सभी मिले
पर समय-समय से
पूज्यपाद स्वामीवर को भी
अध्यापन का गुरुतर कार्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संभालना पड़ता था,
विशेषतया न्याय या
अन्य दर्शनों का ।
स्वामी जी आश्रम के
कुशल मार्ग-दर्शक थे
उनके निपुन विचार,
सत्य, न्याय, करुणा की
सुदृढ़ नींव पर
बने धर्म-संस्कृति के
दिव्य मन्दिर स्वरूप थे
जिसमें नर-नारायण,
वासुदेव सर्वेश्वर
प्रियदर्शी जनता जनार्दन
अखिल लोकनायक की
मूर्ति अनोखी सहज प्रतिष्ठित थी ।
आश्रम का संचालन मानवता के
सुभग सद्गुणों विनय शील
सेवा की
परम पुनीत भावना से ही
होता रहा निरंतर ।
पंचायतनामा के नियमों के
अनुसार वहां पर
ब्रह्मचर्याश्रम में सिर्फ
भूमिहार ब्राह्मणों के
लड़के ही रहते या
सहायता पाते थे
लेकिन तो शिक्षा पाने का था
अधिकार सभी को ।
भेदभाव का कोई भी बरताव
कभी वहां पर हुआ नहीं,
आगे चलकर
सुखद रम्य आश्रम
वह स्वामी जी के
संत-हृदय की
सहज उदार भावना और राजनीतिक
गतिविधि के चलते
विविध क्रांतिकारी कार्यों का
बना विलक्षण केन्द्र,
स्वतंत्रता के संघर्षों में
सेनापति यतिवर का ।
बिगुल वहां से
बजता रह सदा ही,
कितने शूरवीर सेनानी
और मनस्वी नेताओं ने
पायी सीख प्रेरणा
तथा अलौकिक ज्योति वहां से,
निपुन देश सेवक अनुरागी
आजादी के विकट समर के
पराक्रमी सेनापति
वीराग्रणी बिहार केशरी
कुशल-प्रशासक
और मुख्यमंत्री बिहार के
डॉक्टर श्रीकृष्ण सिंह,
उन समाजवादी जननेता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वोदयी विचारक
संपूर्ण क्रांति-चिंतक प्रबुद्ध
जय प्रकाश नारायण ने भी
प्रथी क्रांति उपदेष्टा
यतीराज से प्रथम प्रेरणा पाकर
उस आश्रम में पहुंच
बैठ कुछ सीखा-समझा,
और किसान सभा के
सम्मेलनों–अधिवेशनों में
या बकाश्त के संघर्षों में
दत्तचित्त हो भाग लिया था ।
अवसर पाकर पंडित नेहरू
और नेता जी सुभाषचन्द्र बोस भी
उस आश्रम में आये
और यती से आश्वासन में आये
और यती से आश्वासन या
आशीर्वाद प्राप्त कर
हुए सदा कृतकृत्य ।

———

यती राज वे सचमुच
बीतराग थे
सभी कार्य उनके नित
निस्पृह और असंगभाव से
संपादित होते थे ।
बात मार्के की यह

ईसवी सन् उनइस सौ छब्बीस
के आखिर की है
कौंसिल का चुनाव होने वाला था
कांगरेस के
सहज शिकारी लोग
स्वराज पार्टी के
छद्मनांव से चुनाव
लड़नेवाले थे
कांगरेस के प्रगट
नांव से तो लड़ भी
नहीं सकते थे,
क्योंकि-
ऐसा ही दिल्ली के
समझौते में तय था,
लेकिन उस चुनाव में
जो-जो हुए
अनर्थ कम-से-कम
बिहार में
क्या वे कभी भूलने को हैं ?
भीतर-ही-भीतर
कुछ बड़ी गुट्टबंदी थी,
कांगरेस के प्रमुख लोग
जाति-पांति की बात
भीतर-ही-भीतर करते थे
खुलकर करना तो
संभव नहीं था ।
बस, वही चुनाव नहीं

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तदुपरांत अद्यावधि
जितने भी चुनाव हुए हैं
उन सबों के मिले अनुभव से
कहा जा सकता है कि
अधिकांश बिहारी नेता
जो अपने को राष्ट्रवादी कहते हैं
वे भीतर-ही-भीतर हैं
असल में जातिवादी भी ।
अंशत: ठीक भी है,
राष्ट्रीयता और
जातीयता के बीच
बहुत ही कम अंतर है ।

——

यतिवर को तो पहले
इसका पता नहीं था
लेकिन पीछे उन्होंने देखा कि
सर गणेश से कायस्थ लोग
बुरी तरह खार खाते थे,
बात यह आज तक है ।
कुछ लोग तो ऐसे हैं
जो भूमिहार-ब्राह्मणों की
उन्नति फूटी आंखों
देख नहीं सकते हैं ।
फलत: उन्हें गिराने की
पूरी कोशिश करते रहते हैं ।

यह भी सही है कि
कुछ भूमिहार भी
कायस्थों या
औरों को गिराने में
नहीं चूकते,
पहले किधर से
शुरू हुई यह बात,
विचार व्यर्थ इसका है ।
लेकिन हालत ऐसी ही है
विशेषत:
यती के ही शब्दों में
उनइस सौ छब्बीस में
तो अवश्य थी,
अपनी आत्मकथा में
स्वामी जी यह कहते हैं कि
जातिवाद को
मूलाधार बनाकर
राजनीतिक क्षेत्रों या
और दूसरों में भी
कार्य किये जाते हैं ।
यह हमारे लिए
या प्रान्त और देश के लिए भी,
बात बड़े दुर्भाग्य की है ।
किन्तु साथ-ही-साथ
बात वास्तविक है यह,
इसको कोई 'भी' मनुष्य
सत्य का जो पक्षधर है,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन्कार नहीं कर सकता ।

———

आणविक शक्ति के
तेज-पुंज व्यक्तित्व
अलौकिक धारी,
संकल्प-कामना वर्जित
ज्ञानाग्नि-दग्ध-कर्मों के
कर्त्ता योगीवर
वे विरक्त संन्यासी
ईसवी सन्
उनइस सौ छब्बीस के
आखिरी दिनों में
दरभंगा मंडल के समस्तीपुर में,
कुछ समय तक रहने लगे थे ।
भारी अध्यवसाय-परिश्रम
और लगन तत्परता-साहस
सबको बांध एक धागे में
अद्भुत कार्य किया उन्होंने ।
अपने कुछ लोगों के
कहने या प्रेरित करने से
श्रद्धावान् भक्त लोगों से
सहायता-सहयोग जुटाकर
साधारण-सा एक प्रेस
कायम कर
तुरत हिन्दी का
समाचार पत्र साप्ताहिक
नाम 'लोक-संग्रह'
रख उस सामान्य नगर से
निकालना शुरू किया,
पौरुष-वीर-धीर यती ने।
व्यवस्थापक तो थे ही,
संपादक भी बने स्वयं ही ।
क़िन्तु शुरू करते ही
कठिनाइयां बहुत-सी आयीं,
और अनुभव से शीघ्र ही
पता लगा कि
समस्तीपुर जैसी जगह में
प्रेस रखना-
तथा साथ ही पत्र निकालना,
भूल बड़ी भारी थी ।
अत: कुछ ही दिनों के बाद,
वह प्रेस और पत्र,
पटना लाना पड़ा ।
वहां कदमकुआं में
एक किराये के मकान में
प्रेस व्यवस्थित करके
उन्होंने फिर
लोक-संग्रह निकलने का
जटिल कार्य आरम्भ किया
सदुद्योग साहस से
कठिनाइयां बहुत-सी
कम तो हो गयीं-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पहुंच पटने में,
और सहायक भी
मिले धुनी कुछ ।
उनमें से पहले थे,
श्री वशिष्ठ नारायण राय
जो कि अधिवक्ता थे
एवं विद्वद्वर्य स्वामी के
पुराने परिचित थे,
काशी से ही
उनका साथ रहा था,
श्रद्धा-प्रेम-लगन से
लगे लोक-संग्रह के
संपादन या,
समाचार-संग्रह में
कई महीने तक उन्होंने
पूरी सहायता की ।
असल में प्रेस के
मैनेजर भी वे ही थे,
संपादक तो थे ही ।
उधर बिहटा का,
वह आश्रम आदर्श
उनइस सौ सताइस की
गुरुपूर्णिमा को ही
नियमित रूप से-
खुल गया था-
अत: उन्हें पटने से
बराबर बिहटा
चले आना पड़ता था ।
क्रियाशील योगी वे
पांच बजने के पूर्व
नित्य प्रेस से
चल देते थे
और प्राय: पैदल ही
बीस-पचीस मिनट में
स्टेशन आते थे ।
सुविधा के विचार से
मासिक टिकट लेकर ही
आना-जाना होता था ।
वे बिहटा से ट्रेन पकड़कर
सुबह दस बजे के पहले ही
पटना आते
और पैदल ही
प्रेस पहुंच जाते थे ।
सरल हृदय के
सच्चे योगी यती तपस्वी
संयम-सदाचार के
सहज स्वरूप निराले
जन-नायक स्वामी जी,
नव-संचालित
बटु-आश्रम की
खोज-खबर लेने के सिवाय
प्राय: दिहात के ही
विमल वायुमण्डल में
रहने के आदी थे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फलत: शहर में,
ठीक नींद नहीं लगती थी,
दूसरे कि पटने में
मच्छरों की भरमार
तो अलग ही है,
ऐसी दशा में
प्रेस और पत्र दोनों का
चलना कितना कठिन था
यह आसानी से
समझा जा सकता है,
अत: स्वामी की
मदद के लिए
एक अर्दली
रखा गया था,
जो कि दौड़धूप का
और कार्य करता था ।
प्रेस में
बाहरी छपाई भी
कुछ-न-कुछ
होती ही थी ।
क्या आज इतने थोड़े या
नहीं के बराबर
कर्मचारी रख
साप्ताहिक पत्र या प्रेस
चलाये जा सकते हैं ?
यह प्रश्न सहज ही
पूछा जा सकता है ।

पर इसका उत्तर तो
साफ सामने है कि
वर्षों से ज्यादा
वे चलाते रहे ।
केवल वरिष्ठ बाबू की
थोड़ी सहायता और
एक अर्दली की-
मदद से,
सारा काम किया ।
लोक-संग्रह के बारे में,
समय पर नहीं पहुंचने या
नहीं मिलने की शिकायत
शायद ही कभी होती थी ।
सच्चे कुशल यती ने
ऐसा प्रबंध ही
कर रखा था ।
विज्ञापन नहीं होने से
सारा खर्च,
ग्राहकों से ही चलता था ।

———

आखिर में,
एक वर्ष से ज्यादा
काम करने के बाद
उन्होंने देखा कि
किस बेढंगे-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काम में फंसा कि
काम दूसरा
बंद हो गया ।
अत: प्रेस और पत्र
दोनों को ही,
पंडित यमुना कार्यी,
देवपार, पूसा-दरभंगा,
अपने परिचित,
एक समाज भक्त कर्मठ को,
चौबीस सौ रुपये में
सौंप दिया बेखटके
और रुपयों की
किश्त कर दिया ।
उसके बाद
कुछ समय तक
विश्राम के लिए
सुल्तानपुर शाहाबाद
श्री अनिरुद्ध शर्मा-
के गांव,
बनी कुटी गुफा में
निर्द्वन्द्व होकर जा विराजे,
फिर वहां से
सच्चे स्वतंत्रता-सेनानी
समाज भक्तों के गांव
सातों-सिमरी पहुंचे
और ठहर विश्राम किया ।

——-

प्रेस और प्रकाशन के
भारी दलदल में-
फंसे यती ने,
वर्षों बाद निकल कैसे हूँ,
शांति-चैन की
थोड़ी सांस ली ।
उस प्रेसवाले-
झमेले के प्रसंग में
एक पुरानी
लेकिन चित्ताकर्षक
बात याद आ गई ।
वह भी प्रेस से ही
सम्बन्ध रखती है ।
जहां तक याद है,
सन् उनइस सौ पनरह में,
एक प्रेस में
वे काशी में
और भी फंसे थे ।
उससे मासिक पत्र
'भूमिहार-ब्राह्मण'
निकाला था,
काशी के तीन युवकों ने
जो विद्यार्थी थे
और पीछे
नौकरी-चाकरी में
लग गये,
अपने पास से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बीस-बीस रुपये जमा किये ।
उस साठ रुपये की
पूंजी से ही
उन्होंने वह पत्र निकाला,
जो चल पड़ा और
बहुत दिनों तक
कायम भी रहा ।
उनके साथ वे-
छात्र लोग भी
लगे रहते थे ।
पत्र शुरू में,
किसी और प्रेस में
छपाया जाता था ।
पीछे तो उसका
अपना प्रेस हो गया ।
इस प्रसंग में यती ने
अपनी आत्मकथा में
अनुभव की यह बात
बताई है कि:-
'यदि ईमानदारी के साथ
किसी काम में लगा जाय तो
पैसे के बिना वह,
रुक नहीं सकता ।
यह उनका सदा का अनुभव है ।'
पीछे जब उन्होंने
'भूमिहार-ब्राह्मण-परिचय'
पुस्तक लिखी तो
उन तीनों सहयोगी
विद्यार्थियों में
एक ने उसके
छपवाने आदि में
उद्योग-परिश्रम
कुछ अधिक किया ।
पुस्तक की विक्री से
जो रुपये आये उन्हीं से
प्रेस खरीदा गया ।
पीछे उसी से
मासिक पत्र
'भूमिहार-ब्राह्मण'
होने लगा प्रकाशित,
बाद में जब
सचाई और
ईमानदारी या
अर्थ-शुचिता के
जागरूक प्रहरी यतिवर ने
पुस्तक के रुपयों का
हिसाब मांगा,
और प्रेस तथा पत्र का भी,
तो उस हिसाब मांगने में
शेष दो साथी भी
शामिल हो गये,
बस उसी समय
उस तीसरे सज्जन ने
टाल-मटोल किया,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और अंत में
हिसाब दिया ही नहीं ।
पुस्तक की बिक्री के
रुपये प्राय: डेढ़ हजार
हड़प लिये उन्होंने ।
साथ ही
प्रेस और पत्र को भी
ढिठाई बस हथिया डाला ।
शेष दो साथी
देखते ही रह गये,
परम पवित्र
सार्वजनिक पैसे को
धर्म ईमान
ताक पर रखकर
हड़पने वाले
घृणित घाघ के आगे
और दूसरा चारा क्या था ?
खैर, उनसे
बची बचाई पुस्तकें
जैसे-तैसे लेकर
स्वामीवर ने पिंड छुड़ाया
इस प्रकार जनता के
रुपये प्राय: तीन हजार
जिसको विरक्त संन्यासी
सार्वजनिक कार्य में ही-
लगाते,
न कि अपने,
व्यक्तिगत उपयोग में,
लोगों के गले के नीचे,
सहज ही उतर गये,
और वे मौन
देखते ही रह गये ।
असल में रुपया
ऐसी ही चीज है
यह बड़े-बड़ों के
ईमान हिला देनेवाली
अपूर्व वस्तु है ।
इसके बारे में
आत्म-कथा में
उनका कहना है कि-
'इतने दिनों के
अनुभव ने
मुझे तो
यही सिखाया है कि
यदि किसी की
परीक्षा लेनी हो तो
उसके पास
थाती के तौर पर
कुछ रुपये रख दीजिये,
और पीछे मांगिये,
रुपये मिलने में,
जो कठिनाइयां होंगी,
वह आप स्वयं ही जानेंगे,
उस पर भी शायद ही,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहीं-कहीं से
मिल पावें वे ।
इसीलिए रुपये पैसे
यदि किसी को
उधार भी देना हो
तो यह समझकर ही
चाहिए देना कि
वापस नहीं मिलेंगे ।
फिर भी अगर मिल गये
तो गनीमत समझिये ।'

———

धन्यभूमि देवा में
अवतरित उस
दिव्य-शक्ति के
कार्य सदा ही
नव-आलोक
नई ऊर्जा के
जनक अभिजात
क्रांतिकारी रहे ।
दिग्भ्रमित और
घबड़ायी
किंकर्त्तव्यविमूढ़-
जनता ने,
नाजुक घड़ियों में
नई दिशा-निर्देश
प्राप्त कर उनसे
कदम बढ़ाया
अभ्यूदय की ओर !
मूर्त्त स्वरूप शक्ति के
संत उर्जस्वी
यतीराज वे
शोषित-पीड़ित
दलित और अपमानित
दीनदुखी लोगों के
उद्धारक थे ।
संघर्षों के
अद्भूत सेनापित
सजग, चुनौती का
साहसपूर्वक
किया सामना उनने
और सफलता पायी ।

——

पटना जिले के
जिस इलाके में
बिहटा का आश्रम है
वह जिले का
भाग पश्चिमी
सुभाग सुसज्जिंत है,
और साथ ही
जालिम जमींदारों का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हरा-भरा चरागाह
स्वादयुक्त अनुपम प्रिय
रहा युगों से ही है ।
उस बिहटा से दक्षिण
सात-आठ मील जाने पर
मसौढ़ा परगना उपजाऊ
शुरू हो जाता है
वह दक्षिण में दूर तक
गया जिले में भी
चला गया है ।
उस मसौढ़ा परगना के
जमींदार बलशाली
बहुत पहले ही से
जालिम मशहूर रहे हैं ।
वह वही जमींदार रहे हैं
जिन्होंने किसानों की
लड़कियां और बहनें
बिकवाकर कभी,
लगान वसूल किया है ।
वहां जमींदारों के
पटवारी-वराहिल
अमले आदि ही
सब कुछ थे ।
और किसान उनसे
थर्राते रहते थे ।
उनके जुल्म के
एकाध नमूने-

और सुनिये,
फसल तैयार होकर
खलिहान में जमा है,
और जमींदार के
कर्मचारी ने उस पर
गोबर लगा दिया,
जिसे छापा कहते हैं,
फिर जब तक-
जमींदार का-
हुक्म न होगा,
तब तक किसान की
क्या बिसात कि
छूए उसको ?
चाहे वह सड़, गल या
जल ही क्यों न जाय ?
वहां पहले से
एक तरीका था-
दानाबंदी का,
वहां अधिकतर
जमीनों की
मालगुजारी नकद न होकर
भावली थी,
इससे किसानों को
रुपये के बदले
जमींदार को
कूत किया गल्ला ही,
देना पड़ता था ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह कितना ही
इसे ठीक करने का
परंपरागत ढंग
दाना बंदी-
कहलाता था ।
जमींदार के अमले
फसलवाले खेत पर जाकर
अटकल-पच्चू कह देते कि
इस खेत में
इतने मन गल्ला होगा
और वही बस
वज्रलीक हो जाता,
यदि अमले की पूजा
किसान ने न की तो
पांच मन का आठ मन तो
जरूर ही कह देगा ।
वही बात वह
एक कागज पर
लिख लेता था
जिसे खेसरा कहते थे ।
कभी-कभी तो
जमींदार की
कचहरी में बैठकर
जाली खेसरे
बना करते थे ।
जोर-जुल्म की
उसी परिस्थिति
और दमघोंटू
दुखद वायुमंडल में
उन पिसे किसानों की
करुण दशा से द्रवित विकल उस
करुणा-निधान,
क्रांतिदूत यतिवर का
पहले पश्चिम पटने में ही,
प्रारम्भिक किसान आंदोलन
सन् उनइस सौ सताइस के
बीतते न बीतते
शुरू हो गया ।
उसके कुछ ही दिन
चलने के बाद
नियमानुसार उन्होंने
पश्चिम पटना-
किसान सभा का
उनइस सौ अठाइस की
चार मार्च को जन्म दिया ।
यह तारीख देख जो लोग
जन्म किसान सभा का,
उनइस सौ अठाइस,
मान लेते हैं,
वह भूल करते हैं ।
किसान-सभा का
जन्म असल में
उनइस सौ सताइस के
अंतिम दिनों में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आखिरी महीनों में ही
हुआ, यह पक्का है !
इस प्रकार ऊपर की
बातों से यह
साफ झलकता है कि
स्वामी जी ने
शुरू में जब
किसान-सभा का
जन्म दिया तो
किसानों तथा
जमींदारों के
समझौते और
उनके हकों को
सामञ्जस्य को
सामने रखकर ही
यह काम किया ।
यही उस समय
कांगरेस का
था सिद्धान्त सुनिश्चित
और आज भी है कि
किसान-जमींदार
पूंजीपति-मजदूर
अमीर-गरीब
आदि सभी के
परस्पर-विरोधी
हकों-अधिकारों-
और हितों का
सामञ्जस्य करना
और मिलाना ।
उनके मत से
तो असल में
ये अधिकार
ये हक और हित
परस्पर विरोधी
हैं ही नहीं ।
किन्तु केवल ऊपर से
ऐसे मालूम पड़ते हैं ।
अत: काम उसका है
इसी मालूम पड़ने को
हटा भर देना ।
वह इन वर्गों के
आपसी संघर्ष को
बहुत खराब मानती
और इससे डरती है
इस संघर्ष रगड़ विग्रह को
वह वास्तव में
आजादी की लड़ाई का
बाधक समझती है ।
स्वामी जी का दृष्टिकोण भी
उस समय यही था ।
वह भी यही सोचते थे कि
हमारी कोशिश से
यह सामञ्जस्य
हो जायेगा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लेकिन उनको
क्या पता था कि
एक दिन यही किसान-सभा
परिस्थिति के वश हो
इस विचार को
त्यागने को होगी मजबूर ।
और इस विरोध को
स्वाभाविक तथा
असली चीज समझकर
इस संघर्ष सहज का
स्वागत करेगी ।
यहां कहने का
तात्पर्य यह है कि
स्वामी जी के मन में
जो पहले-पहल
किसान-आंदोलन
और किसान सभा का
खयाल आया वह
पक्के और कट्टर
सुधारक या
सुधारवादी की
हैसियत से ही
न कि सपने में भी
क्रांतिकारी की
हैसियत से ।
इस प्रकार क्रमशः उन्होंने
अनुभव से आगे बढ़
वस्तुतः क्रांति को समझा ।

——

सन् उनइस सौ छब्बिस की
गर्मियों में
कंई वर्षों के
मनमुटाव के बाद
सर गणेश से
स्वामी जी का
कुछ हेल-मेल
हो गया था ।
अतः 'लोक-संग्रह'
से छुटकारा पाते ही
सन् उनइस सौ अठाइस की
गर्मियों में वे
उनके ही आग्रह सें
रांची गये
और कुछ दिन
ठहरे वहां ।
उस विश्राम के क्रम में
रांची में निवास कर
वे बराबर
आस-पास के
गावों में स्वभावतः
दूर-दूर तक
घूमने जाया करते थे,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा मुंडा उरावं वगैरह
आदिवासियों की
रहन-सहन या
परिस्थिति और समस्याओं का
अपनी पैनी-
प्रकृति-दृष्टि के चलते
अध्ययन-मनन भी करते थे ।
उनके सिर पर शिखा देखकर
करुण-हृदय यतिवर का
रो पड़ता और
सोचता था कि
हिन्दुओं की शिखा यह
उनके सिर पर
न जाने कब आई थी ।
इधर हजारों वर्षों तक
हिन्दुओं के धर्म के
ठेकेदारों ने
इनकी खबर भी न ली ।
फिर भी चुटिया कैसे पड़ी हैं,
आश्चर्य है यह !
धर्म तो सिखाया सही
मगर पशुवत् जीवन
बना ही रहने दिया ।
युगों तक पूछा भी नहीं कि
मरते हो या जीवित हो ।
संत सूक्ष्मदर्शी ने
अपने चिन्तन क्रम में
तीन विशेष गुण
देखे उनमें ।
वे तीन गुण हैं-
झूठ कभी न बोलना,
व्यभिचार से दूर रहना,
और शूरता साहस ।

—-

हाँ तो, सर गणेश की-
बात जानिये ।
बेशक, सरकार परस्ती
खूब ही की, उन्होंने ।
अन्यथा, उनका त्याग
बिहार में तो
सानी नहीं रखता ।
सचाई उनकी अनुपम थी,
उनके जैसा
अतिथि-सत्कार
और, प्रतिज्ञा
पूरी करनेवाला
चरित्र का धनी मनुष्य
स्वामीवर ने
जीवन में
दूसरा देखा नहीं ।
दानवीर दधीचि जैसा
शिक्षा प्रेमी प्रथम कोटि का,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूझ-समझ भी सुन्दर
चतुर भी पूरा
शायद ही कोई वैसा हो ।
उनकी समाज-सेवा
निस्पृह और निराली थी ।
आज के युग में
सचमुच वे
ऋषिपुंगव थे ।
उनके सदाचार की
मधुर मुग्धकारी सुगंध से
गम-गम गमक रहा है
अब भी बिहार का
कोना-कोना ।
आगे चलकर
भूमिहार-ब्राह्मण-
महासभा की,
जनहित-सम्बन्धी
सैद्धान्तिक बातों को लेकर
सर गणेश या-
उनके, जमींदार साथियों से
मतभेद होने से,
लोकतंत्र के
प्रबल पक्षधर
शुद्ध न्याय-अनुहारी
पूज्यपाद स्वामी ने
सन् उनइस सौ उनतिस में
मुंगेर-अधिवेशन में
भूमिहार ब्राह्मण-सभा का
अंत कर दिया ।
जो अपने ऊल-जलूल और
दकियानूसी
अमिल विचारों के चलते
फिर बहुत दिनों तक
सिंर न उठा सकी ।

———

मेरठ के असौढ़ा-
और तौली में,
कुछ दिन विश्राम-
करने के बाद
पूज्यपाद स्वामी जी
पटना-बिहटा लौटे ।
सन् उनइस सौ उनंतिस के
नवम्बर का महीना
बिहार प्रान्तीय-
किसान-सभा के
इतिहास-सर्ग में
चिरस्मरणीय रहेगा ।
स्वामीवर
सहसा किसी कार्यवश
मुजफ्फरपुर गये हुए थे
और वे
पंडित यमुना कार्यी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के यहां ठहरे थे
सबेरे का समय था
उसी समय
श्री रामदयालु बाबू ने
कार्यी जी के साथ
उनके यहां पहुंचकर
सघन बातों के क्रम में
शुरू किया कि
बिहार प्रान्तीय-
किसान-सभा की
नींव दी जानी चाहिए।
उन लोगों ने
समझ लिया था
कि बिना किसान-सभा के
सरकार नहीं मानेगी,
वह काश्तकार कानून में
खतरनाक संशोधन करके
किसानों का-
गला रेत देगी,
और हमलोग
कुछ कर भी न सकेंगे।
इसीलिए
प्रान्तीय किसान-सभा की
बात कारगर सूझी।
स्वामी जी की
अनुमति पाकर
सभा का-
तत्परता से,
यथा शीघ्र ही
विधिवत गठन हुआ।
उन्हीं लोगों ने
श्री कृष्ण सिंह को
महामंत्री चुना
तथा पंडित यमुना कार्यी
गुरु सहाय लाल और
कैलाश बिहारी लाल को
डिवीजनल मंत्री बनाया।
जिससे कि कार्य
सुचारु रूप से आगे बढ़े।
रामदयालु बाबू ने
हठपूर्वक
काम नहीं चलने की
अनुरोधपूर्ण बातें कह
उन्हें सभा का
पहला अध्यक्ष बनाया।
आगे सोनपुरवाले
ऐतिहासिक मेले के
शुभ अवसर पर
वहीं सोनपुर में
पहला सम्मेलन
हुआ सभा का।
जमावड़ा अच्छा था
एक तो सभा
दूसरे मेला

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर जमावड़े में
क्यों कमी हो ?
स्वामी जी ही सम्मेलन के
मनोनीत सभापति थे ।
उस आयोजित सम्मेलन में
सभापति के अतिरिक्त
बाकी लोगों के भी
भाषण हुए सुष्ठ ओजस्वी ।
जिनमें कि
बिहार प्रान्तीय-
किसान-सभा की
आवश्यकता बताई गई ।
और प्रस्तावित
काश्तकारी कानून में
किये जाने वाले
खतरनाक संशोधनों की
चर्चा भी भरपूर हुई ।
कुछ लोगों ने
सभा बनाने का
किया विरोध भी ।
स्वामी जी ने
अपनी आत्मकथा में
औरों की तो
कोई खास चर्चा नहीं की,
लेकिन तो
रामवृक्ष बेनीपुरी के
खासा विरोध की
बात उन्होंने
इस प्रसंग में
अवश्य लिखी है ।
बेनीपुरी ने-
सम्मेलन में,
'कांगरेस के रहते-
किसान-सभा की
कोई जरूरत नहीं'
की बात कही थी ।
उनका खयाल था कि
कांगरेस ही
सब कुछ कर सकती है ।
फिर किसान-सभा
अलग क्यों बने ?
कांगरेस में तो
अधिकांश किसान ही हैं ।
असल में वही तो
किसान-सभा है ।
अलग किसान-सभा बनने से
कांगरेस-
कमजोर हो जायेगी,
वही बेनीपुरी-
आगे चल,
समाजवादी और
किसान-सभा के
हिमायती बने ।
सम्मेलन के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ ही वर्षों के बाद
वह 'बालक' से
'तरुण' क्रांतिकारी बन,
यतिवर द्वारा संचालित
हिन्दी के साप्ताहिक
ख्यातपत्र 'जनता' के,
यशस्वी संपादक बने ।
उन दिनों-
श्री बेनीपुरी से,
स्वामी जी का
कोई विशेष परिचय-
नहीं था ।
विशेष परिचय तो
तब हुआ जब
वह सोसलिस्ट नेता बने
और भूकम्प के बाद
उनइस सौ चौंतिस-पैंतिस में
किसान-सभा के
समर्थक हुए ।
सम्मेलन में,
आखिर में राय ली गई
और सभा स्थापित करने का
सर्वसम्मत निर्णय हुआ ।
उसके बाद
पदाधिकारी चुने गये ।
स्वामी जी बार-बार ही
अस्वीकार करते रहे

लेकिन वे ही
सभापति और
पूर्वोक्त सज्जन
मंत्री आदि चुने गये ।
सदस्यों में
श्री राजेन्द्र प्रसाद से लेकर
जितने प्रमुख
कांगरेसी थे
नाम सभी का दिया गया ।
तय हुआ कि
सभी लोगों से
शीघ्र पूछकर
स्वीकृति भी-
ले ली जायेगी ।
किया भी ऐसा ही गया ।
सबने स्वीकार किया
किसी ने भी
किया नहीं इनकार
सिवाय ब्रजकिशोर प्रसाद के,
आगे जाकर
स्वामी जी और
पंडित यमुना कार्यी
के सिवाय
उन लोगों में
शायद ही कोई है
जो उस बिहार प्रान्तीय
किसान-सभा के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष
विरोधी न हुए हों ।

——

सभा के सुदृढ़ होने और
किसान हितों के लिए
ईमानदारी से
संघर्ष करने पर
वे ही लोग
जो शुरू में
उसके आश्रय दाता
और कर्ता-धर्ता थे
तथा उनइस सौ चौंतिस तक
बराबर उस सभा के साथ
सहानुभूति रखते थे,
उसकी बड़ाई की,
करते रहे समर्थन उसका,
वे ही उसे
जड़-मूल से
गिरा देने पर तुले थे ।
लेकिन समय,
एक-सा रहता नहीं
वह तो बदलता रहता है ।
जिन लोगों ने
उस विरक्त यतिवर को
घसीट कर
आगे किया सभा में
वही बाद में
उनकी टाँग पकड़कर
दु:शीलता से
खींचते देखे गये ।
सोनपुर सम्मेलन के बाद
कांगरेस-सरदार
बल्लभभाई पटेल का
दौरा हुआ बिहार प्रान्त का
हर ज़िले में
जन-सभाओं का
किया गया आयोजन,
ठीक उसी अवसर पर
यतिवर ने भी
हर जगह का दौरा किया
और उनके आने के पूर्व
किसानों को किसान-सभा,
का वास्तविक महत्व समझाया,
बल्लभभाई ने भी
कई सभाओं में
पूज्यपाद स्वामी के
उन विशिष्ट कार्यों का
स्वागत किया और लोगों से
उसमें सहायता देने की
कही ठोस बातें भी ।

——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तदुपरान्त स्वामी जी,
समय परिस्थिति
और देश हित-
का विचार कर
और लोगों के साथ
सन् उनतीस के
लाहौरवाले बहु चर्चित
कांगरेस के अधिवेशन में
गये सम्मिलित होने ।
वहां जो जोश और उत्साह
देखने का अवसर मिला
वह अद्भुत और
अकथनीय रहा,
खास कर पूर्ण स्वतंत्रता का
प्रस्ताव पास होने पर तो
हुआ प्रतीत ऐसा कि
'पलट गयी दुनिया ही'
स्वामी जी चुपचाप गौर से
कांगरेस की
कार्यवाही को
रहे देखते सम्यक् ।
अखिल भारतीय
कांगरेस-महा-समिति का
होते हुए सदस्य प्रमुख भी
कुछ बोले नहीं ।
वे तो शुरू से ही
प्राय: उस समिति के
सदस्य और
कांगरेस के प्रतिनिधि
बराबर ही रहे ।
किन्तु उनइस सौ चौंतिस की
मुंबई वाली
कांगरेस के पहले
कभी नहीं बोले थे ।
सन् चौंतिस में
गाँधीजी
कांगरेस से
हटने से पूर्व,
उसके विधान का जो,
आमूल परिवर्तन
कर रहे थे,
उसमें स्वामीवर को
किसानों और
गरीबों के लिए
खतरा दिखा,
इसलिए पहले-पहल
वहीं बोले और,
किया विरोध उस-
संशोधन का ।
तब से वह बोलना-
और विरोध,
किसी-न-किसी रूप में
जारी रहा बराबर ।
यतीराज को

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस बात की
प्रसन्नता थी कि-
कांगरेस के विवाद में
अगर उनकी-
दिलचस्पी,
शुरू हुई तो,
किसानों और शोषितों की
बातों को लेकर ही ।
यह संयोग की बात है कि
कांगरेस को
विशेष रूप से
जब उन्होंने
पहले देखा और पहचाना
तो किसानों या दलितों के
विरोध के रूप में ही ।
फिर चाहे वह विरोध
आंशिक ही क्यों न हो ?
लेकिन था बुनियादी ।
क्योंकि उन्होंने
कांगरेस की
उस नयी सदस्यता को ही
वैसा देखा
जिसे गांधी जी
नये सिर से
कांगरेस में ला रहे थे ।
आगे चलकर
उनका वह भय
कितना सच्चा निकला !

—-

लाहौर कांगरेस से
लौटते ही
छब्बीस जनवरी को
पहले-पहल
पूर्ण स्वतंत्रता-दिवस
देश भर में
मनाया जाने वाला था ।
इसलिए उससे पहले ही,
स्वामी जी ने
किसान-सभा की
बैठक बुलाई और उसमें
दो आवश्यक काम किये ।
एक तो-
एक प्रस्ताव द्वारा,
उन्होंने कौंसिल में पेश
नये काश्तकारी कानून-
के संशोधन बिल को,
अस्वीकार किया और
उसका तीव्र विरोध किया,
साथ ही सरकार से
यह भी मांग की-
उसे वापस ले ले ।
दूसरा काम यह किया कि-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देश की परिस्थिति का
खयाल रखते हुए
कुछ समय के लिए
किसान-सभा का काम
एक प्रस्ताव द्वारा
स्थगित कर दिया
ताकि अबाध रूप से
सभी लोग,
आजादी की
आनेवाली लड़ाई में
भाग ले सकें ।
किसान-सभा की
उस बैठक के बाद ही,
स्वराज्य पार्टी ने
कौंसिल में जाकर,
उस काश्तकारी कानून के,
संशोधन का
विरोध किया ।
फिर तो सरकार चतुर ने
यह कह कर उस बिल को,
लौटा लिया कि
जब किसान-सभा,
और कांगरेस
दोनों ही,
उसके विरोधी हैं
तो सरकार को
क्या पड़ी है कि,
उसे पेश करे या पास करे ?
इस प्रकार
किसान-सभा के
जन्म के साथ ही
एक तो उसे
पूर्ण सफलता यहीं मिली
और वह बिल खत्म हुआ ।
दूसरे,
सरकार ने
किसान-सभा के
अस्तित्व को मान लिया कि
वह किसानों की ओर से
बोलनेवाली संस्था है ।
सभा के इतिहास से
यह सिद्ध है कि
उसने अपने
उस कर्तव्य को
कितनी सुन्दरता से
पाला है ।
उससे यह भी सिद्ध है कि,
पहले पहल
टेनेन्सी बिल को
खत्म करने के रूप में,
जो विजय उसे,
जन्म-काल में मिली-
वह बराबर मिलती रही ।
न जाने कितने,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैसे बिलों को
या तो उसने ध्वंस किया
या उनके विष का,
खत्म किया अधिकांश ।

—-

न जाने जन्म से ही
यतिवर का स्वभाव कुछ
ऐसा क्यों कर रहा है कि-
संघर्षवाली जगहें
उन्हें सदा पसन्द आई हैं ।
कांगरेस में भी शुरू में
लगे रहे वे खूब ।
जब तक वहाँ
संघर्ष और
गुत्थम-गुत्थ था,
मगर जैसे-जैसे
वह भिड़न्त
उससे जाती रही,
वैसे-वैसे वे भी
उससे कुछ
उदासीन होते गये ।
यहाँ तक कि
बीच के दो-एक
अधिवेशनों में
गये तक भी नहीं

लेकिन ज्यों ही
सन् उनइस सौ तीस में
वह फिर,
जबर्दस्त संघर्ष की ओर
बढ़ी, त्यों ही वे,
सब काम छोड़कर
यहाँ तक कि
सबसे प्यारी
किसान-सभा और
श्री सीता रामाश्रम को भी
छोड़कर उसमें जुटने के लिए
हो गये तैयार और बड़ी तेजी से
चारों तरफ घूमकर
लोगों को
लगे तैयार करने
उनका कार्य क्षेत्र तो
पटना जिला ही था ।
खासकर बिहटा के
चारों ओर का इलाका,
उधर यह भी
घोषणा हो गयी कि
गाँधी जी अपने
आश्रमवासियों के साथ
डाँडी के लिए
कूच करेंगे,
और वहीं नमक का
कानून तोड़ेंगे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाद उसी के
बाकी लोगों को
सबसे पहले
बिना लाइसेंस
नमक बनाकर
उस कानून को
तोड़ना होगा
तब तक छब्बीस जनवरी
आ गई ।
बड़ी तत्परता से
सभाएं करके
और जूलूस आदि निकालकर
'पूर्ण स्वतंत्रता दिवस'
धूमधाम से
मनाया गया ।
अप्रैल आते न आते
देश की
काया पलट हो गयी
और धर-पकड़ जारी हुई ।
स्वामीवर-
बिहटा के पास
बड़ा गाँव अमहरा में ही
नमक कानून तोड़ने की
तैयारी में लग गये
अमहरा ने हर संघर्ष में
यतिवर का
बराबर साथ दिया-
और जम के दिया,
सत्याग्रह के
जमाने में तो
उसने किया कमाल ।
लोग जेल गये
सो तो गये ही,
तंग-तबाह भी किये गये ।
उसी सिलसिले में
राष्ट्रीय सप्ताह में ही
जगत नारायण लाल ने
अमहरा बगीचे में
नमक-कानून तोड़ा
और जेल गये ।
उसके बाद शीघ्र ही
स्वामी जी ने
अमहरा से कुछ दक्षिण
विक्रम के आश्रम में
नमक कानून तोड़ा
फलतः पुलिस का-
ए.एस.पी.
जो सदलबल हाजिर वहाँ था,
उन्हें पकड़कर
ले गया मनेर थाने पर,
वहाँ पहुँचने में
शाम हो गयी थी,
फलतः वहीं रुकना पड़ा,
दूसरे दिन दानापुर के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनुमण्डलाधिकारी
आर. जगमोहन के
इजलास से
छः महीने की-
सजा पाकर,
बाँकीपुर जेल भेजे गये ।
प्रायः एक महीने तक
वहाँ जेल में
गंदगी और मच्छरों से
लड़ते रहने के बाद
स्वामीवर वहां से
और दो-चार
अन्य लोगों के साथ
भेजे गये
हजारीबाग जेल में
वहां उन्होंने
पहुँचे सत्याग्रही
राजबंदी लोगों की
सिद्धान्तहीन
गति-विधि को देखा ।
गाँधी जी के सिद्धान्तों की
जैसी छीछालेदर
उनके अनुयायी करते थे,
नैतिक पतन
विवेकहीनता तृष्णा-लोभ
कलह आडम्बर
दंभ-दुराग्रह मिथ्याचार
आदि दोषों का
विषम दृश्य वह,
गाँधीवाद में
श्रद्धा अटूट
रखनेवाले,
संत विरक्त विवेकी
सुधी शिरोमणि
स्वामीवर के लिए
दर्दनाक था ।
उस विकराल दृश्य को
किस प्रकार वे
सह सकते थे ?
आखिर तो
धर्म दृष्टि से ही वे
राजनीति में कूदे थे ।
लेकिन वहाँ तो
ऐसी गंदगी पाई कि,
हो गये तंग
और भौंचक्का ।
उन्हें मालूम पड़ा कि
वे पड़ गये धोखे में !
बात ऐसी थी कि उन्हें,
सन् उनइस सौ बाइस के-
आखिर तक होनेवाले
अनुभवों के आधार पर
यह खयाल हो आया था कि
सहसा गाँधीजी ने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा परिस्थितियों ने भी
कस के धक्का मारा
और सारा देश
बढ़ गया बहुत आगे
नेता भी और जनता भी
चले गये दोनों ही
दूर आगे को ।
उसके बाद-
नेता लोग तो,
धीरे-धीरे
पीछे खिसकने लगे
किन्तु जनता
जहीं की तहीं रह गई ।
बल्कि वह धीरे-धीरे,
जा रही थी आगे ही,
जनता में
राजनीतिक चेतना
और प्रगति भी
बहुत हुई थी
मगर सत्य-अहिंसा आदि
गूढ़ दार्शनिक सिद्धान्तों को
उसने उतना
कभी नहीं समझा था ।
समझती भी नहीं वह,
उसका ऐसा
स्वभाव ही नहीं कि
इन गहरी बातों में
माथापच्ची करे व्यर्थ ही,
उसका उसे मौका ही नहीं ।
बात दूसरी यह भी है कि
उनसे उसकी,
रोटी तो हल होती नहीं ।
भौतिक और आर्थिक
मामलों को वह
खूब समझती है ।

जेल की दुनिया निराली है,
गिरने का मौका जेल में,
सबसे ज्यादातर होता है ।
असलियत वहीं
आसानी से खुलती है ।
जेल में कुछ लोग ही
ऊपर जाते हैं
कुछ अपनी जगह पर
रह जाते हैं ।
मगर ज्यादा लोग
नीचे चले जाते हैं ।
यही बात पक्की है ।
अब तक यही हुआ है ।
दूसरी बार
जेल में आते ही
जो नजारा देखा उनने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उससे उनकी
पुरानी आशाओं पर
पानी फिर गया ।
उन्होंने मान लिया कि
वह नाव तो
डूबनेवाली है ।
गाँधी जी का सत्य
और अहिंसा उनकी
हर्गिज चलने की नहीं
जरा-जरा-सी
बातों के लिए लोग
क्या-क्या न कर डालते थे ।
जरा-सी सुविधा के लिए
आकाश-पाताल
एक कर डालते थे ।
पावरोटी-मक्खन
और अंडे के लिए
अनेक फरेब रचे जाते थे
कोई किसी की सुनता न था,
सब अपने-अपने मालिक,
गाँधी जी के बताये
नियम-
कायदे तो, कतई भूल ही गये थे,
मानों, उन्हें कभी किसी ने
सुना या जाना ही न हो ।
इस प्रकार वह
जेल की धींगा-मुश्ती
दुखद और
अकथनीय थी,
जबर्दस्ती किसी की
शिखा काट लेना
और जनेऊ तोड़ देना तो
बात सहज साधारण थी ।
जिसके हाथ में गीता देखी
बस लोग उसी के
पीछे पड़ गये,
और उसके
नाकों दम कर छोड़ा ।
दशा विचित्र थी
यतिवर ने देखा कि
बाबू राजेन्द्र प्रसाद भी
परेशान और लाचार थे ।
उनकी कोई
सुनता ही न था ।
फिर दूसरे की कौन गिनती ?
स्वामी जी के सामने
वहाँ जाते ही
एक और प्रश्न आया,
उन्होंने,
सन् उनइस सौ बाइस में ही,
विशेष प्रकार का
भोजन वगैरह
इनकार कर दिया था,
हजारीबाग जाने पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर इनकार किया उन्होंने,
और मामूली
भोजन वगैरह ही
लेना शुरू किया,
इस बार बड़ा
तोबा-तिल्ला मचा,
लोगों ने इधर-उधर से,
बहुत कुछ समझाना चाहा
मगर किसी की नहीं चली।
फिर तो चुप रहे सभी,
मगर जब उन्होंने,
पीछे यह जाना कि
बहुतों को उनकी यह बात
बुरी तरह खटकती थी।
उसमें वे अपनी
अप्रतिष्ठा देख रह थे।
वह समझंते थे कि
वे भी उन्हीं जैसा
खान-पान स्वीकार करके
पथ-भ्रष्ट हो जायं,
लेकिन वे लोग अन्त तक
सफल नहीं हो पाये
तब झूठी बातें फैलाकर
उन्हें कलंकित करना चाहा,
परिणाम यही हुआ कि
स्वामी जी
अपने सेल से
बाहर निकलते ही न थे,
केवल नित्य क्रिया के
समय को छोड़
शेष समय
उसी के भीतर ही-
पड़े रहते थे।
बाहर का दृश्य
था असह्य इतना कि
भीतर ही बैठे वे
सूत कातने
और पढ़ने-लिखने का
काम करते रहते थे,
एकाध जवानों को
कुछ पढ़ाते भी थे।

सच्चे संत विरक्त सरल चित
विनयशील के सुभग स्वरूप
करुण-हृदय स्वामी की
वह मानसिक-वेदना
कभी-कभी तो
इनती बढ़ जाती कि
क्षमी पुरुष वे
मांफी मांगकर
बाहर चले जाने की बात
सोचने लग जाते थे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँफी केवल इसलिए कि
उन्हें देशद्रोही समझकर
फिर वे लोग
कांगरेस के सम्बन्ध में
न उनके पास आयेंगे ।
न फिर वे कभी आगे
वैसी विकट
नरक-यातना में पड़ेंगे
लेकिन फिर सोचते कि
माँफी मांगने का परिणाम
देश के लिए
घातक सिद्ध होगा,
जिस देश के लिए
इतना किया
उसी की हानि करूँ
यह ठीक नहीं,
उसने क्या बिगाड़ा है कि
उसे हानि पहुँचाऊँ ?
बिगाड़नेवाले तो
वे मुट्ठी भर लोग हैं
तो फिर
उन पर होनेवाला क्रोध
देश के मत्थे
नाहक क्यों उतरे ?
बस यह समझकर रुक जाते ।

उनके स्वास्थ्य की हालत
यह हो गई कि
वे काले पड़ गये ।
मानसिक वेदना
और चिन्ता
ऐसी ही वस्तु होती है ।
यतीराज की
ऐसी दशा देखकर
जेल के ऊँचे अधिकारी
स्वभावत: घबड़ाये,
नारायण बाबू जेलर ने
उनसे यह अनुरोध किया कि
उन्हें उनको
मरने से बचाना है
उनकी रक्ष-सुरक्षा की
उनके ऊपर
जिम्मेवारी है ।
इसलिए वे बतलावें कि
बाहर क्या खाते-पीते थे ?

स्वामीवर जेल में
रोटी मात्र लेते थे
और थोड़ा दूध लेकर
खा लेते थे ।
नमक दाल साग चटनी तो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खाते न थे उनकी
जगह दूध लेते थे
जब जेलर ने पूछा तो
उन्होंने कूकर की चर्चा की
और बतलाया कि
उसी में दलिया पका के
खाता था ।
और कभी-कभी
केले आदि फल भी
जेल वालों ने
पूछताछ के बाद
स्वामी जी के लिए शीघ्र ही
तद्नुकूल कुछ
काम चलाऊ
नई व्यवस्था
कर दी ।
कुछ अनुभवों के बाद
पीछे तो उन्होंने
यह माना कि
वह कड़ाई
कुछ दृष्टियों से
गलत थी ।
राजनीतिक बंदी
जिन्हें जेलों में
ज्यादा समय
अक्सर गुजारना पड़ता है
यदि सुविधाएं न पायें
तो मर ही जायं,
और खत्म हो जायं
अतः उनके लिए तो
यह आवश्यक है कि
आराम से रहें ।
बाहर रहने पर तो
कामों के भार से
फुर्सत रहती ही नहीं,
स्वास्थ्य गँवाकर ही
उन्हें काम करना पड़ता है ।
ऐसी दशा में
जेल में ही
स्वास्थ्य सुधारने का
मौका उन्हें मिल सकता है
और अगर ये
सुविधाएं न रहीं तो
आमतौर से सबका स्वास्थ्य
सुधरने के बदले
चौपट हो ही जायेगा,
इसलिए तो
जेल में जहां तक हो सके
अधिकारियों से
कोई खटपट
न होने देने के
वे कट्टर पक्षपाती थे
जेल में अनशन के
कट्टर विरोधी भी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे इसीलिए थे कि
दिल-दिमाग एवं शरीर
तीनों पर ही
उससे आघात होता है ।
खूब पढ़ना-लिखना
पुराने विचारों को
नये सिरे से
फिर उधेड़-बुनकर के
उनको पक्का करना
या छोड़ना,
नये विचारों को
प्रश्रय देना
और व्यायाम संयमादि-
के द्वारा-
शरीर को मजबूत करना,
यही काम, जेल में
होना चाहिए ।
लेकिन जनान्दोलन में,
जेल की सुविधाओं का-
विचार
जरूरी हो जाता है ।
केवल आदर्शवादी
बनने से
इस भौतिक दुनिया का काम
कभी नहीं चल सकता ।
इसलिए पीछे अपने को
उन्होंने ऐसा योगयुक्त
था बना लिया कि
जेल में कोई
कुछ भी ऊधम-उत्पात करे
या सच-झूठ से काम ले
उनके दिल पर उसका
पहले जैसा
असर नहीं होता था,
प्रज्ञा उनकी पहुँच चुकी थी
अपनी सहज दशा में,
उन्हें बोध यह था कि
इस दुनिया का रूप यही है
इसके बिना वह-
एक क्षण भी,
टिक नहीं सकती ।
यत्न प्रयास करें कितना हूँ,
लेकिन भूँजा हुआ चना क्या
कभी अंकुरित होता है ?
योगयुक्त पुरुषों के
कर्म निराले होते हैं ।
अष्टधातु से निर्मित
अन्त:करण-क्षेत्र में,
उनकी कोई
प्रतिक्रिया नहीं होती ।
ज्ञान-अग्नि से दग्ध हुए वे
स्पृहा-हरित नीरस होते हैं ।
गाँधीवाद का भूत
और आदर्शवाद की सनक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ये दोनों चीजें
पीछे उनके ऊपर से
उतर गयीं थीं ।
जेल में उन्हें
और भी अनुभव हुए ।
पीछे जो लोग
राजनीतिक नेता बने थे
और बिहार के अनेक जिलों
या समूचे प्रान्त के
कर्ता-धर्ता होने का
दावा करते थे,
जहां राजनीति से-
संबंध था,
वह प्राय: सभी
हजारीबाग
जेल में ही रहते थे ।
जिस प्रकार उत्तर प्रदेश के,
कई सौ-
चुने-चुनाये लोगों से
फैजाबाद-लखनऊ-
और बनारस जेलों में,
साबिका पड़ा था
और उन्होंने,
अनेक अनुभव प्राप्त किये,
ठीक उसी प्रकार बिहार के
कई सौ दोस्तों से
हजारीबाग जेल में
काम पड़ा था,
अत: उन्हें समीप से,
जिस प्रकार
आचरण और
गाँधीवाद के
सिद्धान्तों के-
पालन के बारे में
देखा उन्होंने,
ठीक उसी तरह
उनकी राजनीतिक-
मनोवृति के,
अन्तस्तल की
झाँकी करने का भी
अवसर पाया,
उस मामले में
उनके दिमाग कैसे हैं
उनकी मानसिक-रचना
कैसी है,
उसे जानने का
पूरा मौका मिला वहाँ ।
फलत: उनकी
ऊँची-ऊँची बातों से
वे पड़ सके नहीं धोखे में ।

कुछ ही दिनों के बाद

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूज्यपाद स्वामी जी,
सितम्बर महीने में
जेल से रिहा हुए,
और हजारीबाग से
बस द्वारा कोडरमा होते,
रेल पकड़ कर
पटना तक बहुतों से मिलते,
दूसरे दिन,
अपने बिहटा-आश्रम पहुँचे ।
स्वागत के लिए वहां,
अपार भीड़ जमा थी ।
तब तक सत्याग्रह के
जारी रहने का कारण
जोश बना था ।
रिहाई की खबर पहले से-
थी लोगों को,
अतः उस दिन आश्रम के
बगल में सभा हुई थी ।
किन्तु वे सभा में गये नहीं ।

——

जेल के रहन-सहन की
ओछी राजनीति या
आडंबर प्रपंच की,
सिद्धान्त-हीन
बहुरंगी प्रक्रिया से
वे कुछ दिन तक
कोरी राजनीति से
प्रायः अलग रहे ।
किन्तु अखबारों के द्वारा
उनका राजनीतिक दुनिया से
संबंध बराबर बना रहा ।
इसी बीच,
पण्डित मोतीलाल नेहरू का,
स्वास्थ्य बिगड़ा और-
उनका देहान्त हुआ
उधर गाँधी जी
समझौते में लगे थे,
दिल्ली में जमावड़ा था,
और बातें होती थीं,
गाँधी जी
लार्ड अरविन से,
प्रायः मिलते थे ।
हाँ तो, राम-राम करते रह,
उनइस सौ इकतिस के
चतुर्थांश के
बीतते न बीतते
सरकार से सुलह हो गयी ।
और सभी लोग
जेल से-
बाहर आ गये ।

——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रिटिश हुकूमत ने
जिसे सपनों में भी
न सोचा था,
वह अमित जागृति और
त्याग देख वह
बह पड़ी चक्कर में
फिर तो उसने
उस दलदल से
निकलने का,
अच्छा मौका ढूँढा
ताकि आगे के लिए
तैयारी कर ले
अब की तो अनजाने
और धोखे में
वह पूरी तैयारी,
कर न सकी थी ।
कांगरेस ने किया आक्रमण
और उसने
अपनी रक्षा की ।
आगे उसने
स्वयं आक्रमण करने की
ठानी और
कांगरेस को,
अपनी रक्षा करने की
फिक्र में डालने का
विचार कर लिया ।
इसलिए, साइमन कमीशन के
प्रतिवेदन, को-
बेकार समझ,
गोलमेज सम्मेलन वाला
पँवारा उसने फैलाया,
ताकि उसमें फँसा के,
उसके पर्दे में
उसी बीच में अपनी,
पूरी तैयारी कर ले,
तब एकाएक,
कांगरेस पर छापा मारें ।
कहते हैं, नमक कानून का,
राजनीति से क्या सम्बन्ध ?
फिर भी उसी के चलते,
हमारे देश में
नवजीवन आया ।
लेकिन उसी जाल में फंसकर,
उनइस सौ बत्तिस में हमने,
धोखा भी तो खाया
सरकार ने नमक की,
रियायतें कुछ मानीं
और हमने उसे ही,
अपनी जीत समझ ली ।
यदि यह बात न रहती,
और कोई वास्तविक,
राजनीतिक या आर्थिक,
सवाल को लेकर,
लड़ाई जारी हुई रहती

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तो न उस पर-
सरकार झुकती,
न हम घपले में पड़ते ।
इसलिए,
बुद्धिमानी इसी में है कि,
राजनीति में,
प्रश्न सदा वैसे ही,
सामने लाये जांय,
और उन्हीं को लेकर
किया जाय संघर्ष !
गैर राजनीतिक सवाल
खड़े करके,
लड़ाई कभी न छेड़ी जाय,
उसमें खतरा है ।
उधर परिस्थिति ऐसी थी कि,
जेल से आने के बाद
स्वामी जी का अधिक समय तो,
आश्रम में ही
कार्य में उसी के-
लगता था,
जो समाज के अभ्यूदय का,
श्रेयष्कर सांस्कृतिक कार्य था ।
इसी बीच,
सन् उनइस सौ बत्तिस के,
आते न आते
पुनः दूसरा
सत्याग्रह संग्राम
छिड़ गया और
और जालिम सरकार फिरंगी का,
चलने लगा देश में
ऐसा तेज चक्र वह था कि,
संदेह जरा-सा होते ही,
किसी की भी
खैरियत नहीं थी ।
उन्होंने देखा कि
शायद वे भी
बच न सकें,
और खामखाह सरकार का,
कोप भाजन बनें ।

———-

फलतः आश्रम को भी
निर्मम सरकार हड़प लेगी,
और वे पूरा मूर्ख बनेंगे ।
इसलिए उन्होंने,
आश्रम सौंप दिया औरों को,
और उन्हें पत्रादि लिख भेजा ।
उसके बाद अलग जा बैठे,
कुछ दिनों तक तो
बिहटा गये ही नहीं,
कभी सुल्तानपुर कभी सिमरी,
कभी और जगहों में,
रह किनारे,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शांत चित्त विश्राम किया ।
उस बीच,
कोई उनके पास,
जाता भी न था ।
लेकिन जब फिर,
लौट आश्रम में-
रहने लगे,
और प्रान्त के
सभी नेत पकड़े जा चुके,
कुछ ही बचे थे,
तो उनके पास
संदेश पर संदेश
आने लगे,
कई बार तो लोग सदल-बल,
आकर मिले कि चलिए
और प्रान्त का डिटेक्टरशिप
स्वीकार कीजिए
जिस चीज से,
परम सत्य के ध्याता साधक,
विमल हृदय स्वामीवर
हजारीबाग जेल में
डरते थे,
आखिर वही हुआ,
और उन पर
पड़ने लगा दबाव,
लेकिन उनके मन में,
वैराग्य और क्रोध
इतना ज्यादा था कि
तब तक शांत न हो पाया था ।
अत: हजार कहने पर भी
साफ इन्कार किया उन्होंने,
और नहीं ही शामिल हुए ।
उनका कहना था कि-
''कांगरेस के भीतर
बहुत ही अनाचार-
और धांधली है,
उनके नाम पर
अनेक कुकर्म
किये जाते हैं ।
यद्यपि वे
कट्टर गाँधीवादी थे
तथापि ये शिकायतें तो,
गाँधीवादी,
न होने पर भी,
नैतिक दृष्टिकोण से
उचित ही थीं
मगर गाँधीवादी
होने के कारण
उन्हें विशेष अखरती थीं ।
अत: उन्होंने
विनय निवेदन करनेवाले,
कांगरेस के-
ख्याति प्राप्त नेताओं,
और बहुतेरे

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परम्परा में,
बंधे-नधे-पटु
स्वतंत्रता-सेनानी
सधे देश सेवक लोगों से
कहा खुले शब्दों में यह कि
उस संस्था को
वे जिस प्रकार से चाहें,
चला सकते ही नहीं,
क्योंकि उनकी बातें
वहां कौन सुनता है ?
और जिस संस्था को
अपनी मर्जी के अनुसार
संचालित कर सकें नहीं
क्योंकि रहने का
सहज अर्थ होता है,
उन अनाचारों और
निंद्य कर्मों की
जवाबदेही ले लेना ।
अनजाने,
यह बात हो भी सकती थी,
लेकिन जब उन्होंने
उन बातों को जान लिया तब
कैसे रह सकते थे ?
सत्यनिष्ठ निर्मलचित्त
परम विरागी
जनसेवा अनुरागी
संत विशुद्ध विवेकी यतिवर,

हजार कोशिश करने पर भी
विनय निवेदन-कर्ताओं को,
इस बारे में-
समझा न सके,
उनका अनुभव था कि
सार्वजनिक चरित्र नाम की
एक चीज ऐसी है,
जिसके बिना
कोई भी सार्वजनिक संस्था
चल नहीं सकती
और अपना
समुचित उद्देश्य
पूरा कर सकती नहीं ।
फलत: अगर उसमें
ऐसे लोग बहुत आ जांय
जो इस बड़ी बात से,
इस महान गुण से वंचित हैं,
तो या तो उससे
स्वत: अलग हो जाना,
अथवा उसे भंग कर देना
दो में चीज एक ही,
चाहिए होनी
नहीं तो,
गिरे चरित्र के लोग
दूसरों के नाम पर
मजा उड़ाते ही रहेंगे
इस मामले में,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनुष्य प्रायः
कमजोरियाँ बहुत दिखाता है
परम विरक्त,
महान पुरुष स्वामीवर,
इस प्रसंग में कहते हैं कि,
कभी-कभी उनको भी
इन दुर्बलताओं का
है शिकार होना पड़ा,
मगर उन्होंने सीखा है कि-
कमजोरी दिखाना भी
वैसे ही अपराध बड़ा है ।
आखिर सार्वजनिक सेवकों की,
और बात क्या हो सकती है,
जिसके बल पर लक्ष्यसिद्धि की
मधुर आशा की जाय ?
यदि यह सार्वजनिक सदवृत्ति,
और चरित्र बल ही न रहा,
आज हममें तो,
इसकी बहुत कमी है ।
शायद बहुत दिनों तक,
गुलाम रहनेवाले
दुःख-दुर्दशा-ग्रस्त देशों में,
ऐसा ही होता है ।
इस प्रकार यतिवर ने
पहले ही जो,
संकल्प सम्यक्
कर लिया था,
वह ज्यों-का-त्यों बना रहा,
लाख कोशिश होने पर भी,
वे कांगरेस में
या उसकी लड़ाई में,
सन् उनइस सौ बत्तिस में
शामिल न हुए,
खैर, वे लड़ाई में तो
शामिल न हुए,
लेकिन उसका फल भी
अच्छा ही होनेवाला था
स्थिति को सहज भांपनेवाली
जब बिहार की
बेगानी सरकार कुटिल ने
यह देखा कि
कांगरेस फँसी है
और प्रायः सभी नेता
बंद पड़े हैं जेलों में
तो उसने
एक अनोखी चाल चली ।
उसने अपने मित्र
जमींदारों की
पीठ ठोंक कर
खड़ा किया कि
यही मौका है,
बिहार राज्य में
अपना नेतृत्व
और अपनी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धाक जमा लें
खाली है मैदान !
अत: एक नया दल
कायम करके
उसके द्वारा अपनी प्रभुता
कायम करें जमावें ।
पटने में तो
सहज सलाह हुई ही
जाड़ा आते-न-आते
रांची में भी
सभी बड़े जमींदार और
सरकार के पिट्ठू
जमा हुए ।
वहीं गवर्नर से,
गुपचुप,
सलाह मशविरा करके
'यूनाइटेड पार्टी' की-
स्थापना की
हुई घोषणा
और प्रचार यह किया गया कि
इस पार्टी में
जमींदार-किसान
पूँजीपति-मजदूर
हिन्दू-मुसलिम-ईसाई
सभी शामिल हैं ।
इसका सीधा मतलब
था यह कि
कांगरेस को भी
नीचा दिखाया जाय ।
मेघाछन्न गगन का
था वह दृश्य अलौकिक
अनुपम
अति विकराल भयावह
कुछ-कुछ
काले बादल
उमड़–घुमड़–कर
विस्तृत रंगमंच पर
मौज-मस्त हो
नाना नृत्य दिखाते
टकराते थे,
कभी काल उनके गर्जन से
काँप कलेजा मुँह को आता
जब कि सहसा
विद्युत शक्ति कौंध जाती थी ।
कलाकार पटु पवनदेव की
कला-चातुरी
कभी देखते ही बनती थी,
जब कि वे-
मन-चित्त बटोरकर,
लिए चित्र लेखा हाथों में,
रवि किरणों का योगदान या,
चित्र विचित्र विविध बहुरंगी,
रचि उरेह प्रस्तुत कर
दस दिग्पालों की सेवा में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राकृत छवि को बढ़ा रहे थे,
भला कहें तो,
नैसर्गिक विधान के
गूढ़ मर्म को
समझ सका कब कौन ?
सुधी संत मुनी ज्ञानी
बैठ महासागर के तट पर
कभी ध्यान में लीन मौन हैं
आँखें कभी खोलकर
गाढ़ नीलिमावाली
क्रियाशील सागर लहरों का
दृष्य मनोरम प्राणद
बहु विमुग्धकारी शुभ
देख रहे हैं ।
है सागर रत्नाकर
इस अनंत के भीतर
रत्न अमोल असंख्य पड़े हैं,
जिनका पाना बड़ा कठिन है
यद्यपि ऊपर जल खारा है,
किन्तु अनुभवी गोताखोर
लगनशील अनुरागी
साहस धैर्य परिश्रम के बल,
मूँगा-मोती
कांतिमान अति
पा लेता है ।
विजय सदा ही
त्याग तपस्या से मिलती है,

सत्यान्वेषी यतिवर
यत्नशील थे,
उन्हें सदा ही,
ध्यान सत्य का ही था,
वे तो सबके परम प्रकाशक,
नारायण के
विभुव्यापक सर्वात्म रूप का
दर्शन करना चाह रहे थे ।
मानसरोवर वासी
कुशल मनीषी संत
कमलों के सुगन्ध ले
अह्लादित-चित,
मोती चूँगा करते,
किन्तु वहीं पर
उज्ज्वल रूप बनाये
बकुला ध्यान लगाये
ढूँढा करता
सदा और कुछ !
थी प्रछन्न नीति गाँधी की
वे नेता थे
मध्यमवर्गी धनपतियों के
सामन्तों पूँजिपतियों के ।
असहयोग आन्दोलन चाहे-
गूढ़ नमक सत्याग्रह
थे हो रहे देशव्यापी जब
उग्र विशद जनक्रान्ति रूप धर,
चिन्तक चतुर नीतिपटु नायक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुशल कार्य संचालक
जागरूक प्रहरी समाज के
सधे देश-सेवक प्रबुद्ध अति
गाँधी ने रहस्य को समझा,
इसलिए उन्होंने
स्वतंत्रता के छिड़े युद्ध की
बागडोर को
अपने हाथों में ले समय-समय पर
उभड़े आन्दोलन को हिंसा और
अहिंसावाला
जटिल सवाल उठाकर,
उसी बहाने रोका।
जागे हुए देश के शूरवीर
तरुणों की,
दलित किसानों-मजदूरों की
जगी लड़ाकू मनोवृत्ति को
घुमा-फिराकर तोड़ा,
करुण कहानी,
शोषित पीड़ित जनता,
भूखे-नंगे दीन किसानों,
एवं वंचित मजदूरों की
ध्यान लगाकर
कभी उन्होंने सुना नहीं,
जाना-सुना अगर जो
सदा टाट पर रेशम की
बखिया की,
धर्माधर्म विचारा
किया रामधुन अथवा
चुप हो रहे पैंतरा बदला।

भारत देश किसानों का
उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम
हिमगिरि से सागर तक, कामरूप
उस सुदूर कश्मीर राज्य तक
फैले हुए अनोखे
इस कमनीय राष्ट्र की
प्रिय विशाल काया के,
ये किसान ही मेरुदण्ड हैं।
इनकी जहाँ उपेक्षा होगी
उस समाज का
अभ्यूदय कब होगा ?
कैसे होंगे वहां प्रगति के कार्य ?
जनता को सुख शांति मिलेगी
शोषक शोषित भेद मिटेगा
मानव यही विवेक बुद्धि से
देव बनेगा
बसुधा ही साकेत ?
जन-हित चिन्तक बुद्धि
विशारद नूतन युग का
निपुन विचारक
ऐसी ही कुछ बातें
मन में सोच विचार रहा था

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसे उलझे बहुतेरे प्रश्नों पर
क्रान्ति-दूत उस यती ने
गाँधी जी से मिलकर
समय-समय पर
अति महत्व की-कुछ बातें कीं,
दु:खी किसानों मजदूरों की
जटिल समस्या
उनके सन्मुख पेश किया
लेकिन समुचित समाधान
जब हुआ नहीं कुछ,
तथा देश के प्रहरी
कतिपय दिग्गज नेताओं की
और संत सेनापति गाँधी जी की
उदासीनता झलकी तब कुछ
सावधान हो उसने
अपने चरण घुमाये
दिशा बदलकर
नये मार्ग की ओर !
इस प्रकार कुछ चलकर
महामनीषी परिव्राजक के बढ़े
डेग जा पहुँचे
पिछड़े हुए उपेक्षित
उन गाँवों में,
जहाँ किसान युगों से
मानवता की सेवा करते
दु:ख-संकट सहते रहते हैं
और लोक हितकारी,
मृदुल भावना लिये हृदय में,
गेहूँ बासमती उपजाते
दूध-दही की नदी बहाते
फल-फूलों का बाग उगाते
लेकिन अपने
मँडुवा-कोंदो-खेसारी खा
समय काटते वैसे डहके
दबे-पिसाये
आहें भरते लोर बहाये
कोप समझ भगवान भाग्य का,
सिर धुनते अकुलाये बिवस
किसानों की दुर्गति लख
हृदय विदीर्ण हुआ यतिवर का
फलत: करुणा प्रेरित
उन्होंने निष्ठा से
उनकी ही सेवा का
कठिन महाव्रत ठाना, क्योंकि
यह सभी वेदों का
है पुनीत तात्विक उपदेश,
उपनिषदों का सार सुधा-रस
गीता का उपदेश अमोल ।
उस महर्षिवर वेदव्यास की,
श्री यतीन्द्र कुल-तिलक
दिव्यदृक्,
आद्य शंकराचार्य सुधी की
मधुर दिव्य वाणी की-
'पहुँचे योगी यती लोग भी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहज लोक-संग्रह का
सम्यक् दृष्टिकोण अपनाकर
निष्ठा और लगन से
कर्म किया करते हैं ।
सुधी कर्म कौशल का
बस आदर्श यही था
क्रान्तिदूत उस-परिव्राजक के
सम्मुख इसलिए तो
तीर्थ धाम गाँवों को मान
जीर्ण-शीर्ण सी झोपड़ियों में
अर्द्ध-भग्न खपरैल घरों में
चुप हो रहे प्रतिष्ठित विस्मृत
उन किसान देवों की
चटपट उसने सुध ली ।
विहित अर्चना आराधन से
पूजा-प्रणति विवेक विनय से
उनको राधा-बोधा
जादू फूँक जगाया
सजग किया संगठित बनाया,
पहले-पहल बिहार राज्य में
पटना के पश्चिम में
बनने लगीं किसान सभाएं
निद्रा-तंद्रा त्याग युक्त हो
जाग उठे किसान
'उठ ! बाँध कमर क्यों डरता है,
फिर देख तूँ क्या-क्या करता है'
यही यती का नारा था

गाँव-गाँव कोने-कोने में
अरुण ध्वजा-धर युवकों का
जो अति ही प्यारा था ।
ऐसे उस यतिवर का
गैरिक वसन अनूठा
नूतन युग का
शुभ संदेश सुनानेवाला
नव प्रभात की
अरुण ज्योति फैलानेवाला
त्याग तपस्या कर्म योग का
गुणातीत प्रज्ञा का द्योतक
ज्ञान-अग्नि में-
तपे निखिल कर्मों का
सदा दहकता अंगारा था ।
श्रीगणेश पटने से करके
पूरे बिहार के
सभी जिलों में
आगे-पीछे
बनीं किसान सभाएं
होते रहे बहुत जगहों में
उनके अधिवेशन सम्मेलन,
इसी बीच गुल खिला अचानक
ठेठ राजधानी पटने में ।
चतुर पैंतराबाज़ खेलाड़ी
जमींदार लोगों की
अपने वर्ग
स्वार्थ की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्यक रक्षा हेतु, पहले से ही
सभा संगठित हो चलती थी ।
दरभंगा के राजा
सभाध्यक्ष थे उनके मंत्री राय बहादुर
चतुर श्यामनन्दन सहाय थे ।
दिल्ली से पटने तक
अंग्रेजी शासन-विधान था
उसकी ही छाया में
थी पटने में
विधि-विधान निर्मातृ-संस्था
व्यवस्थापिका-परिषद्,
पटु प्रहरी सामंतवाद के,
ठोस शक्तिधर नायक
अगली कतार के,
जमींदार लोगों ने
गुप्त मंत्रणा के बल
रच कुचक्र कुछ
खेतों-खलिहानों के,
आहर-पोखर बाग-बगीचों-
गैरमजरुआ भूखण्डों के
कतिपय अधिकारों से
वंचित करना चाहा
मूक निरीह किसान वर्ग को,
बस ऐसे ही
गूढ़ कुटिल मंशा कुछ
उर में रखकर
किसी सभासद् द्वारा

एक विधेयक
छल प्रपंचमय
रखा गया परिषद में ।
तब विधान परिषद में
अंग्रेजी शासन के
कुशल विदेशी प्रतिनिधियों ने
पेश विधेयक
रोक ठोंककर
उस पर सम्मति लेना चाहा
कृषक वर्ग की प्रतिनिधि संस्था
गठित किसान-सभा के
हित-संरक्षक प्रतिनिधियों की,
उसी समय अवसर पा
गुप्त मंत्रणा हुई कहीं कुछ
और सोचकर
जमींदार कला लोगों ने
वर्ग-हितों के लाभ-लोभ में
रची बनाई
गूढ़ पोलवाली उस
चोखी और अनोखी
'यूनाइटेड-पार्टी' को
शीघ्र सामने
लाकर खड़ा किया,
जिसमें उसके नीति-विशारद
पक्षधरों के साथ
नाममात्र का
कोई गुड्डा प्रतिनिधि राख

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसान-सभा का
काम बना लेने की
रची योजना के अनुसार
बैठक गई बुलाई
नगद राजधानी पटने में-
बस अब क्या था
पौ बारह की बात सोचकर
लाला गुरु सहाय अधिवक्ता
बना शिखंडी
लाये गये समर में
आगे था षड़यंत्र यही कि
चट से चुपके जुटकर
उस बहुचर्चित
पेश विधेयक से सम्बन्धित
अनुमोदन का,
रचा जाय कुछ स्वांग,
बस ऐसे ही काम बनेगा
हम निश्चय ही
सफल मनोरथ होंगे,
किन्तु धरा के रंगमंच की
गति है बड़ी निराली
यती विलक्षण
स्वामी सहजानन्द सजग थे,
वे अपने बिहटा आश्रम में बैठ
बिना दूरदर्शन के
कलाकार लोगों का
अभिनय देख रहे थे ।

उनका भी था नाम
सभा की कार्य समिति में
किन्तु निरा फरजी था अत:
क्षद्मरूपा उस
गोपनीय बैठक की
नहीं सूचना कोई
भेजी गई उन्हें थी,
उधर धुरंधर सामन्तों ने
धूल झोंक आँखों में
दुरभि भावना से अनुप्राणित
जो बैठक आयोजित की थी
किसी तरह से उसकी बात
कहीं से फूटी,
'मुँह से निकल चढ़ी कोठे
पर', इस जनश्रुति की
परिचित राह पकड़ वह
घबड़ाई-सी
सहसा बिहटा आश्रम पहुँची,
चुपके-छिपके निकली
भद्र असूर्यम्पश्या गई
संत आश्रम में ।
मानवता की मर्यादा की
लुटती लाज बचाने,
दु:खी हृदय का
सहज करुण-क्रन्दन सुनि
मांथा ठनका यती का
कड़क उठा वह,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किन्तु किसानों का हित सोच
चेतन चित में
आग और अनुराग छिपाये
बिहटा से चल पटना पहुँचे ।
दांव-पेंच की गुप्त सभा में
जैसे ही पहुँचा मृगराज
परदा चीर गहन वन भीतर
कोलाहल मच गया भयंकर,
भगे सियार मृगा भी सरके
छनक-छटक कर,
आँखें तनिक बचाकर,
मनुज सोचता
और कहीं कुछ
प्रकृति सोचती और
कहीं बैठे पर्दे के पीछे
बना सूत्रधर कोई,
सहज ठने अभिनय के
दृश्य बदल देता है ।

जुटे गुलाब बाग में सब थे
पूरी चहल-पहल थी,
पर कुछ क्षण में
पाशा पलटा,
दृश्य दूसरा दिया दिखाई
सभी लोग घबड़ाये ।

"यह क्या हुआ कहाँ से
आया यह संन्यासी, घर में
आग लगानेवाला ?"
बनी बात बिगड़ी अब,
जमींदार लोगों के,
मंसूबे पर-पानी फिरा
हुआ गुड़-गोबर,
पुरश्चरण का कार्य आसुरी
हुआ भंग, भ्रम टूटा ।
सभा बुलाई
जमींदार लोगों ने
प्राय: सब सदस्य उन्हीं के
इतने पर भी
जो प्रस्ताव यती ने
रखा वहाँ पर
पेश विधेयक के विरोध में
वह बेखटक के
स्वीकृत हुआ सर्व सम्मति से ।

यही नहीं उस जन-हित-घाती,
कुटिल विधेयक के विरोध में
तत्क्षण मुस्तैदी से
दौड़-धूप सारे बिहार में
पूरा एक महीना भर तक
गाँवों में किसान लोगों की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दो सौ कई सभाएं
संन्यासी ने सम्बोधित की ।
शंखपाणि का
व्यापक सिंहनाद सुन जागे
सोये हुए किसान
कान खड़े कर जागे
सरकारी अधिकारी
चकाचौंध की मारी अंधी
जाग उठी बहरी सरकार ।
इस प्रकार से धीरे-धीरे
बढ़ा संगठन
बनी किसान-सभाएं सगरे
उत्तर से दक्षिण बिहार तक
प्राय: सभी जिलों में ।
आरा पटना गया मुंगेर,
छपरा हाजीपुर चंपारन
भागलपुर दुमका रांची में
समय-समय से
हुए किसानों के सम्मेलन ।

—-

अभी देश में अंग्रेजों का
फौलादी शासन था,
जनता दबी कराह रह थी
शोषण उत्पीड़न का
वही दौर जारी था ।

इसीलिए राष्ट्रीय-मुक्ति का
जो संग्राम छिड़ा था
उसमें पूरा योगदान कर
नेता नये तरुण उत्साहित शूर
शक्तिधर त्यागी
उसको सफल बनाना चाह रहे थे ।
किन्तु पुराने नायक सधे सिद्ध संरक्ष
मध्यमवर्गी निहित स्वार्थ के,
सुलह-सन्धि की,
समझौते की, मंजी तिकड़मी
मनोवृत्ति रख, सौदा रह-रह
करते थे ।
ऐसी जटिल परिस्थिति
कायी-छायी पृष्ठभूमि में
कार्य-नीति रणनीति कारगर
निर्धारित करने में ।
नये-पुराने नेताओं में
अन्तर्द्वन्द्व चला करता था,
मेधावी पटु नीति विशारद
युगद्रष्टा यतिवर ने
बहुत समय पहले ही नेताओं की
ऐसी शतरंजी चालों को
समझ लिया था ।
वे कहते बतलाते थे कि,
सौदेबाजी सुलह-सन्धि से,
जो स्वतंत्रता आवेगी,
वह अवश्य ही नकली होगी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसमें धोखा होगा ।
नेता-नायक,
मालदार-पूँजीपति,
मध्यमवर्गी लोग
दलित किसानों मजदूरों को
चकमा देकर
शोषक-शासक-दल से
मिले-जुले सब कार्य करेंगे,
शासन-सत्ता हथियावेंगे
इस प्रकार वे,
आजादी की कामधेनु दूहेंगे
उसका ताजा दूध पियेंगे,
शेष औंट खौलाकर
ऊपर वाली मधुर मलाई
अपने आप उड़ावेंगे,
ऊँचे-ऊँचे महलों में रह
मेवा-मक्खन,
काजू-किसमिस
सुरस फलों का
सजगर भोग लगावेंगे
तत्वहीन वह
बचा दूध-मट्ठा भी
तुमको दुर्लभ होगा,
तुम किसान-मजदूर गाँव के
बहुत समय तक
तरह-तरह के
शोषण-उत्पीड़न के
बन शिकार पछताओगे ।
इसीलिए उन्होंने
स्वतंत्रता के संघर्षों में
जुटकर लड़ते रहने पर भी
सदा किसान हितों पर
अपनी पैनी दृष्टि रखकर
कार्यनीति निश्चित की
शोषित-दलित किसानों को ही
केन्द्री-बिन्दु मानकर
सह-संगठन बनाया उनका
अखिल भारतीय किसान-सभा,
पहली बार सभा का
वह संगठन-स्वरूप अनोखा,
बनकर खड़ा हुआ था,
उस लखनऊ नगर में
उनइस सौ छत्तिस में कांगरेस-
अधिवेशन के ही
शुभ अवसर पर ।
वहां किसानों के प्रतिनिधि बन,
इन्दुलाल याज्ञिक आये थे
पश्चिम के गुजरात प्रान्त से,
दक्षिण आन्ध्र देश के प्रतिनिधि
प्रोफेसर रंगा थे
वे दोनों ही यती के प्रमुख सहायक,
बने किसान-सभा के
शुभ संगठन-कार्य में,
इस प्रकार सनमति से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी सहजानन्द वहाँ पर
चुने गये अध्यक्ष,
मंत्री बने सर्व सम्मति से ।
कार्यदक्ष प्रोफेसर रंगा
जनहित का विचार कर
निर्भय हँसता
कालकूट का पीनेवाला
शिव-स्वरूप वह यतिवर
कठिन महाव्रत धारी
अनुशासन संयम का
दंड लिए हाथों में
निष्ठा और लगन से
अथक परिश्रम करता
दौड़ लगाता रहा निरन्तर
सभी प्रमुख प्रान्तों में,
बहुत सभाएं सम्बोधित कर
शोषित दलित किसान वर्ग को
नयी चेतना फूँक जगाता है
सीमा प्रान्त सिंध पंजाब
महाराष्ट्र गुजरात, दूर के
तमिलनाड, आन्ध्र केरल में
बनी किसान सभाएं ।
पूरे भारत भर की
नव संगठित किसान सभा के
अगले दो अधिवेशन
उनइस सौ सैंतिस-अड़तिस में,
फैजपुर और हरिपुरा में
कांगरेस के महाधिवेशन के
अवसर पर
हुए सफलता से सम्पन्न ।
पहले-पहल फैजपुर वाले
कांगरेस-अधिवेशन में भी
यती के ही प्रयास से
और राष्ट्रपति या अध्यक्ष,
पण्डित नेहरू की सहमति से
कुछ मौलिक किसान-मांगों का
एक ऐतिहासिक प्रस्ताव
विधिवत् मंजूर हुआ था ।

भारत सुधी संत-मुनियों की
तपोभूमि है,
कर्म-भूमि है,
सजग शूर वीरों की,
जो कर्तव्यपरायण
कुशल कर्म योग हैं
वही यहाँ का
सफल मार्ग-दर्शक बन मूक
बनी पिछड़ी जनता को
सुख-सुविधा के सुगम
मार्ग दिखलाकर
ठीक लक्ष्य पर बेखटके
पहुँचा सकता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वतंत्रता के लिए देश ने
जो बलिदान किये थे उसका
फल क्या मिला अभी था ?

दमन चक्र शासन का
चलता ही रहता था
लोग दु:खी आतंक ग्रस्त थे
देश कांच की भट्ठी बनकर
नित्य निरन्तर सुलग रहा था
अग्नि शिखाएं
उर अन्तर में
धुँधुवाती रहती थीं
तरुण वर्ग अति क्षुब्ध
विकल था
ऊपरवाले नेतानायक,
हो संघर्ष विमुख घबड़ाये,
संधि-सुलह की ताक-टोह में
व्यग्र राह कुछ ढूँढ रहे थे
उलझी हुई परिस्थिति वैसी
वैसे उग्र वायुमण्डल में
कूटनीति के कुशल खेलाड़ी
अंग्रेजों ने
कांगरेस के सम्मुख
एक नया प्रस्ताव पेशकर
आजादी का
सब्जबाग दिखलाया
कंठीमालाधारी
बगुला भगत ध्यान में बैठे
नेताओं की
लपकी जीभ
देख हरियाली
मचल उठा मन उनका
आखिर ध्यान भंगकर
चोंच गड़ा ही दिया उन्होंने
सिधरी पोठिया खातिर
उसका यह परिणाम हुआ कि
जन-निर्वाचन हुआ देश में,
नेताओं को
सनद साधुता तप-पूजा की
थी मिल चुकी बहुत पहले ही,
बहुमत के बल
आठ प्रमुख प्रान्तों में
बनी कांगरेसी सरकारें,
प्रबल लोकमत पानेवाली
नयी लोकतांत्रिक सरकारें
चढ़ी कसौटी पर अब
होने लगी परीक्षा उनकी,
देख सुनहला मौका
सामन्तों पूँजीपतियों ने
स्वार्थ-लोभ में आतुर होकर
लाभ उठाने की कोशिश की
रह-रह उनके

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तरह-तरह के
दाँव-पेंचवाले हथकण्डे
होने लगे देश में,
राजनीति की बागडोर वे
अपने हाथों में ले
बीड़ा मधुर बजाते
नेताओं की
नागनथैया करके
उनको लगे घुमाने,
उधर दूसरी ओर देश की
तरुण शक्तियां
युग की गति-विधि का विचार कर
सुख-सुविधा के मधुर स्वप्न को
मूर्तिमान करने को
नई नीति उत्साह नया ले
एकत्रित होने मिलने की
कोशिश करने लगीं समय से,
हवा मन्द कुछ थी अवश्य ही
लेकिन तब तक
चाँद दूज का टेढ़ा-पतला
दिखा सामने
पीपल तरु की
श्यामल घनी-शिखा के ऊपर,
थोड़ी चहल-पहल थी
उत्सुकता वश लोग हजारों
नेत्र बिछाये
शुभ-दर्शन के लिए खड़े थे,

नक्षत्रों से सहज अलंकृत
नीले व्योम बितान रम्य की
सुषमा मृदुल मन्द मुसकाती
मंत्र मुग्ध करनेवाली थी,
इसी समय पूरब से उगता
अन्तरिक्ष में
एक निराला
'धूमकेतू अति उज्ज्वल
दिया दिखाई
आकर्षण का केन्द्र-बिन्दु बन,
लौकिक संज्ञा उसको
दी प्रबुद्ध लोगों ने
बोस सुभाषचन्द्र की,
नैसर्गिक अनुदान ध्यान से
अपनी अनुपम दिव्य कान्ति से
नूतन युगालोक के
स्वाभाविक प्रभाव से,
उसने कांगरेस के
भव्य हरिपुरा अधिवेशन का
गरिमामय अध्यक्ष पदोत्तम
प्रोत्साहित हो ग्रहण किया,
राजनीति की बागडोर को
तरुण क्रान्तिकारी हाथों में
जाते देख सशंकित
कांगरेस के
मध्यमवर्गी
दकियानूसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नेतादल घबड़ाये
गाँधी भी घबड़ाये,
किन्तु किसानों-मजदूरों में
नयी शक्ति नवजीवन आया,
वे रोटी-कपड़े की
शिक्षा और दवा-दारू की
सुख-सुविधा की
अपनी मौलिक मांगें लेकर
आगे बढ़े सजग हो
क्रान्तिदूत यतिवर ने
उनको राह दिखाई
उसने ही हरिपुरा पहँचकर
इन्दुलाल याज्ञिक का
सात्विक योगदान पा
कांगरेस के रम्य सुसज्जित
बिट्ठलनगर महामेलां में
भव्य किसान-प्रदर्शन
आयोजित कर
उनकी मौलिक माँगें
नेताओं के सम्मुख
अधिवेशन में पेश किया
उससे थोड़ा पहले
जगे बिहार राज्य में सगरे
उनइस सौं सैंतिस में
सत्य न्याय के प्ररहरी
महामनीषी
अग्रदूत जनयुग के
अतुल शक्तिधर शूर लड़ाका
उस संन्यासी विकट विलक्षण
धीर प्रज्ञ के ही प्रयास से,
सभी विधान-सभा क्षेत्र में
एक साथ ही
मास नवम्बर की उनीसवीं
सुविधावाली तिथि को
हुए किसान प्रदर्शन
सहज सैकड़ों जगह शान से
जिनमें कि किसान मांगों को
था दुहराया गया सुदृढ़ हो ।
आगे चलकर हुआ और कुछ,
जमींदार लोगों ने
अपने सुदृढ़ दुर्ग की
सजी राजधानी पटने में
सेवागाँव सदाकत्-आश्रम
उभय सिद्ध पीठों के
संतों की आसीस प्राप्त कर
पूर्व सुचिंतित
मँजी योजना के अनुसार
नव-निर्वाचित
कांगरेसी मंत्रीमण्डल से
हिलमिलकर धीरे से
अपने वर्ग-स्वार्थ में
समझौता सम्पन्न किया
भला कहें तो
जिन दुर्दान्त जमींदारों ने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कांगरेस को
धखियाया-ठुकराया
उसे गिराने की कोशिश की
आज उन्हीं से
जनहित के प्रतिकूल
अमिषपूर्ण मसौदा ?
जननायक यतीन्द्र को,
कुटिल कार्य यह
कैसे नहीं अखरता ?
अत: समय से
उस समझौते के विरोध में
उनके ही प्रयास से
पाटलिपुत्र राजधानी में
उनइस सौ अड़तिस में
मई मास में
हुआ विराट किसान-प्रदर्शन,
इसी तरह का एक दूसरा
सफल प्रदर्शन
हुआ उसी पटने में
ठीक विधान-सभा के सम्मुख
कुटिल किसान विरोधी
खड़ी-फसल जब्ती कानून-
विकट, बनाने के विरोध में,
इस प्रकार से
सदा किसानों की सेवा में
निष्ठापूर्वक
लगा रहा वह स्वामी,

अथक परिश्रम त्याग तितिक्षा
लगनधीरता
साहस और सच्चाई के बल
पहुँच देश के हर कोने में
उसने ठोस किसान-सभाएं
खड़ी कराई,
क्रियाशील रह नित्य निरन्तर
.बढ़ती गई सभा वह
नव विकास-
नवयुग की ओर
आगे चल उसका अधिवेशन
बलिदानी बंगाल प्रान्त के
पूर्वी कोना कोमिल्ला में
सन् अडतिस के मई मास में
उसी कुशल जननायक
यती की देखरेख में
विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ,
यती के ही पुरुषार्थ विलक्षण,
अतुल त्याग तप-बल से
प्रज्ञाचक्षु तथागत वाला
जागा हुआ बिहार प्रान्त ही
नई किसान-क्रान्ति का
दिव्य ज्योतिमय केन्द्र बना,
गढ़ने में इतिहास देश का
इस बिहार की
मुख्य भूमिका रही सदा है
उसमें भी देखें तो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गया की तपोभूमि शुभ
श्रमण शिरोमणि बुद्धिदेव की
बोध विजय की भूमि
शोध-बोध में
परिवर्तन में
विनयशील-शिक्षा में
मानवता की
मर्यादा रक्षा में
अपना ठोस काम रखती है ।
आगे चलकर
भारतीय संस्कृति के
उसी अनोखे
तीर्थधाम में
महासभा का
गरिमामय चौथा अधिवेशन
सुधी समाजवादी आचार्य
पंडित प्रवर नरेन्द्र देव के
कुशल मार्ग दर्शन में
धूमधाम से
मर्यादा के साथ
मनोनुकूल सम्पन्न हुआ ।
तपे तपाये
इन्दुलाल याज्ञिक अनुरागी
पटु प्रोफेसर रंगा
कर्मठ जय प्रकाश नारायण
अधिवेशन में बटुरे
सब किसान-नेता-गण

गया जिले के
शोषित दलित किसान वर्ग की
करुण-कहानी सुनकर
हुए बहुत मर्माहत
परम विरागी
तपी निराले
अद्भुत जनक किसान-क्रान्ति के
दिव्य दूत नवयुग के
ज्योति पुंज यतिवर ने
वहीं सभा के रंगमंच से
दबे पिसाये उन लोगों को
बहुत खुले शब्दों में
निर्भय हो ललकारा था कि-
'उठो किसानों जागो !
भय प्रमाद को त्यागो !!
दिन लद गये गुलामी के,
बेठ-बेगारी जोर-जुल्म के,
शोषण और सलामी के,
समय शेष भूस्वामी के,
उलटी गंगा बही बहुत दिन,
इसको सीधी राह धराओ,
बदली जग की हवा,
यहाँ अब रही न मेरी-तेरी ।
कमाने वाला खायेगा-
इसके चलते जो कुछ हो ।'

—-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शंकर की समाधि जब टूटी,
डमरू बजा जोर से,
हर-हर महादेव का नारा
लगा गूँजने चारों ओर ।
तब सामन्त और पूँजीपति,
चौकन्ना हो
पूजा की थाली में
धूप-दीप नैवेद्य मधुर कुछ
साँज-ढाँक कर
लक्ष्मी नारायण के
मणिकांचन से
सजे सुशोभित
मन्दिर में जा पहुँचे,
प्रधी पुजारी
संतजनों के
चरण पखारा
पूजा अर्चा किया प्रेम से
लोर बहाते भरे कंठ से
विनय सुनाया
किया दंडवत
आठो अंग सहित
धरती पर पड़कर ।
कुछ दिन समय गया जब बीत
श्री बैकुण्ठनाथ के
पाकर कुछ संकेत
सुधी देवगण बटुरे ।
हुई मंत्रणा गोपनीय तब
सत्य-अहिंसा शान्ति-धर्म की
मर्यादा रक्षा के हेतु ।

——

सन् उनइस सौ उनतालिस के
मार्च मास में
पश्चिम-दक्षिण देश
राज्य महाकोशल के
नैसर्गिक सौन्दर्य सुशोभित
ग्राम्य-क्षेत्र त्रिपुरी में
कांगरेस का बहु चर्चित-
अधिवेशन,
परम्परागत राजनीति से
नियत समय पर
भारी चहल-पहल के बीच
नये बसाये
विष्णु दत्त नगर में
नाटकीय गतिविधि से
शुरू और सम्पन्न हुआ,
राजनीति के
कूट छद्म कार्यों की
अकथ कहानी
कैसे कही बताई जाय ?
कांगरेस के दिग्गज
मठाधीश आचार्य जनों की
शतरंजी चालों के,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और कठिन उद्योग यत्न के,
बावजूद
तरुण तपस्वी नेता
वीराग्रणी सुभाषचन्द्र फिर
चुने गये अध्यक्ष-
किन्तु उधर उस कांगरेस की
अधिनायकी प्रकृति की
कार्यसमिति ने
लगातार ही
उन्हें दूसरी बार बनाना
नापसंदकर
आन्ध्र देश के
गाँधीवादी नेता
डॉक्टर पट्टाभि-
सीता रमैया को
उनके विरोध में खड़ा किया ।
लाख कोशिशें हुईं मगर तो
हार गये पट्टाभिरमैया ।
तब प्रतिक्रिया स्वरूप
झनके ठनके नेता लोग
उनको पैरों के नीचे से,
धरा खिसकती पड़ी दिखाई,
इतने में ही
उसी संक्रमण काल विकट में
शेषनाग ने करवट बदली
निद्रा टूटी विष्णु देव की,
कमल नेत्र उनके तब
खुले सहज ही
और जम्हाई आई ।
बस क्या था,
चँवर डोलाने लगीं लक्ष्मी
बाँयें पार्श्व खड़ी हो,
पुष्प वृष्टि करते अनुचर गण
शंख बजाने लगे जोर से,
गाँधी ने वर्धा आश्रम से,
अपनी दिव्य संत वाणी में,
घोषित किया उसी क्षण यह कि
'श्री पट्टाभिरमैया-
की यह हार असल में
मेरी निजी हार है'
'रघुपति राघव की' आकर्षक
मधुर रामधुन
नित्य लगानेवाले
विनयशील के प्रथी पुजारी
सत्य अहिंसा के प्रति पादक
कर्म योग के साधक
कुशल संत की
असमय ऐसी वाणी सुनकर
भेदभरी बेतुकी असंगत-
भारी हलचल मची चतुर्दिक
फलतः बुद्धि भेद का
हो शिकार कुछ
लोग बहुत से भटके,
कैसे नहीं भला तब

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आजादी का
द्रुति गति से चलता रथ
कटुता-कलह-फूट के
उस दल-दल में अँटके-
लोक तंत्र की
सदा दुहाई देनेवाले
विज्ञ पुरुष का
कौतुक भरा कदम यह
तानाशाही का ही
रूपान्तर में कुटिल कार्य था,
काल कर्म स्वभाव गुण प्रेरित,
जब माया की लीला थी यह,
और दूसरा होता क्या तब ?
झंडी हरी देखकर
राह परिष्कृत का संकेत,
मिला सहज ही
सप्त महारथियों को,
पण्डित नेहरू भी झुँझलाये
और अहं के
स्वाभाविक विस्फोट-वेग में
रुष्ट क्षुब्ध हो
कांगरेस की कार्यसमिति से
त्याग-पत्र लिख भेजा
संस्था के अध्यक्ष
राष्ट्र नायक के पास
उधर दक्ष सरदार पटेल
दल के नायक
लौह पुरुष, ने
सभी सदस्यों नेताओं को
एक साथ ले शस्त्र संभाला,
और तुरंत ही
दंभ दर्प के मारे
त्याग-पत्र दे दिया समिति से,
बहुत अखरनेवाली
'उस पट्टाभि-पराजय
घातक के प्रतिपाद स्वरूप,
उसका यह परिणाम हुआ कि
बहुत पुराना
सुदृढ़ संगठन कांगरेस का,
सूरतवाले
उग्र कलह मतभेदी विभाजन
विकट उलझनों अवरोधों के
बत्तिस वर्षों के पश्चात्
पुनः बँटा छितराया
और देश में
पूँजीवादी
समाचार पत्रों के
स्वार्थ भरे दूषित प्रचार से
जहाँ-तहाँ के
कांगरेस के
दलीय कार्यकर्ता कुछ
भ्रमोन्माद में पड़े भटकते
अपना बुद्धि विवेक गँवाकर
संस्था और समाज विरोधी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कतिपय विधि व्यवहार अटपटे
करते देखे गये तनिक भर-
उधर समय से
राजनीति के चुने धुरंधर
महारथी बटुराकर
सोच नई रणनीति कारगर
चक्रव्यूह की
रचना करने लगे तुरन्त-
विहित घड़ी अवसर पर
समर भूमि त्रिपुरी में
रथ पर चढ़कर राजनीति के
सभी लोग बटुराये
गोविन्द बल्लभ पन्त
बने शिखंडी
रथारूढ़ हो
समरांगण में
सन्मुख आये पहले ।
दक्षिणपंथी नेताओं ने
एक गूढ़ प्रस्ताव रचा तब
और उन्हीं के हाथों
अधिवेशन में पेश कराया,
वही विकराल पंत-प्रस्ताव
विषमय परिस्थिति में
त्रिपुरी में-
रखा गया था,
जबकि प्रबल लोकमत
धर्म न्यायमत के बल
चुने गये अध्यक्ष
वीराग्रणी सुभाष चन्द्र वे
हो बिमार भयंकर
पड़े विस्तरे पर थे ।
दशा बहुत ही सोचनीय थी
इतने पर भी
सत्य-अहिंसा-न्याय-शान्ति के
रक्षक प्रहरी
भक्त पुजारी पूरे,
मानवता की
नित्य दुहाई देनेवाले
उस विपत्ति की विषम घड़ी में
दु:ख-पीड़ा से
द्रवित तनिक भी हुए नहीं,
घृणित पन्त-प्रस्ताव
हाथों की हथकड़ी और
पैरों की बेड़ी का
रूप दूसरा बन आया था,
प्रगति विरोधी
दक्षिणपंथी कूटनीति के
बरबस ही शिकार हो
प्रगतिशील जनवादी,
आपस में टकराये बिखरे
दाँवपेंच से भरे पैंतरे
हुए वहाँ पर
तरह-तरह के मधुर प्रलोभन
मनमोहक सुखदाई

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतिनिधि नायक नेताओं के
सन्मुख रखकर
बड़े नीति-कौशल से
गाँधी जी के चेले
विजयी हुए समर में,
स्वीकृत हुआ पंत-प्रस्ताव
जय प्रकाश नारायण
गठित वामपक्षी मोरचे से
हटे ऐन मौके पर
उनका यह समाजवादी दल
हो तटस्थ चुप बैठा
यतिवर के सम्मुख भी
रखे गये प्रस्ताव मधुर कुछ-
किन्तु तपस्वी त्यागी
सूर साहसी धीर-धुरन्धर
विषय-विलास-विरागी
प्रज्ञा चक्षु ब्रह्म अनुरागी
महापुरुष युग-द्रष्टा
अपने पूर्व सुनिश्चित
निपुन नीति निर्णय पर
सजग वीरतापूर्वक
अडिग भाव से डटे रहे ।
आगे चलकर अप्रैल मास में
कलकत्ते के महानगर में
कांगरेस की महासमिति का
अधिवेशन आयोजित करके,
घेरा गया सुभाष बोस को
त्रिपुरी के प्रस्ताव विकट
के घेरे में-
जहाँ रूढ़िगत परम्परा के
दारुण सघन विपिन में
फँसी दीन मानवता,
चीख पुकार रही हो,
धर्म विवेक शून्य हो
स्वाभाविक प्रमाद वश
कायर बना जम्हाई लेता
पाप वहाँ पर
अति प्रचण्ड हो,
बहुरंगी मोहक रूपों में
प्रगट देखने में आता है
नव युग का वह नव प्रभात था
जन-मानस में प्रगतिवाद के,
उगते नये पौध का,
सदविकास था,
अभ्यूदय था,
नव जनवादी
गत्वर तरुण-शक्ति का,
किन्तु क्षोभ से
दाहक घृणा-द्वेष से
कांगरेस के दक्षिण पंथी
दकियानूस क्रूर नेतागण
प्रगतिवाद से नव विकास से
भीतर–ही–भीतर जलते थे,
स्वीकृत गूढ़ पंत-प्रस्ताव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके दर्भ-दर्प
अभिमान-क्रोध का,
था विस्फोट भयंकर ।
उर में दबी दहकती
अग्नि-शिखा प्रतिशोध-रोष की
चीर हृदय को बाहर आई,
नाच उठी नंगी दानवता
आखिर सप्त महारथियों ने
न्याय नीति का गला घोंटकर
छात्रधर्म के पुण्य-प्रतीक
शौर्य-धैर्य साहस के
अनुपम दिव्य स्वरूप
कुल दीपक अभिमन्यु वीर का
चक्रव्यूह के
उस अन्तिम दुर्भेद्य द्वार पर
अति विकराल रूप धर
कूल कपट छल-छद्म घात से
सहसा बध कर डाला,
उधर उग्र साम्राज्यवाद की
क्रूर शक्तियां
अंध महासागर के तट पर
युद्धोन्माद ग्रस्त होकर
ताल ठोंकतीं
अवसर ताक रही थीं ।
नाजी हिटलर
कड़क उठा इतने में
गोयरिंग ने पोलैण्ड मुर्ग का
झट से गला तराश लिया,
बस उतने से
महासागर की ज्वाला
भड़क उठी पश्चिम में-
अमरीका इंग्लैण्ड फ्रांस की
मित्र शक्तियां शंख बजाकर
समर भूमि में उतरीं,
उधर दूसरी ओर
धुरी राष्ट्र तो
शस्त्र सुसज्जित रौद्र रूप धर
बहुत पूर्व ही
लघु दुर्बल राष्ट्रों पर
धावा बोल चुके थे ।
जेनरल फ्रैंको
मानी तानाशाह,
जिब्राल्टर के दुर्ग द्वार पर
हड़क रहा था ।
पूरब उस प्रशान्त सागर में
विसूवियस के मुख से
फूटी अनल शिखाएं
द्रुति-गति से पश्चिम को
बढ़ती
अति विकराल रूप धर
आतंकित करती रहती थीं
वायुयान तोपों के
दूर-दूर की दौड़ लगाकर
बम के गोले

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बरसते रहते थे ।
अभी देश में
अंग्रेजी साम्राज्यवाद का
शासन-यंत्र सुदृढ़ वह
वैसे ही चलता था
स्वतंत्रता का रथ दल-दल में
फँसा हुआ था,
जिसके लिए देश ने
बलिवेदी पर
अपने कितने तरुण सुतों के
शीश चढ़ाये
वह स्वतंत्रता
कुटिल ब्रिटिश संसद के
विधि-विधान के
कारा का कैदी बन
झंख रही थी ।
गाँधी बाबा
पावा सेर पसेरी
आधा पाव छटांक
छोटे-बड़े बटखरे
तरजूई पर रखकर
आजादी का
सौदा तौल रहे थे
नहीं सन्तुलन हो पाता था-
उलझन सदा बनी रहती थी ।

सत्य-अहिंसावादी गांधी
प्राय: कहते थे कि-
'अंग्रेजी सरकार, युद्ध में-
फँसी हुई है ।'
ऐसी विषम घड़ी में
स्वतंत्रता का
निर्णायक संघर्ष छेड़ना
उचित नहीं है ।
बात दूसरी यह है कि
देश अभी तैयार नहीं है ।
उधर देश की
तरुण शक्तियों के
बहु प्रतिनिधि
प्रगतिशील जननायक
आजादी का
युद्ध छेड़ने को तत्पर थे ।
वे समझौते के विरुद्ध थे
उनका कहना था कि,
'स्वतंत्रता का
समर छेड़ने का यह
स्वर्ण सुअवसर मिला हुआ है,
भ्रम अथवा प्रमादवश
आज चूकना उससे
होगी भारी भूल हमारी ।'
इसी धुम्रमय धूमिल -
पृष्ठ भूमि में,
अंग्रेजी शासन से
कांगरेस के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत्ताधारी नेताओं की
खटक गई कुछ,
बस परिणामस्वरूप तुरन्त
उनके शासनारूढ़
आठ प्रान्तों के
मंत्रिमण्डल ने
त्यागपत्र दे दिया रुष्ट हो,
उधर सुभाष बोस ने
व्यापक दौड़ा किया देश का,
और हजारों
मुख्य गाँव नगरों की-
उमड़ी हुई विशाल सभाएं,
संबोधित कर,
समझौते की
घातक मनोवृत्ति का
घोर विरोध किया वीरोचित,
तथा शीघ्र ही जोर-शोर से
स्वतंत्रता संग्राम छेड़ने का
अभूत आह्वान किया,
उस महिमामय
शुभ आह्वान कार्य में
कुशल क्रान्तिकारी जननायक
सुधी कर्मयोगी उपदेष्टा
स्वामी सहजानन्द यतीश्वर
विमल हृदय से
सदा साथ थे ।

यतीराज के
तूफानी व्यक्तित्व
उनकी अद्भुत कार्यशीलता
तथा क्रान्तिकारी क्षमता को,
अब कुछ और जानिये ।
शोषित दलित किसान वर्ग की
प्रतिनिधिसंस्था
व्यापक सुदृढ़ किसान-सभा का,
हुआ पाँचवाँ
सजा सफल अधिवेशन
आन्ध्र प्रदेश के
विजगापट्टम
कृषि प्रधान मण्डल में
ख्यात पलासा टीसन
रेल केन्द्र के पास
काली वुग्गा में ।
मनोनीत अध्यक्ष
महामनीषी राहुल जी के,
उसी ऐन मौके पर
गिरफ्तार होने से
वीरभूमि पंजाब निवासी
वृद्ध सूरमा क्रान्ति-पुजारी
बहुत पुराने
पटु सेवक किसान लोगों के
बाबा सोहन सिंह जी 'भंकना'
अधिवेशन के
बने कार्यकारी अध्यक्ष

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यतिवर के अतिरिक्त
इन्दुलाल रंगा इत्यादि
आयोजन को
सफल बनानेवाले
सघन कार्य में
जुटे लगे थे
घोर वृष्टि के
होते रहने पर भी
समारोह वह
पूरा सफल रहा ।

उधर यतीश्वर ने देखा कि
कांगरेस के नेताओं में
समझौते की मनादृष्टि अब
धीरे-धीरे
सुदृढ़ हुई जाती है,
वे राष्ट्रीय-मुक्ति का
शुभ संग्राम नहीं छेड़ेंगे,
तब अपने कुछ
सहयोगी मित्रों से
और सुभाष बोस से
राय-मशविरा कर उन्होंने
यह तय कर लिया तुरत कि
वहाँ रामगढ़ चलकर
कांगरेस-अधिवेशन के ही-
नियत समय पर
समझौते की
घातक और तिकड़मी
मनोभावना के विरोध में
किया जाय भारी सम्मेलन ।
बस क्या था,
हुआ ठीक वैसा ही
होने लगी शीघ्र तैयारी
उस प्रस्तावित सम्मेलन की ।

उनइस सौ चालिस के
प्रिय मधुमय अप्रैल मास में
जब निसर्ग से
सौरभ पराग
अनुराग प्राप्त कर
शुभ सुहावना
शुरू हुआ सप्ताह दूसरा
उसी समय पर
रांची रोड रेल-टीसन से
तीन मील दक्षिण की ओर
दामोदर घाटी के
रम्य-कुंज-कानन में
झारखंड अधिवासी
शोषित-दलित निरीह-निराश्रय
बिखरे मूक किसान जहाँ पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बसे हुए हैं
वहीं रामगढ़ के सिवान में
समझौते की
जनहित-घातक
कुटिल नीति का
प्रबल विरोध प्रदर्शक
भव्य महासम्मेलन
धूम-धाम से
विधि-पूर्वक संपन्न हुआ
भारतीय जनता के
तरुण हृदय-सम्राट
वीराग्रणी सुभाष बोस ही
उस आयोजित सम्मेलन के
हुए वहाँ अध्यक्ष ।
वैसे अनुपम
युग निर्णायक
शुभ अवसर पर
लाखों की संख्या में जुटकर
निखिल देशवासी जनता ने
श्रद्धा भरे हृदय से
स्वागत किया वीर नायक का
और साथ ही समझौते का
डटकर घोर विरोध किया ।
जुटे क्रान्तिकारीजन नेता,
सम्मेलन के रंगमंच से
स्वतंत्रता संग्राम शीघ्र ही
छेड़ देने का
करते रह प्रबल अनुरोध-
युद्धकाल था
सुख-सुविधाएं छिनी हुई थीं
शोषण-उत्पीड़न से,
दशा देश की चिन्तनीय थी
अन्तरंग बहिरंग उलझनें
बढ़ती ही जाती थीं,
क्षोभ-रोष से
भरा वायुमण्डल था
फलत: धीरे-धीरे
हवा गर्म होती जाती थी ।
जिनको अपनी मातृभूमि के
गौरव-गरिमा–मर्यादा का
थोड़ा-बहुत ज्ञान था
और हृदय में
छिपा कहीं कुछ
स्वाभिमान था
ऐसे सभी लोग अकुलाये
अवसर ताक रहे थे
कि कब देश स्वतंत्र बनेगा
तोड़ दासता की जंजीरें ?
इस प्रकार से
अपने सदुद्देश्य को
जनता के सम्मुख रख
उसे प्रभावित-
अनुप्राणित करने में
पूरा सफल रहा सम्मेलन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सेनापति सुभाष ने
समय घड़ी अनुकूल देख तब
अति ओजस्वी सैनिक ध्वनि में
बिगुल बजाकर
सभा-मंच से
स्वतंत्रता-संग्राम-शान्तिमय
संघ छेड़ देने की
खुली घोषणा कर दी ।
समर भूमि का
मार्ग कंटकाकीर्ण कठिन है
लेकिन शूर मनस्वी
काटों का ही
मुकुट शीश पर रख कर
धर कर पाँव
दहकते अँगारों पर
निर्भय हो बढ़ते जाते हैं
सदा लक्ष्य की ओर
शत-शत बलिदानी वीरों की
जली अस्थियों की चिनगारी
पा सहयोग हवा का
उग्र रूप धर
विकट अगम कर्तव्य-मार्ग के
अंधकार को दूर भगाती
उनको उचित समय पर
कुछ प्रकाश पहुँचा देती है ।

अवसर था वह
आत्म-गौरव ओज का
कुछ दशक पहले जहाँ
जलियाँ वाले बाग में
एकत्रित हो इसी समय पर
त्याग तप पुरुषार्थ के बल
दास्ता से मुक्ति पाने
पूर्वजों की
मान मर्यादा बचाने
लोक-ऋण
भारी चुकाने के लिए
वीराग्रणी अमरपूतों ने,
स्वतंत्रता की बलि वेदी पर
अपना शीश चढ़ाया ।
और गाढ़ लोहू से
नवयुग की इतिहास-कथा का
रोमांचक अध्याय लिखा था
तब से उनकी
ममता भरी याद में
राष्ट्रीय-सप्ताह का
पूण्य-पर्व हर वर्ष देश में
आयोजित होता आता है
और चतुर्दिक ग्राम-नगर में
लोग सभाएं करके
उन्हें स्नेह-निष्ठा से
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं
उसी उमंग अनुराग त्याग के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबल सूक्ष्म परमाणु कणों से
अनुप्राणित हो-
जागरण की ज्योति उज्ज्वल
फैलती सबको जगाती
त्याग-तप-कर्तव्य-निष्ठा
सादगी स्वातंत्र्य-सेवा
शौर्य साहस
आत्म-गौरव स्वावलम्बन
लोक-संग्रह आदि की
सिरजक निराली
भावनाओं से समन्वित
दिव्य-जीवन कल्प उर्जा
हर्ष से अनुदान देती
अभ्यूदय की ओर क्रमश:
कदम कसती जा रही थी ।
उठ सभा के मंच से तब
घोषणा का शुभ समर्थन
करते हुए यती ने कहा
'जलियां वाला बाग को हम
आज भी भूले नहीं हैं,
बालक मदन की मधुर-मूरति
हृदय-मन्दिर में थिरकती
हँस रही ललकारती है ।
बचन कुद्दी राम के भी,
गूँजते आकाश में हैं
है जरूरत सजग होकर,
श्रवण करने की उन्हें

जिनकी रंगों में है लहू
प्राण रहते देह में इस
जो निपट मुर्दा नहीं हैं
यह निमंत्रण पा समर का
मौन वे कैसे रहेंगे
बैठ घर अपमान सहकर
क्लीव-सा दिन काट काट लेंगे ?
सामने आकर खड़ी है
मूर्ति बिस्मिल लाहिड़ी
अशफाक रोशन सिंह की
स्वाधीनता ही के लिए
वीराग्रणी 'आजाद' ने
जालिमों से युद्ध करते
प्राण न्योछावर किया था
श्रद्धा-प्रेम विराग-ज्ञान के
परम्परागत पावन संगम
तीरथ-पति प्रयाग के
अन्तर्वेदी पुण्य क्षेत्र
विख्यात आल्फ्रेड पार्क में
भारत माँ के अमर पुत्रों
उन शहीदों की कहानी
त्याग साहस शूरता की
पढ़कर उठो भूलो नहीं
लाज रख लो लाजपत की
भगत सिंह की याद कर लो ।
उस राजगुरु सुखदेव के,
भूलो नहीं बलिदान को ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समय यह संघर्ष का है,
सुलह-समझौते का नहीं ।'

हम अतीत को भूल सर्वथा
वर्तमान जीवन में
सफल नहीं हो सकते,
हमें तीसरी आँख खोलकर
उस अतीत पर
दृष्टि डालनी होगी ।
वर्तमान का मूलाधार वही है,
वही प्रेरणा-स्रोत हमारा,
भावी मधुर कल्पना का भी
उससे कुछ घनिष्ट नाता है ।
वर्तमान ही
कल भविष्य की रीढ़ बनेगा,
अतः समय पर
हमें समझना होगा यह कि,
जिन वीरों ने कल या परसों
बलि वेदी पर शीश चढ़ा कर,
स्वतंत्रता का मूल्य चुकाया
क्या उन्होंने
कभी सपने में भी
ऐसी विकट कल्पना की थी
कि आगे चल
इस स्वदेश के
नेता नायक कर्णधार ही
भ्रमोन्माद के वश हो
आजादी के युद्ध पोत को
बीच महासागर में छोड़
कावा काट सरक निकलेंगे ?
इस हमारी अकर्मण्यता
धर्मभीरुता कायरता से
पारस्परिक द्वेष
वैर विरोध कलह से
दूर फ़िरंग देश के
थोड़े से बनिया व्यापारी
माल बेचने जो आये थे,
मालिक बने देश के,
कामरूप सौराष्ट्र मराठा
रामेश्वर से काश्मीर तक
शासन किया सताया,
और सुनहला मौका पाकर
धन संपत्ति मर्यादा लूटा
आज उन्हीं की,
कुटिल पुंश्चलीवृत सभ्यता
अपना जौहर दिखा रही है ।
रामकृष्ण को भूल गये हम,
संस्कृति सदाचार को भूले,
धर्म गया घर फूटा ।
झंख रहे हैं झोपड़ियों में
दुःखी किसान-मजूर
उनके पास रहा क्या ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

केवल हँसुआ-खुरपा
हर-जुवाठि चाभुकि या
खाँची और कुदारी
फटी कमरिया
गुदरी और लंगोटी ।
कुटिल फिरंगी शासन को
अब हमें हटाना होगा,
बदली जग की हवा-यहाँ अब
रही न तेरी मेरी,
समता का संदेश दे रही,
प्रकृति बजाकर भेरी ।
यती का रणोद्घोष यह
निकल रामगढ़ के जंगल से
सजग देश के हर कोने में ।
उस निष्काम कर्मयोगी का
अपने दृढ़ संकल्प
और लासानी,
शूर स्वभाव जुझारू-
अभय अमानी के अनुसार
शरू हुआ तूफानी दौड़ा ।
जगह-जगह पर
हुई विराट सभाएं,
आजादी के छिड़े युद्ध को
सफल बनाने के विचार से,
सिंहनाद सुनवैया
कर्मक्षेत्र यतिवर का
जागा प्रान्त बिहार

सजग हुए मजदूर-किसान
रण का नगद निमंत्रण पाकर
डेग बढ़ा चल पड़े जवान
आंदोलन को
उग्र रूप में
बढ़ते देख चतुर्दिक
अंग्रेजी सरकार सशंकित
क्षुब्ध क्रुध हो सनकी,
हुआ नतीजा यह कि
बुद्धि विवेक गँवाकर उसने
पकड़ देश के
सभी क्रान्तिकारी नेताओं,
स्वतंत्रता-सेनानी-
तरुण देश सेवक वीरों को
बंदी गृह में डाला-
आन्दोलन के मुख्य सूत्रधर
स्वामी सहजानन्द मनस्वी
सहज कोप-भाजन बन,
उस प्राचीन उदन्तपुरी में
जिसे लोग कहते हैं,
आज बिहार शरीफ,
पकड़े जाकर,
गये हजारीबाग जेल में,
सजा प्राप्त कर
तीन वर्ष की,
तीथि उनतीस,
महीना अप्रैल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सन् उनचालिस को ।

इस प्रकार से पहुँच वहाँ पर,
यती विरागी आत्म-संयमी
मस्त आत्मा राम निराले
बंदी जीवन रहे बीतते
चिन्तन-मनन आत्म दर्शन में ।
महामनीषी
जीवन-मुक्त तपस्वी
समदर्शी को
बंदी कौन बना सकता है ?
उनका तन बंदी था केवल,
मन तो सदा मुक्त रह
अगम अथाह महासागर की
अतिशय गहराई में
पैठ डूबकर
रत्न ढूंढता रहा ध्यान से ।
प्रकृति अनादि अनन्त अनोखी
मन-वाणी से परे
रहस्यमयी है ।
उसकी गतिविधि
कौन समझ सकता है ?
कुटिल काल का
कहाँ पड़ाव,
कभी जहाँ पर वह रुकता हो ?

गोड़ दबाकर चुप्पे
सर-सर सदा सरकता
चलता ही रहता वह
अगम अनन्त लक्ष्य की ओर
लेकिन लोक-बोध की,
भाषा में यह,
सहज भाव से
कहना पड़ता है कि,
यतीराज के,
उस बंदी जीवन के
बीत गये दो वर्ष सहज ही ।
वहाँ उन्होंने
योग-साधना की घड़ियों में
चिन्तन—मनन
शोध-अन्वीक्षण
सविधि अद्यतन करके
कई पुस्तकों की रचना की
जिनमें उनके,
कुछ विचार अनमोल
इस समाज के अभ्यूदय के
लिखे गये हैं ।
कुछ रचनाएं
हुईं किसानों-मजदूरों के
हित के लिए सर्वथा,
उनमें पहले
'किसान कैसे लड़ते हैं'
इसे देखिए

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर 'किसान क्या करें ?'
जानिए,
तब आगे बढ़,
'झारखंड के किसान' में,
झारखंडवासी किसान की,
जटिल समस्याओं का,
समुचित समाधान ढूँढिए ।
गांवों में खेती के,
मेरुदण्ड हैं
शोषित दलित खेत मजदूर,
यदि उनके अभाव अभिमत को
समझ-बूझकर,
कुछ सुधार करना चाहें तो
पढ़ें खेत मजदूर ।
यदि समाज के
वर्तमान इस
जीर्ण शीर्ण ढाँचे में
उलट-फेर परिवर्तन
या सम्पूर्ण क्रान्ति
करना चाहें तो,
तौर-तरीके के कुछ
बोध ज्ञान के लिए आपको
यती की रची विलक्षण पुस्तक
'क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा'
पढ़ना आवश्यक है
यदि गीता का तत्व विवेचन
कर्म ज्ञान की मर्यादा का
मूल्यांकन विश्लेषण,
और गूढ़ गीता दर्शन का
नव द्वन्द्वात्मक-
भौतिकवादी-दर्शन
मार्क्सवाद से,
किस प्रकार का
वैचारिक लगाव है,
अगर आपको
इसे जानना है तो
पढ़ें यती का
मौलिक चिन्तन
उनके 'गीता हृदय' ग्रन्थ में ।

जहां-कहीं धरती पर
मानवता को दानवता से
लोहा लेना पड़ा विवश हो,
वहाँ अवश्य ही,
कुटिल काल-गति
विषम परिस्थिति,
शोषित उत्पीड़ित आतंकित
किंकर्तव्यविमूढ़ वंचिता
दुखी दीन जनता की,
दुःख पीड़ा दुर्गति का
सहज ध्यानकर,
नैसर्गिक विधान अनुप्राणित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतुल शक्ति संपन्न विलक्षण,
कुछ विभूतियां
हो अवतरित पहुँच जाती हैं,
धरा-धाम में
उग्र कुटिल दंभी अभिमानी
शक्तिधरों के विहित
अंत के लिए समय से ।
यती शिरोमणि,
स्वामी सहजानन्द महान्
जिनके सभी कार्य जीवन के
चमत्कार से भरे विलक्षण,
होते रहे सदा ही ।
वे सम्पूर्ण देश के
सात लाख गाँवों के वासी
जांगर के बल से जीनेवाले
अतुल त्याग के विग्रह
सहज अन्नदाता दयालु अति
सभी किसान लोगों के
प्राणाधार मार्ग दर्शक थे,
जोर जुल्म शोषण दोहन का
सदा विरोध किया उन्होंने
अपनी अप्रतिह प्रतिमा से
मन वाणी कर्मों से
और सत्य की
मर्यादा रक्षा में,
जीवन पर्यन्त सचेष्ट रहे ।

सत्य अहिंसा विनय शील के,
गढ़ बिहार में
ज़मींदार लोगों की
प्रभुता रही सदा ही ।
दबे किसान यहाँ के,
उनके शोषण-दोहन
जोर जुल्म के
होते रहे शिकार ।
यती ने उन्हें जगाया
समझाया संगठित बनाया,
निर्भय होकर,
भ्रष्टाचार दमन से
लोहा लेना भी
सिखलाया
अवसर पाकर
कुछ जगहों में
दु:ख दरिद्रता से विपन्न हो,
लड़ते रहे किसान बटुर कर
जालिम जमींदार लोगों से
गठित किसान-सभाओं के बल
अपने हक के लिए अभय हो
दरभंगा मण्डल में
राधोपुर देकुली पंडौल
छपरा के उस अमवारी में,
इधर बड़हिया रेवड़ा
मंझियावां साढ़ा में,
हुए बकाश्त संघर्ष अपूर्व,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूरा जमकर
सामूहिक तैयारी
करके ।
सगरे किसान लोगों ने
बहुत सफलता पूर्वक
सत्याग्रह संग्राम चलाया,
राज्य किसान सभा के
नायकत्व में,
प्राय: बहुतेरी जगहों में
उन्हें लाभ भी मिला अवश्य ही ।
बहुतों को तो मिली जमीनें
जिन्हें जोतते आते थे वे
बहुत समय पहले से ।
कुछ दिन पहले
बैठ जहाँ उन झोपड़ियों में
पूर्व जन्म की कर्म कमाई
भाग्य और भगवान आदि के
महाजाल में फँस वे
अपने को कोसा करते थे,
आज युगों के बाद वहीं पर,
सीना तान कमर सीधी कर
खुली हवा में
सांस चैन की ली उन्होंने ।
लूट खसोट रुकी अब,
छूट गयी लाचारी
मिटी गुलामी,
छूटी बेगारी दस्तूरी ।

सहज करुण श्री यतिवर,
महापुरुष युग-द्रष्टा
अमृत पुत्र जन नायक,
सचमुच अद्भुत
संत सरल चित
अप्रमेय अमिताभ कल्पतरु,
विषपायी शंकर थे ।
अपने समुचित दिव्य जीवन में,
करुण पुकार सत्य की
सुनी उन्होंने सब दिन,
वीतराग उस
प्रज्ञाचक्षु मुनी ने,
सदा जगत जीवन को
ध्यान योग से देखा
उसी पर्यवेक्षण के क्रम में
तीन महत्वपूर्ण घटनाएं,
उनके हृदय पटल पर
ऐसी अमिट छाप सच,
डाल गईं चुपके से
जिन्होंने यथार्थत:
बहुत अधिक अंशों में
पलंटा उनके,
सुधी सौम्य जीवन की धारा
फलत: बने उग्र पंथी वे ।

पहली घटना
सन् उनइस सौ सत्रह की है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गाजीपुर मंडल के
विश्वम्भरपुर
सुखी जमींदारों के
गुड़ी गांव में,
यतिवर का निवास था
ठीक वहाँ से डेढ़ कोस पर,
छोटे से मौजा मौरा में
कभी टहलते
प्रात:काल पहुँच उन्होंने
कहीं राह के पास
कुछ टूटी-सी
किसी झोपड़ी के भीतर
एक मरा हलवाहा देखा
जो धरती पर पड़ा हुआ था ।
सर्दी बुखार से
उसकी मृत्यु हुई थी ।
जाड़े का वह दिन था
किन्तु कमर में
केवल एक लंगोटी भर थी
नहीं ओढ़ने को कुछ ।
जहाँ कहीं से
एक फटा बोरा पाया था
डाल उसी में
पैर और सिर
पड़ा-पड़ा मर गया ठिठुर कर,
पीठ और चूतड़ खाली थे
बिस्तर दवा चारपाई की,
बात नदारद ।
हृदय संत का रोया
उन्होंने सोचा कि
विगत साठ सत्तर वर्षों में
इसने लाखों आदमियों का
उत्तम भोजन,
गेहूँ चावल दूध-घीव फल
निश्चय ही उपजाया होगा
और कमाया होगा
धन दौलत भी अपार ।
लेकिन दुनिया कैसी जल्लाद
और लुटेरी है कि,
इसने शायद ही
जीवन भर में कब हीं
गेहूँ दूध-घीव खाया हो
अच्छा कपड़ा पहना हो
और मरने के समय
नंगा ही रह गया जाड़े में
इसे कफन भी देनेवाला
रहा नहीं अब कोई ।
डूब जाय यह दुनिया
ऐसा जहाँ घोर अन्याय ।
यह अंधेर
ऐसी निर्दयता
यह भारी लूट भयंकर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुनें दूसरी घटना सन्
उनइस सौ पैंतीस की
दक्षिण मुंगेर में
चकाय थाना है
ठेठ पहाड़ों में
वहाँ से संथाल परगना
और हजारीबाग जिले,
बहुत निकट हैं
वहाँ दिहातों में,
वे काले-काले
प्राय: नंगे
और कहीं कुछ
विष्टी पहने
पहाड़ी संथाल वगैरह
रहते हैं,
वहीं यती को
सभा आदि के क्रम में
रहना पड़ा
दो एक दिन,
वे सांयकाल
देहातों में,
टहलने जाया करते थे
जब उन नग्नप्राय
गरीब परिश्रमी
दीन किसानों की
हालत पूछी तो
पता चला कि

जंगल और पहाड़ काट कर
खेत बनाते
और धान उपजाते हैं,
किन्तु कभी तो
मात्र एक आना पैसा बस
और कभी
सेर भर चावल देकर
कले-कले
दो चार साल में
बनिये
सभी खेत लिखवा लेते हैं
फलत: वे बनियों के
बन जाते,
या फिर और कहीं जा,
उसी तरह के खेत बनाते
जिनको पुनरपि,
दाँव पेंच से
बनिये ले लेते हैं ।
कूट-लूट की
यह सामान्य क्रिया,
शत-शत वर्षों से जारी है
वे इतने परिश्रमी,
सीधे और सच्चे हैं
इतने से ही लुट जाते हैं,
और सदा नंगे रहते हैं ।
इस अंधेर खाते को देख,
यतिवर के करुणार्द्रय हृदय से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आई यह आवाज़ भिंगी की,
कहां सत्य और न्याय है
कहाँ अहिंसा,
दीन बन्धु भगवान कहाँ है ?
इनका सहज सत्य तो,
इनको लुटवाता है
और उधर बनिये का,
जाल और छल उसको
हलवा पूड़ी देता है ।
क्या भगवान
सहज करुणानिधि,
सत्य न्याय नाम की
कोई वस्तु यहां सचमुच है ?

अब आगे की
सुनें तीसरी घटना
मुंगेर के ही
बेगूसराय इलाके की,
सन् उनइस सौं सैंतिस की है
कहीं राह में
यतिवर ने देखा कि
एक मुर्दे को
टूटी-सी खटिया में
सुलाये और,
कुछ लोग
गंगा की ओर,
लिए जाते हैं
उनके पास न तो,
मुरदा जलाने के लिए
लकड़ी है,
और न
दूसरा ही सामान ।
एक मुट्ठी या मामूली सी,
रद्दी लकड़ी है ।
हृदय पुकार उठा उनका कि
"ओह जुल्म यह ।
यह भयंकर लूट ।।
हृदय हीनता ऐसी ।।।
जिसने जीवन पर्यन्त
सारी शक्ति लगाकर
धनवानों के
और बहुत से
सत्ताधारी,
अधिकारी लोगों के
भोग विलास मनोरंजन के,
तरह-तरह के
साधन या सामान
तथा लाखों के
भोजन खातिर
गेहूँ चावल
दूध मलाई मक्खन
पैदा किया
उसी की,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसी दशा भला कि
आज कफन तक,
हुआ नदारद ।
ऐसा अतुल तपस्वी,
और परम त्यागी कि
गेहूँ दूध-घीव पैदा कर,
स्वयं नहीं खा,
मदमत्तों को,
खिलाया
उनका ही है,
इसके प्रति ऐसा व्यवहार ।
इस अविचारी,
अन्याय समाज को
हमें मिटाना होगा ।
यही धर्म सर्वोत्तम
श्रेयस्कर गरिमामय,
सबसे बड़ी अहिंसा,
सबसे बड़ा सत्य है ।
इन्हीं दीन-दलितों की,
सेवा करते-करते
मरना होगा
इन्हें छोड़कर
मेरे दिल में,
भगवान कहाँ ?
मेरे तो भगवान यही हैं ।"

लगभग दो वर्षों तक
दूर हजारीबाग जेल में
राजबंदी रह,
सन् उनइस सौ विदित बयालिस,
आठ मार्च को
कारामुक्त हुए यतिराज,
प्रतिभाशाली क्रान्ति-दूत को
पाकर अपने बीच गरजते,
सजग हुए सब लोग शक्ति पा,
क्रियाशीलता बढ़ी
तुरत द्रुतगति से ।
पौरुष भरे बिहार प्रान्त के
हर कोने की खाक छानकर
नीतिविज्ञ उस मुनि पुंगव ने
भावीयुग के अरुणोदय की
पूर्व पीठिका रची संवारी
सजग तूलिका ले हाथों में,
पुन: किसान-सभा में
नवजीवन लहराया
नई उमंग नया उत्साह,
साहस शौर्य नया ले
कर्मवीर युवकों ने,
धीर सहिष्णु किसानों
मजदूरों ने,
अंगड़ाई ली
डेग बढ़ाया
सुभग लक्ष्य की ओर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शीघ्र किसान सभा के
अगले अधिवेशन की
होने लगी सविधि तैयारी,
भागीरथी क्रान्ति की
बहकर चली जहाँ से
जनजीवन को
सरस सुभग सुषमामय,
दिव्य अनूप बनाने,
उसी पुनीत तपस्या-भूमि
गंगोत्तरी तीर्थ बिहटा में
समय परिस्थिति,
देख समझ अनुकूल
मई तीस इकतिस को
परम तपस्वी त्यागी
कर्मठ किसान-नेता
इन्दुलाल याज्ञिक की
अध्यक्षता में,
क्रमिक आठवाँ
हुआ भव्य अतुल अधिवेशन,
लाखों की संख्या में
उमड़े किसान लोगों के
उस विराट मेले की
दर्शनीय वह अनुपम झाँकी
तारण-तीर्थ प्रयाग राज के
महाकुम्भ की
नूतन छवि थी,
महामनीषी,
संत-तपस्वी
भक्त-समाज-समागम,
सचमुच नयनाभिराम था,
इधर देश की,
दशा परिस्थिति,
तत्कालीन विकट विकराल,
विश्व युद्ध के चलते
चिन्तनीय थी,
हिटलर तोजो तानाशाही
आक्रमणों से
ब्रिटिश-हुकूमत
घबड़ाई थी,
फलत: सन्निपात की
बेहोशी में
दमनचक्र तेजी से
चला रही थी,
जिसके चलते
वीर विलक्षण,
स्वतंत्रता-सेनानी,
मातृभूमि के सेवक सच्चे,
पकड़ जेल में
बंद किये जाते थे,
पूँजीवादी औपनिवेशक शोषण
अपनी विकसित
चरम दशा में
उग्र रूप धर,
कुटिल काल गति के अनुसार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है साम्राज्यवाद बन जाता,
और उसी का
मरणासन्न रूप विक्षिप्त,
'फासिजम' याँ
फांसीवादी तानाशाही,
हिटलरमुसोलिनी-तोजो
उसके ही विकराल रूप थे,
वर्तमान यह सदी बीसवीं
लोकतंत्र का उदयकाल है
आज उसी मरीचिमाली की
दिव्य ज्योति से
धरा चतुर्दिक आलोकित है
अकर्मण्यता तंद्रा प्रमाद
अपना विस्तर बाँध रहे हैं
नर-जागरण-शक्ति-अनुप्राणित
वर्द्धनशील मनस्वी
पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल
अतुल शक्तिधर
तरुण पक्षधर लोकतंत्र के
कमर बाँधकर
धीरे-धीरे कदम मिलाते,
होते खड़े दिखाई देते,
अत: आज या कल निश्चय ही,
विजय-पताका
उनके हाथों होगी,
पूँजीवाद मिटेगा
गढ़ साम्राज्यवाद के
आज नहीं कल ढह जायेंगे
जनयुग झांक रहा है।
ईर्ष्या द्वेष कलह का
कारण प्रमुख यही है
बहुत युगों से
भौतिकवादी,
इस दुनिया का
यह समाज वर्गों में
बंटा हुआ है
यहाँ परस्पर होते
द्वन्द्व सदा रहते हैं
लेकिन जैसे-जैसे
हुई प्रगति वैभव लहराया
पूँजी बढ़ी स्वार्थ टकराया
उत्पादन के साधन
कुछ ही हाथों में बटुराये
जिसके चलते
एकाधिकार का
बढ़ता रहा द्वन्द्व नित।
तब से क्रमश:
यह संघर्ष भयंकर
होता गया दिनों दिन।
आज वही
बिकराल रूप में
सन्मुख दिखलाई पड़ता है।
सत्ताधारी, राष्ट्र घमण्डी
घृणित स्वार्थवश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मदोन्मत हो
युद्ध ठानकर
लाखों मूक निरीह जनों का,
खून बहाते
मूछें ऐंठ रहे हैं ।
आज दूसरे विश्व युद्ध के
इस अवसर पर
दुनिया कम या बेशी
दो खेमों में,
बंटी हुई है,
एक ओर साम्राज्यवाद की
तानाशाही उग्र शक्तियां
संघबद्ध हो डटी हुई हैं,
उधर दूसरी ओर सजग हो
लोक-तंत्र की,
छोटी-बड़ी अनेक शक्तियां
एक साथ मिल जुलकर,
जनजीवन रक्षार्थ खड़ी हैं
एक ओर आसुरी शक्ति का,
नेता नाजी हिटलर
दुर्बल जनतांत्रिक राष्ट्रों को,
रौंद हड़पकर आखिर
लोकतंत्र के प्रबल पक्षधर
शांति न्याय के प्रहरी
नव समाजवादी जनतंत्र,
दिव्य सोवियत रूस देश पर
पागल बनकर,
चढ़ दौड़ा है
ऐसी विषम घड़ी में
हमें सोचना है कि
तानाशाही विजयी हो या,
लोकतंत्र की शक्ति विश्व में
विजय लाभकर
दिव्य रूप धर
राह दिखाती
सबल सुरक्षित रहे सर्वदा ।

स्वामी जी स्वतंत्र-चेता थे
तत्कालीन परिस्थिति
देख समझकर,
उनकी यही
नई चिन्तन-धारा थी
उन्होंने देखा कि
आज हमारे
पूर्वी दरवाजे पर
जापानी बर्बर आ पहुँचा,
बंगभूमि में उसने
जहाँ-तहाँ कुछ
बमगोले भी
चुपके छिपके फेंके,
कहाँ याद है उसको
मुनी तथागत के वे,

CC0: In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुभ सात्विक उपदेश ?
उसके निकट पड़ोसी,
चीन-कोरिया
शाक्यमुनी के ही चेले हैं,
इसका उसने
कहाँ विचार किया कुछ ?
बेठन में लपेट त्रिपिटक को
होर्योजी मंदिर में,
बोधिसत्व के सन्मुख
शीश झुका रख छोड़ा,
दौड़ा घृणित स्वार्थ लिप्सा में
उनको रौंदा और सताया
ऐसी उलझी पृष्ठ-भूमि में,
उनकी पैनी विमल बुद्धि ने
शांतिचित्त हो,
यह सोचा कि
यदि वे तानाशाह,
क्रूर कुटिल दुर्दान्त
हिटलर-तोजो,
विजयी होंगे
तब उनके चंगुल से
इस स्वदेश को
सहज स्वतंत्र बनाना
प्राय: निपट असंभव होगा,
और इधर इस
अति जर्जर साम्राज्यवाद से
हम बेखटके,
पीछे फरिया लेंगे ।

देश दमन से
शोषण-उत्पीड़न से
दु:खी-खिन्न चिन्तित था,
ब्रिटिश हुकूमत
युद्धमार से,
दबी क्लान्त जर्जर हो
हाँफ रही थी,
इधर विवश जनमत होकर
गाँधी जी ने,
असमय बिगुल बजाया
और व्यग्र हो,
'भारत छोड़ो' वाला
नारा नया सुनाया,
बस अब क्या था
'सहज दाव बिखलवे सूझा'
क्षुब्ध क्रुद्ध सरकार विदेशी
मदोन्मत हो
पैजामे से बाहर आई
और शीघ्र ही उसने,
कहर देश पर ढाहा ।
गाँधी नेहरू सहित राष्ट्र के,
सभी बड़े नेतागण
तथाकथित भारत-रक्षा के,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्यादेश-जाल में,
अकस्मात पकड़े जा,
कारागृह में बन्द हुए,
लाखों स्वतंत्रता-सेनानी,
देशभक्त अनुरागी
पकड़ देश के हर कोने से,
ठूँसे गये शीघ्र जेलों में ।
चढ़ी प्रेत की छाया सिर पर,
फौज-पुलिस की
गोली चली चतुर्दिक,
बालक बूढ़ जवान हजारों
बन शिकार ढह गये धरा पर,
गाँवों नगरों-बाजारों में
थाना चौकी कचहरियों में,
राइफलों स्टेनगनों से
डेनामाइट बमगोलों से,
कहीं किरिच पिस्तौल आदि से
बेशुमार लोगों की,
हुई नृशंस हत्याएं
फूंके गये गाँव कितने ही,
आजादी के सबल पक्षधर
कार्यकर्ताओं के,
घर-दवाजे
ढाहे गये हजारों,
मिली कहाँ आजादी
व्यर्थ हुई बर्बादी ।

लोग थके दबके घबड़ाये,
बल विवेक पुरुषार्थ गँवाये
शिथिल खिन्न चिन्तित थे,
ऐसी विकट परिस्थिति-
रही देश की
बनी बहुत अर्से तक-
किन्तु उलझनों बाधाओं को,
कठिन परिश्रम लगन धैर्य से,
सहिष्णुता साहस से,
लड़कर धीरे-धीरे
रहे हटाते और मिटाते,
अभय मनस्वी
कर्मयोग निष्णांत तपस्वी,
कुछ किसान-नेतागण ।
वातावरण समय से बदला,
टूटी कड़ी जुटी फिर
आगे चल पंजाब प्रान्त के,
अमृतसर मंडल में
बाबा सोहन सिंह 'भकना' की
वीर-प्रसविनी जन्मभूमि उस
भकनाकंला गाँव में,
सन् उनइस सौ तैंतालिस के
मृदु अप्रैल मास में,
तिथिक्रम दू से चार
तीन दिनों तक,
बंगभूमि के
सुधी क्रान्तिकारी जननेता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लायक लाल मुखर्जी बंकिम
मनोनीत अध्यक्ष निपुन के,
कुशल मार्ग दर्शन में
भारतीय किसान-सभा का,
हुआ सातवां अधिवेशन वह
विधिपूर्वक सम्पन्न ।

स्वामी जी सच्चे अर्थों में
जननायक थे
निरभिमानी निस्पृह वे
आठो याम लगे रहते थे
शोषित दलित किसानों
दीन दुःखी मजदूरों
किंवा उत्पीड़ित लोगों के
हित चिन्तन में,
कर्म वचन मन तीनों उनके
सदा एक थे
और एक ही रहे अन्त तक
था उनका व्यक्तित्व निराला
नहीं लचकने, और-
हिचकने वाला,
वे निश्चित सिद्धान्त छोड़कर
कभी ढील पड़कर जीवन में,
आधा तेल और-
आधा पानी की-
घानी वाली,
गोल-मटोल नीति अपनाकर
रंचमात्र भी झुके नहीं ।
सदा आत्मरत मस्तराम वे
थे निष्काम कर्मयोगी पटु,
अन्तर्दृष्टा ज्ञानी,
अविरत गति से
चलते रहे सदा ही
कभी नहीं कर्तव्य विमुख हो
पलक मात्र भी रुके नहीं ।

राजनीतिक पंडागिरी को
अनुचित कार्य मानते थे वे,
इसलिए पार्टीवालों के
लाखों यत्न कोशिशें
करते रहने पर भी
खोकर अपनी
बुद्धि विवेकवती को
दलबंदी के
दुःखदाई दलदल में
पड़े नहीं जीवन पर्यन्त,
उनका कहना था कि-
'चालिस कोटि जनों की
स्वतंत्रता तो हमको
निश्चय ही अभिष्ट है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लेकिन तो,
इसके लिए जरूरी है कि-
अपनी स्वतंत्रता,
अपने सोच-समझ चिन्तन की
और विचार प्रगट करने की
स्वतंत्रता को,
स्वत: गंवा दें
बस समष्टि की,
पार्टी की उस स्वतंत्रता में
सहज व्यक्ति या प्रकृत व्यष्टि की,
आजादी यह हजम करा दें,
मेरे जैसा तुच्छ व्यक्ति तो
इतना बड़ा त्याग करने की
हिम्मत कभी नहीं रखता कि-
जिस स्वतंत्रता खातिर
लड़े-मरे उसको ही,
अपने लिए खत्म कर दें,
और इस तरह-
"बहुत ढूँढा
उसे हमने न पाया,
अगर पाया पता
अपना न पाया-"
वाली,
वेदांती लोगों की,
विदित उक्ति चरितार्थ करें,
मैं मानता हूँ कि-
निजी स्वतंत्रता को
कुछ सीमा तक बिना मिटाये
कोई संस्था
नहीं कभी चल सकती
किन्तु मानता हूँ यह भी कि,
ब्योरे वाली बातों में ही
यह रीति-नीति संभव है,
और चाहिए होनी,
सिद्धान्त और
मुख्य उद्देश्य-
संब्रंधी बातों में
निजी स्वतंत्रता
रहनी ही चाहिए।

दक्षिण की बारी थी
वहाँ विघ्न-बाधाएं
कम थीं,
आन्दोलन के
दमन चक्र का दौरा
मामूली था
शोषित-दलित किसान वहाँ के
बहुत ठोकरें खाकर
जागरूक बन पहले ही से
शोषण उत्पीड़न के विरुद्ध
संगठन बना
उठ खड़े हुए थे,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धाप्रेरित
उनके ही नेंवता पर
भारतीय किसान-सभा का
आगे का अष्टम अधिवेशन
वहीं विजयवाड़ा में
करने की तैयारी
जोर-शोर से होती थी,
आन्ध्र देशभक्तों का
लोग वहाँ के परम्परा से
श्रद्धा प्रेम विनय के
विमल स्वरूप-
सुधी सेवक हैं
वे करुणार्द्र हृदय से
दीन-दु:खी लोगों की
अथवा परोपकारी
त्यागमूर्ति संतों की
शताब्दियों से
निष्ठापूर्वक
सेवा करते आये हैं,
अत:पूर्व पुरुषों की
उस सांस्कृतिक पुण्य मर्यादा
एवं धर्मी परम्परा के
पावन सरिता जल से सिञ्चित
आन्ध्रप्रदेश की उर्वर
शस्य-श्यामला सज धरती पर
विहित योजना के अनुसार
उचित समय पर

चउदह-पंद्रह मार्च
सन् उनइस सौ चउवालिस को
गिरि सरिता परिवेष्टित
नैसर्गिक सुषमा से सज्जित
नगर विजयवाड़ा में
कुशल क्रान्तिकारी जननायक
भारतीय किसान-सभा के
कृति जन्मदाता प्रतिपालक
मर्यादा-परित्राता
परम तपस्वी त्यागी
दिव्य मार्ग दर्शक अनुरागी
स्वामी सहजानन्द
धुनी बड़ भागी को
प्रमुदित अध्यक्ष बनाकर
धूम-धाम से
धवलित अतुलित
अतिशय पुलकित सस्मित
हुआ भव्य अधिवेशन,
अब तक अतीत के
जितने भी नामी अधिवेशन
थे हो चुके किसान-सभा के
उनसे यह अधिवेशन
बहुत अधिक गरिमामय
निपट निराला
कौतुकीय छवि वाला
मंत्रमुग्धकारी अधिबल था,
मनोनीति अध्यक्ष सभा के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूज्यपाद स्वामी जी,
नैष्ठिक किसान-नेता
पण्डित यमुना कार्यी
और तपोधन-
यदुनन्दन शर्मा के साथ,
अपनें बिहटा आश्रम से चल
हबड़ा होते
मद्रास मेल गाड़ी से ।
कटक वाल्टेयर में
स्वागतार्थ बटुरे लोगों से
मिलते-जुलते
उचित समय पर
पहुँचे तीर्थ विजयवाड़ा में,
वहाँ रेल्वे स्टेशन पर
स्वागत हेतु किसानसभा के
बहुतेरे विश्रुत नेतागण
स्वयंसेवकों की जमात ले
बाजा और सभा के
लाल झंडे के साथ
पहले से ही पहुँच चुके थे,
यतीशिरोमणि दंडी स्वामी
दण्ड हाथ में लेकर
जैसे ही गाड़ी से उतरे
'जिन्दाबाद और जय'
के नारों से,
गूँज उठा आकाश,
भारी भीड़ जमा थी बाहर
जो अपूर्व उत्साह प्रेम से
समारोह के
पुण्य दर्शन में शामिल हो
धीरे-धीरे
बढ़ती चली झूमती गाती ।
अधिवेशन के लिए बनाये
आकर्षक पण्डाल ठाँव को,
उस विशाल शोभा-यात्रा की
छटा अलौकिक अनुपम
ओज़ सत्व उत्कर्ष-बोधिनी
अति आनन्ददायिनी
अकथनीय थी,
हँसुवा और हथौड़ावाली
ध्वजा पताकाओं से
सहज अलंकृत दिव्य मनोरम
बीच-बीच में
सुघर तिरंगा झंडा शोभित
नई बैलगाड़ी पर
बैठे चले अध्यक्ष यती वे
गैरिक वसन लपेटे अपना
दण्ड हाथ में लिए सुशोभित
सहज शांत मुद्रा में
लदे फूल की मालाओं से
उमड़े जन समूह के साथ ।
शोभा-यात्रा
घूम नगर के प्रमुख पथों से
अधिवेशन के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सजे ठौर पर पहुँची,
उस अवसर के लिए प्रशिक्षित
कुछ चौकन्ने किसान-बालक
और बालिकाओं का
चार हजार स्वयंसेवक-दल
स्वागत-सेवा शान्ति-व्यवस्था
सब कार्यों में
निष्ठा पूर्वक लगा हुआ था,
उसने ही पुरुषार्थ लगन से
सत्तर हजार बांसों और
ढाई हजार बल्लों से
अद्भुत पंडाल बनाकर
माला-पुष्प सुरुचि तोरण पट
विविध-कला कौशल से
ललित बहुल चित्रों से
उसे सजाया चमकाया था,
पहले दिन के
झण्डोत्तोलन-समारोह में,
तीस हजार लोग शामिल थे,
चउदह-पंद्रह दो दिन
एक लाख किसान लोगों ने
भव्य-प्रदर्शन में शामिल हो
अपनी मनोव्यथा दर्शायी,
दूर-दूर के
शत-शत गाँवों से चली
अधिवेशन की खुली सभा में
पाँच लाख लोग बटुरे थे,

दृश्य अभूतपूर्व था
सभा व्यवस्था सम्यक्
अनुपम सुचारु थी,
स्वागत-गान और
अभिनन्दन
अधिवेशन की
विविध मान्यताओं को
पूर्ण किये जाने के बाद
सम्मानित अध्यक्ष यती ने
धारण किये दण्ड हाथों में
सभा-मंच से जन-समूह को
अपना शुभ शिक्षाप्रद
ओजस्वी व्याख्यान सुनाया ।
जिसमें कि किसान लोगों की
विविध समस्याओं पर
पूर्ण प्रकाश डाला था,
उनकी मांगें
उनके अधिकार कहे थे,
तथा देश के
जटिल राजनीतिक प्रश्नों के
समाधान ढूँढे थे
इस प्रकार अधिवेशन
कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव
पारित करके
सफल और सम्पन्न हुआ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्या विनय विवेक त्याग-
तप दिव्य गुणों से मण्डित
अभय क्रान्तिकारी संन्यासी
पटु प्रबुद्ध जननायक
पूज्यपाद स्वामी की
अतुल शक्ति से
सभी प्रभावित नमित चकित थे,
जन-हित चिन्तक राजनीति विद्
क्रियाशील उस महापुरुष को,
समय-समय से
कई राजनीतिक दलवाले,
नेताओं ने
दाँव पेंच से गर्भित
कूट पैंतरों द्वारा
अपने दल विशेष के
आकर्षक फन्दे में
घेर फँसाना चाहा ।
किन्तु आणविक
था उनका व्यक्तित्व
वे निर्झर उद्दाम
सदा लहराते,
तोड़ शिलायें राह बनाते
मधुर स्त्रोत से मृदु लहरों से
नवजीवन छहराते
रहे प्रवाहित होते,
गौरव गरिमा मर्याद से
अप्रतिहत गति
अभ्यूदय की ओर ।
वे आडम्बर छल प्रपंच के
सब दिन रहे विरोधी
सत्य न्याय का
पक्ष लिया उन्होंने
उनकी रक्षा हेतु निरन्तर,
किया कठिन संघर्ष,
•अपने सावधान उत्तर कालीन
गहन राजनीतिक जीवन में
मार्क्सवाद के
मौलिक सिद्धान्तों को
समझ-बूझ उन्होंने,
निष्ठापूर्वक माना,
फलस्वरूप व्यवहार क्षेत्र में,
सभी वामपक्षी लोगों की
पारस्परिक एकता खातिर,
कोशिश करते रहे अन्त तक
प्रथम यत्न मुंबई नगर में
कलकत्ते में यत्न दूसरा
पुन: राजधानी पटने में,
हुआ तीसरा यत्न,
इस प्रकार बारी-बारी से
तीन बैठकें आयोजित कर
यतिवार ने विवेक पौरुष से,
उन्नति का प्रशस्त-पथ
भली भांति दिखलाया,
किन्तु क्रान्ति के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कंठी-मालाधारी,
कितने कुटिल मसीहाओं ने
पार्टी के प्रपंच में पड़कर,
उनका पग पीछे को खींचा ।
तात्पर्य कि-
जन कल्याण विरोधी
कुटिल नीति अपनायी
और दुराग्रह के वश,
वाम पक्ष के स्नेह समन्वय
मेल-मित्रता वाले,
पुण्य कार्य में
बार-बार रोड़ा अँटकाया,
और ठोस संयुक्त मोर्चा के
यज्ञीय कार्य को,
भ्रमोन्माद वश भ्रष्ट किया ।

संग दोष से रहित सर्वथा
कुशल कर्म योगी निर्लेप
सुधी सौम्य अध्यात्म-विशारद,
गुणातीत संन्यासी
स्वामी जी विरक्त संतों के
कुल भूषण थे
उज्ज्वल दीप शिखा-सी,
उनकी बुद्धि प्रखर-
मेधा प्रचण्ड थी,

ब्रह्मचर्य अखण्ड तड़ितवत्
अग्नि समान स्वभाव प्रज्वलित
और सर्वतोमुखी-
अगाध पांडित्य,
अतल महासागर की भाँति
था विशाल गम्भीर ।
संतों की गौरव गरिमा का
उन्हें सदा ही पूरा ध्यान रहा ।
वे उसके संरक्षक
सम्यक सावधान प्रहरी थे,
इस प्रकार प्रेरित हो उनसे
जनहित के अनुरागी,
प्रगतिशील संतों ने
धर्म समन्वय
सदाचार-परिपालन
और सांस्कृतिक
उन्नति के विचार से
अपना एक संगठन नूतन
खड़ा किया तब,
जिसकी संज्ञा
अखिल भारतीय-
विरक्त महामण्डल थी ख्यात,
आगे चलकर उस संस्था का
विश्रुत अयोध्यापुरी तीर्थ में
हुआ भव्य पहला अधिवेशन
उनइस सौ उनचास
ईस्वी सन् के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नव अप्रैल
रामनवमी के
शुभ अवसर पर,
पहले दिन गोवर्धन मठ के
पूज्यवाद शंकराचार्य
स्वामी कृष्ण भारती तीर्थ
उस आयोजित समारोह के
सम्मानित अध्यक्ष बने थे
पूज्यपाद ब्रह्मर्षि-शिरोमणि
विश्ववंद्य जननायक
अनंत श्री विभूषित यतिराज,
स्वामी सहजानन्द सुचिन्तक
दिनमणि के समान तेजस्वी
थे अध्यक्ष दूसरे दिन के,
संतों के उस रंगमंच से
धर्म भीरुता अकर्मण्यता
संशय प्रमाद अवगति की
विषम घड़ी में
उनका शंखनाद सचमुच में
था अद्भुत आह्वान क्रान्ति का
अधिवेशन के समय वहाँ पर
अवध-धाम में
आस-पास के कई जिलों से
लगभग पचास हजार
नव जागरण प्रभावित
शोषित-दलित किसानों का दल
झंडा लाल लिए हाथों में
और बीच में कहीं-कहीं पर
चक्र-अलंकृत
राष्ट्रध्वजा तिनरंगी
लहराता उत्साहित
नारों से आकाश गूँजता
अपने प्रिय किसान-नेता की
युग वाणी सुनने आया था ।
सहज सनातनधर्मी,
नान मतावलंबी
एकत्रित विरक्त संतों का
और अन्नदाता अनुरागी
तपी किसानों मजदूरों का
सरयूजी के पावन तट पर
भारतीय संस्कृति की
अनुपम सुन्दर प्रतिमा
वंदनीय आदर्श बंधुवर
राम-भरत की
उस अवतरण-भूमि में
विनयशील का
श्रद्धा भक्ति विराग-त्याग का
अद्भुत शान्ति-क्रान्ति का
सहसा पावन-संगम
सचमुच दर्शनीय था ।

अवधधाम के ऊपर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहे गये उस
भव्य संत-सम्मेलन
के कुछ पहले
ईस्वी सन्
उनइस सौ उनचास मार्च की
तिथि बारह तेरह को
शाहाबाद जिला के
गाँव ढकाइच वाले
बिहार प्रादेशिक
महिमामय किसान-सम्मेलन के
सोलहवें अधिवेशन के
शुभ अवसर पर
अपने अध्यक्षीय भाषण में
श्रद्धास्पद युगपुरुष यती ने
परम्परा के दबे-पिसाये
दुःखी किसानों-मजदूरों के,
उज्ज्वल भविष्य की
शुभ चर्चा के क्रम में
मौलिक वचन कहे यह थे कि
"जो अन्न-वस्त्र उपजायेगा,
अब सो कानून बनायेगा,
भारतवर्ष उसी का है
अब शासन वही चलायेगा ।"
पहले-पहल उन्हीं ने
'जय किसान, जय मजदूर' का
नारा वहाँ बुलन्द किया था,
उसी सिंह-गर्जन में

आजादी के
'वर्तमान' खोटे सिक्के का
भंडा फोड़ किया था उनने,
उनका कहना था कि-
"जैसे जनता
धर्मध्वजी तीर्थपंडों के
पाँव पूजती और-
चढ़ावा चढ़ाती है,
उसी तरह अब
कांगरेस के
इन राजनीतिक पंडों को
वोट और पैसे का
चढ़ावा चढ़ायेगी,
अगर कंठीमाला और
रामनाम के पीछे
छिप जाते हैं सभी कुकर्म,
तो इनको भी
मुनि का वेश बना आकर्षक
अपना पाप छिपाना,
और नीति-पटुता से
उल्लू सीधा करना है,
अतः इन्होंने देखा कि
हम भी नये किस्म का
राम नाम और
नई कंठीमाला
तैयार करें ।
इसी ख्याल से,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गाँधी जी की मूर्ति बनाकर
ये खाजा टोपी वाले,
नये राजनीतिक पंडे अब
तेजी से बनते जाते हैं
इनकी यह निपुनाई
निरी कलाबाजी है
यह जयजयकार रामधुन
और चर्खा-धुन की,
कोरी आधुनिक
कंठीमाला है ।
उन्हीं सब चीजों के पीछे
राजनीतिक महापाप
छिपे धुलेंगे
ऐसा इनने मान लिया है
धार्मिक साधु-फकीरों से ही
धूर्ततापूर्ण
राजनीतिक फकीरी का
पाखण्ड इन्होंने
चालाकी से सीखा है
गाँधी जी ने
लाख मना किया कि
"'माउंटबेटेन-योजना' को
लात मारो और
पूण्यभूमि भारत को
छिन्न-भिन्न मत होने दो तुम ।"
तो क्या सिद्धहस्त इन
परम कुचक्री नेताओं ने
सुनी एक भी उनकी ?
पंद्रह अगस्त-
सन् उनइस सौ सैंतालिस के,
पहले जो कांगरेस
आजादी के दीवानों की
प्रभु जमात थी
योग-संस्था थी
उसके बाद वह भोग-संस्था
निश्चय ही बनने लगी,
यह कटु सत्य-
उस महात्मा की
तीक्ष्ण दृष्टि ने देखा
और चाहा कि
वह जिस शान से जीवित रही
उसी शान से
दफना दी जाय ।
तिल-तिल करके
उसकी मौत और
दुर्दशा उन्हें-
बर्दास्त न थी ।
योगियों की जमात बदलकर
भोगियों का मठ बने
यह सोचकर गाँधी जी
तिलमिला उठे थे,
और कांगरेस को
समाधिस्थ करने की
बात कही समयोचित ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किन्तु महंथी के भूखे इन,
चेलों ने गुरुवर की
एक भी न सुनी,
छोटे से बड़े कांगरेसी
सत्ता पद सम्पत्ति लोभ में
कौन कुकर्म नहीं करते ?
कांगरेस अब
गद्दीनसीनों की
गद्दी बनाये रखने
और उन्हें तथा उनके,
पिछलग्गों की
टुकड़खोरी का
साधन मात्र रह गयी है ।''
उस वीतराग यतिवर
युगद्रष्टा प्रबुद्ध पटु,
अनुपम महापुरुष की,
उद्घोषित वह वाणी
सत्य सिद्ध होती
देखी जाती है ।

भला कहें तो
निर्भय हँसते,
शूली की शैय्या पर
धरकर अपने चरण सहज ही
परम प्रेयसी मृत्यु देवि का
स्वागत करने वाले
भारत माँ के लाल लाड़ले
बालकृष्ण रामा-दामोदर
पूना के चापेकर बन्धु
शूर शिरोमणि अवध बिहारी
भाई परमानन्द विप्लवी
तरुण पिंगले-फड़के,
भाई बालमुकुन्द विलक्षण
मदन लाल या खुद्दी राम
बिस्मिल रोशन सिंह लाहिड़ी
अमर पुत्र अश्फाक
अन्तर्वेद विराजित शोभन
पुण्य त्रिवेणी-संगम की उस
दिव्य यज्ञ-शाला में
श्री चरणों में
शीश-सुमन अर्पित कर
स्वतंत्रता का
स्वर्णिम-दीप जलानेवाले
दीक्षित होता
अतुल चन्द्रशेखर आजाद,
राजगुरु सुखदेव भगत सिंह
आदि अनेकों
बलिदानी वीरों की
ब्रह्म लोक में पहुँची
विभु आत्माएं,
देख देश की यह दुःख-दुर्गति
और प्रपंची नेताओं के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भोगवाद का नंगा नाच
तथा चतुर्दिक फैले
भ्रष्टाचार घृणित का
यह रोमांचक दारुण-दृश्य,
पारस्परिक मिलन-गोष्ठी में
क्या उद्धार सुनाती सुनती
और सोचती होगी ?

परम्परा के दबे-पिसाये सीधे
सच्चे कर्मठ
सजग किसान मजूर,
विद्यालय के
धुनी जागरूक छात्र,
गाँव-नगर के
वीर साहसी
नवयुवकों की टोली,
सबने उचित समय पर
राष्ट्रनायकों की पुकार सुन
सुख सुविधा उन्नति की,
कितनी मधुर कामनाएं ले
आजादी के विकट-युद्ध में
अमित त्याग बलिदान किये
किन्तु आज तो ठगे गये वे,
कुटिल नीतिपटु
मालदार जमींदारों ने
दाँव-पेच से बाजी मारी
वेष बदल सत्ता हथिया ली ।
वातावरण देश का बदला
कुटिल फिरंगी शासक
गद्दी छोड़ हटे पर
दु:ख-विपदाओं को न्योता दे
घर में आग लगाकर
पुण्यभूमि को खंडित करके ।
जटिल समस्याएं बहुतेरी
हिमगिरि के शिखरों की भाँति
कठिन चुनौती बनकर
खड़ी सामने दीख रही हैं,
मध्यमवर्गी पूँजीवादी नेताओं का
प्रबल लोभ ही
कारण बना पतन का
अभ्यूदय-विकास की
चिर संपोषित
सुविचारित अनुमोदित
कार्ययोजनाएं बहुतेरी
हुईं नहीं कार्यान्वित,
केन्द्र और राज्यों के
सचिवालयों में
दबी-दबाई पड़ी रही
अपने सदुद्देश्य में
हमें सफलता तभी मिलेगी
जब कि सभी वामपक्षी दल
अपना अन्त:करण शुद्ध कर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक सुदृढ़ संयुक्त मोरचा
गठित करेंगे
और किसान-सभाएं
सगरे गाँव-गाँव में
प्रौढ़ बनाकर
जन-संघर्षों द्वारा
क्रमश: आगे बढ़ चलेंगे
इष्ट लक्ष्य की ओर ।

महापुरुष मुनि-पुंगव युगाराध्य
युगपुरुष विलक्षण
योगिराज जननायक
अग्रदूत जनयुग के
स्वामी सहजानन्द वस्तुत:
लोक संग्रह के हेतु
ब्रह्मलोक से
धरती पर उतरे थे ।
वे निश्चय ही
निर्मल ब्रह्म स्वरूप स्वयं थे
ऋषिमुनियों की
तपोभूमि में
धरा-धाम के भूषण
त्याग तपस्या सदाचार की
सहज सौम्य प्रतिमूर्ति
विप्रवंश की
वर्तमान अवगति को देख
और देखकर
धर्म-कर्म की अतिशय हानि
घोर अविद्या भ्रम-प्रमाद के
जटिल जाल से उन्हें छुड़ाने
सर्वाङ्गीण विकास प्रगति का
सुगम परिष्कृत मार्ग दिखाने
जनहितकारी
अमल अद्यतन धर्म सिखाने,
शोषित दलित किसानों
मेहनतकश मजदूरों
धीर साहसी
विद्या-प्रेमी तरुणों
विनयशील करुणा सेवा के
सुधी-पुजारी
तपी साधुसंतों को
युगानुरूप परमार्थ धर्म की
सात्विक शिक्षा देने
और भीरुता अकर्मण्यता
आडम्बर पाखण्ड दंभ के
दलदल से निकालकर उनको
समता शांति विषाद्-मुक्ति के
नये प्रशस्त परिष्कृत पथ का
अभय साहसी पथिक बनाने
दिव्य सनातन-
पुण्यक्षेत्-कुरुक्षेत्र भूमि में
विश्वरूप दर्शन का
नगद लाभ पहुँचाने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विधि-हरि-हर श्रृंगार मनुज को
शोषण-दोहन-उत्पीड़न से
सम्यक मुक्ति दिलाने
अभ्यूदय शिव निःश्रेयस के
उत्तम लक्ष्य विन्दु तक
पहुँचाने आये थे
पर युक्त हो
इसी पुनीत यज्ञी कार्य में
एक कुशल ऋत्विज की भाँति
वे आजीवन
दत्तचित्त से लगे रहे,
उनका समग्र जीवन ही
दुराग्रही दंभी अभिमानी
अन्यायी लोगों से
विकट युद्ध करने में बीता,
वे स्वतंत्रचेता प्रबुद्ध
और सहज मौलिक चिन्तक थे,
अपने सच्चे वेदांती
सर्वात्म-दर्शन की
अत्यन्त ऊँची
सबल भावना ने ही उनको
सुघर राष्ट्र-काया के
मेरुदण्ड बल
प्राणाधार 'किसानों का'
सदय विनीत अनन्य पुजारी
बना दिया था ।

सघन सलोने वृक्षों
और मनोहर
लता झाड़ियों से आच्छादित
भाँति-भाँति के
रंग-विरंगे सहज सुगंधित
आकर्षक पुष्पों से सज्जित
पाँच पहाड़ों
विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि,
और सोनगिरि, वैभार गिरि की
अति ललाम गोदी में
बसा राजगिरि नगर अनूठा
पुण्यधाम अनुपम प्राचीन
धर्मशील नृप वसु ने
कभी जहां पर
अश्वमेध मख
विधिपूर्वक संपन्न किया था
और जहाँ पर
जरासंध के
वैभवशाली राजतंत्र की
तूती बोल रही थी,
तथा सुअवसर पाकर
मगध महाजनपद की
गौरव गरिमावाली
सुदृढ़ राजधानी थी
बिंबिसार अजातशत्रु के
तेज-ताप विक्रम-वैभव की
ध्वजा धवल फहराती थी,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्ववंद्य युगपुरुष तथागत
श्रमण शिरोमणि बुद्धदेव की
तपो-भूमि थी,
मगध देश के
बामन-वंश-शिरोमणि
सुगत-धर्म-सेनापति
सुधी विचारक सारिपुत्र की
धर्मशील योगी श्रद्धेय
मौद्गलायन भिक्षुप्रवर की,
भिक्षु-संघ के
धर्माध्यक्ष धुरंधर
कुशल मार्ग-दर्शक मेधावी
विमल विभूति महाकाश्यप की
सुभगा जन्मभूमि शुभ,
दीक्षा-शिक्षा-भूमि
शांतवेणुवन के अति पास
किसी पुरातन
भिक्षु बिहार भव्य के
उच्चावशेष भूभाग रम्य पर
गोरक्षिणी धर्मशाला में
सत्रहवें बिहार प्रादेशिक
किसान-सम्मेलन के
अधिवेशन में,
ईस्वी सन् उनइस सौ पचास
अप्रैल अठाइस उनतीस
युगत तिथि को
सहज मुदित मुद्रा में

अतुल अलौकिक
यती शिरोमणि
संत विप्लवी,
महाप्राज्ञ तेजस्वी
नूतन युग के जननायक के
मुक्ति-मार्ग दर्शक गुरुदेव
दिव्य दक्षिणामूर्ति वंद्य के,
अंतिम दर्शन हुए मुझे थे ।
महानिर्वाण प्राप्ति के पहले
पुण्यतीर्थ उस
नगर राजगिरि में समवेत
उक्त किसान महामेला में
हजारों-हजार शोषित-दलित,
किसानों के बीच
उनका अंतिम किन्तु गम्भीर
सिंह गर्जन हुआ था
जिसमें उन्होंने देश के
असंख्य असहाय
निसि-दिन अभावग्रस्त
दरिद्रता की दुखद गोद में
पलने वाले,
जमींदार तथा उनके
कार्याधिकारियों के
रोज-रोज के जोर जुल्म से
उत्पीड़ित किसानों की
आर्थिक सामाजिक एवं
राजनीतिक मुक्ति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा चिर-आन्दोलित
जमींदारी-प्रथा के
उन्मूलन का
शुभ उद्घोष किया था,
सुधीजनों का
अनुमानित विचार यह है कि
महापुरुष मुनि बुद्धदेव
तथा तीर्थंकर
महावीर स्वामी के
महाप्रयाण के बाद
ढाई हजार वर्षों के बीच
यह पहला ही अवसर था जब
मगध के इस राजगृह के
खण्डहरों में
बीसवीं शताब्दी के
एक कुशल जननायक
परमविरक्त यती की
मर्मस्पर्शी पुकार पर
अपने भौतिक एवं
उसके द्वारा
अन्ततोगत्वा
आध्यात्मिक त्राण के लिए
इतनी बड़ी संख्या में
जनसमूह श्रद्धालु
अविरल भक्तिभाव से प्रेरित
उक्त काषायधारी
संन्यासी के अनुपम
उपदेशामृत
श्रवण-पान करने हेतु
था सहर्ष एकत्र हुआ ।

जीवन के आखिरी दिनों में
स्वामीवर के
कुछ दांतों में
पायरिया की
सामान्य शिकायत थी,
सहज-भाव से सतत जागरूक
प्रत्युत्पन्न बुद्धि वे
इसके लिए बहुत पहले से
पूर्ण सचेष्ट रहे कि
उक्त सूक्ष्म कारण से
आमाशय में
कोई गड़बड़ी न हो,
अतः समय से
कलकत्ते जा
विख्यात सातों सिमरी वाले
अपने भक्तसेवकों
श्री हरगोविन्द तथा
श्रीराम पाण्डेय
श्री हरिवंश पाण्डेय,
और सत्यनारायणराय
आदि की,

CC0: In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहायता से,
राजकीय मेडिकल कालेज
अस्पताल के
कई अनुभवी चिकित्सकों से,
एवं दंत-चिकित्सक
विशिष्ट से,
स्वास्थ्य-सम्बन्धी
विद्यमान प्रश्नों पर
उचित विचार-विमर्श किया,
लौट वहाँ से
बिहटा-आश्रम में आने पर
समय-समय से पटना जाकर
वे पायरिया-प्रभावित
कुछ दांतों को,
डॉक्टर टी.एन. बनर्जी का
प्रेमपूर्ण सहयोग प्राप्त कर
बारी-बारी से
सबिधि उखड़वाते रहे
उसी अवधि में
बिहटा आते-जाते
मैंने यह देखा कि
कुशल संयमी यती का
सुंदर स्वास्थ्य दिनोंदिन
गिरता जाता है
उधर दूसरी ओर
स्वयं प्राज्ञ उन्होंने
अपनी गति-विधि का विचार कर
शीघ्र स्वस्थ होने की
सबल भावना से प्रेरित हो
बिहटा से चल पटना होते
नगर मुजफ्फरपुर की
सुनियोजित यात्रा की
और सकुशल तेरह मई को
वहाँ सुनिश्चित
अपने नैष्ठिक सेवक
सम्मानित विधि-वेत्ता
श्री मुचुकुन्द शर्मा के
शुभ निवास पर पहुंचे,
तथा दूसरे ही दिन
ठीक मई चौदह से
विख्यात प्राकृतिक-चिकित्सक
डॉक्टर शंकरन नायरे की
पूरी निगरानी में उनकी
सविधि चिकित्सा शुरू हुई
इस प्रकार से क्रमशः
गिरे स्वास्थ्य में
होने लगा सुधार अपेक्षित,
और अगले दस जून तक
यह क्रम चलता रहा निरंतर ।
नैष्ठिक भक्त-अनुचरों
शुभेच्छुओं की
श्रद्धा भरी मदद से
विशाल आयोजन किया गया ।
वाराणसी पुरी से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मलीन श्री स्वामी जी के
ज्येष्ठ गुरुभाई
परिव्राजक ब्रह्मर्षि-वंशधर
वयोवृद्ध यती-कुल मूर्द्धन्य
स्वामि पूर्णानंद सरस्वती
एवं लहुरे गुरुभाई
स्वामी परमानन्द योगिवर
तथा संत ब्रह्मर्षि शिरोमणि
यती-समाज के
महा मंडलेश्वर कुल-तिलक
स्वामी हंसानंद महान्
धर्म-व्यवस्था
विधि-विधान के
परिपालन के लिए सहज ही
आदरपूर्वक गये बुलाये ।
भंडारे में
बिहार राज्य तथा बाहर के
प्रगतिशील नेतागण
नेंवता पाकर
श्रद्धापूर्वक पहुँचे ।
उनमें मुख्य अतिथि थे
प्रिय विख्यात नेताजी-
श्री सुभाषचन्द्र बोस के
कार्यकारी हाथ दाहिने,
आजाद-हिंद-फौज के
वीर सेनापति
जेनरल मोहन सिंह ।

उनके साथ किसान-सभा के
वीराग्रणी विप्लवी नायक
पंडित शीलभद्र याज्ञी थे,
तथा पूर्व के भक्त सहकर्मी
गंगा शरण सिंह थे ।
उधर बिहार-केशरी
माननीय श्रीकृष्ण सिंह ने
अपने कई मंत्रियों
तथा कार्यकर्ताओं-
सहित उपस्थित होकर
समारोह को सफल बनाया,
इस प्रकार से
गुणातीत युग-पुरुष अलौकिक
जननायक यतिवर के
भण्डारे के पुण्य-कार्य को
अमित प्रेम-श्रद्धा से
विधि-मर्यादा के अनुरूप
सफल बनाने में मौके से
पूरे बिहार के सभी जिलों के
विशेषत: पटना गया, और-
रोहतास-भोजपुर के,
तथा पूर्वी उत्तर-प्रदेश के
गाजीपुर बलिया के
उनके शत-शत
निष्ठावान् भक्तों ने
पूरा सहयोग दिया
आश्रम के-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पार्श्ववर्ती गाँवों के
कुछ सेवक सनातनी
सक्रिय विशेष थे ।
उनमें राघोपुर के
श्रीराम सागर मौआर
तथा शिव प्रसाद मौआर,
बिहटा के सरयू सिंह,
श्री कैलाश शर्मा, और-
पंडित कन्हैयालाल,
अमहरा के
श्री रामचन्द्र शर्मा
कुण्डल सिंह और औरों ने
तत्परता से खुले-हृदय से
अतुलित सहायता-सेवा की ।
पूज्यपाद स्वामी की
सार्वजनिक कर्मभूमि
श्रद्धा-प्रेममयी सिमरी के
पंडित रामसुभग पांडे,
और यती के
प्रिय 'बाबाजी-
श्री रमादर्श पांडे तथा
पंडित विश्वनाथ-
हरिवंश आदि ने,
उस समष्टि में
पूरा योगदान करके भी,
अपने सिमरी में
श्रद्धापूर्वक धूम-धाम से
बृहद् भण्डारा किया अलग से ।

ऐसे सुकृती महापुरुषों के
पुण्य जयन्ती समारोह शुभ
और नगद भण्डारे
युग-युग तक होते रहेंगे ।
सात्विक कृतज्ञ शुभकर्मी
मानव-समाज
इन्हें मनाता सदा रहेगा,
स्वामी सहजानन्द
संत योगीश्वर
अमर रहेंगे,
उनका दिव्य चरित्र युगों तक
ज्योतिर्मय स्तंभ निराला
चमचमाता बना रहेगा ।
और देश के
साधु-संत मुनि योगी
विद्या-व्यसनी पंडित-छात्र
जीवित-जाग्रत नौजवान
मेहनतकश किसान-मजदूर
सभी वर्गों को
देता रहेगा विमल प्रकाश ।
उनकी उज्ज्वल कीर्ति-कहानी
ललित-अलंकृत-मधुर सुगंधित
सैकड़ों-हजारों गांवों में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीर्थ-धाम नगरों में,
केरल से-
कश्मीर कामरूप,
हृषिकेश-काशी तक,
गूंजती रहेगी,
सूर्य-चन्द्रमा,
जब तक धरती पर,
ध्रुवतारा
सप्तर्षि-मंडल का,
पहरा रहेगा ।

भाद्रपद, शुक्ल द्वादशी
संवत् २०४५ विक्रमी
२३ सितम्बर १९८८ ई.
शुक्रवार
प्रात : आठ बजे यह
गाथा- काव्य पूरा हुआ ।

जून ग्यारह को प्रभात ही
अपने सहज सुपरिचित
विनयी भक्त-रत्न प्रिय
एवं कार्य क्षेत्र के सहचर
तथा 'हुंकार' पत्र के
संपादक प्रधान पटु
पंडितवर यमुना कार्यी के
श्रद्धा-सिक्त निमंत्रण पर
उनके गाँव मनोरंम
देवपार पूसा को
मनोनुकूल समझकर
यतीराज ने किया पयान ।
वहाँ सविधि परिचर्या उनकी
होती रही लगन श्रद्धा से,
अत: कुछ ही दिनों में
हुआ सुधार पर्याप्त ।
जून सत्रह को भोरे
ब्रह्मचारी रामाश्रय
स्वामी जी की
स्वत: लिखी चिट्ठी ले
गये मुजफ्फरपुर को
डॉक्टर शंकरन के पास ।
स्वामी जी ने
अपनी सारी हालत
चिट्ठी में लिख दी थी ।
उस समय वे
स्वस्थ तथा
पूर्ण प्रसन्न थे ।
दूसरे दिन
सदय शंकरन्
देवपार पहुंचे अपने ही ।
और वहाँ उन्होंने
स्वामी जी की
पूरी देख-भाल की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा उन्हें पूर्ण स्वस्थ पाया ।
स्वामी जी का
वजन भी लिया,
उनका वजन था
एक सौ साढ़े सत्रह पौंड,
और शक्ति,
एक सौ छब्बीस पौंड,
वहाँ मुजफ्फरपुर में
स्वामी जी थे
एक सौ सोलह पौंड,
डॉक्टर नायर
सांयकाल
स्वामी जी के लिए
अनुकूल,
विविध भोजन-सामग्री
नोट कराकर
वापस गये नगर को,
इस प्रकार स्वामी जी
जून पचीस तक
कार्यी जी के घर पर
सुख शांति से
पूरे पन्द्रह दिन रहकर
मुजफ्फरपुर आनेवाले थे ।
पूर्व निर्धारित
कार्यक्रम के अनुसार
जून छब्बीस को भोरे
डॉ. खन्ना मोटर लेकर

देवपार पहुंच गये ।
स्वामी जी झटपट ही
तैयार हो गये,
और पंडित कार्यी के साथ
चले मुजफ्फरपुर को ।
मुजफ्फरपुर आते हुए
मोटर की यात्रा ने
उन्हें परिश्रांत कर दिया
फलत: उनकी दुर्बलता
बढ़ गई सहज ही,
और तापमान भी
हो गया निन्नानबे ।
इस प्रकार स्वामी जी
कष्ट की ही दशा में
भक्त मुचुकुन्द शर्मा
विधिवेत्ता के
घर पर पहुंचे ।
मालूम होता है कि
बीच राह में ही वे
पक्षाघात विषम के कहीं
शिकार हुए आंशिक थे ।
भारी उदासी छायी थी,
कार्यी जी, डॉ. नायर
और मुचुकुंद शर्मा
सभी उदास बैठे थे ।
स्वामी जी की जीभ बंद थी,
मुख पर शांति विराज रही थी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोनों हाथ छाती पर थे
उनको कभी-कभी वे
मुँह पर ले जाते थे
और पुन: अपनी जगह पर
रख देते थे ।
मुझे ऐसा लगा कि
'स्वामी जी ध्यान मग्न हैं',
तथा किसी गहरे चिन्तन में
लगे हुए हैं ।
आप्तकाम
युगपुरुष अलौकिक
पूज्यपाद उस योगिराज की
उनकी कोई इच्छा नहीं थी
मस्तक पर शिकन न थी,
इस प्रकार से
आधी रात व्यतीत हुई
कले-कले अब
पौने दो बजने वाले थे,
चतुर्दिक नीरवता छायी थी
ब्रह्म-चिन्तन की
पुण्य प्रक्रिया
जो घंटों पहले से
विधिवत् क्रियाशील थी,
अपने लक्ष्य-बिंदु पर
पहुँच गई अब ।
यती कुल-भूषण
योगिराज स्वामीवर
दिव्यदृष्टि-संपन्न
महा निर्वाण-धाम की
परमानन्द दायिनी
अकथनीय यात्रा पर
ले जानेवाले विमान को
सम्यक देख रहे थे,
दूरभाष उस गगन-गुफा का
ज्यों ही श्रवण किया उन्होंने
बज़ क्या था-
सावधान हो,
आसन लगा शीघ्र ही
गरदन सीधी करके
प्राणवायु को
धीरे-धीरे ऊपर खींचा
लगा सिटकनी नव द्वारों की
उर के विमल विलोचन खोल,
डेग बढ़ाया आगे,
क्षण भर में ही
घर्र-घर्र की
जुड़ी गूढ़ध्वनि पड़ी सुनाई ।
और पड़ाका छूटे
ऐसा अप्रत्याशित
शब्द हुआ कुछ
इतने में ही
दशम द्वार वह
ब्रह्म-रंध्र खुल गया अचानक,
और उसी से

CC0: In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतुलित दिव्य-विभूति
रंगमहल से बाहर आकर
अनुपम विमान में बैठी
उड़ चली दिव्यदेश की ओर ।

जिस प्रकार कि
परम रम्य गोमुख से निकली
प्रवहमान गंगा की धारा
अपना आपा त्याग अंत में
शांत महासागर से मिलकर
हो जाती है
तदाकार तद्रूप,
वैसे ही वह
ब्रह्मलोक से
धरा-धाम पर उतरी
विमल सच्चिदानन्द स्वरूपा
ब्रह्म-विभूति अलौकिक
ब्रह्मलोक में पहुँची
मिली परात्पर पुरुष दिव्य से
अमृतत्व निर्वाण शांति का
'शुभ' शाश्वत-सुख प्राप्त किया ।

अति प्राचीन सुविस्तृत
और समादृत
धर्मग्रंथ,
इतिहास पुरातन
तथा पुराण-कथाएं
हमें बताती हैं कि-
प्रबल अविद्या-अंधकार घन
जब धरती को ढंक लेता है,
और सुअवसर पाकर
सबल बनी आसुरी-शक्तियाँ
दंभ दर्प अभिमान क्रोध में
सुधि-बुधि खोकर
मतवाली-सी
अति बिकराल रूप धर
मानवता को
पीड़ित और प्रताड़ित करतीं,
और उन्हीं के
दुराग्रही माया-सुत
पूंजीपतियों-सामंतों की
अपनी सिरजी
घोर विषमता का अतिव्यापक
कालकूट विष दाहक,
दिव्य-कला संस्कृति या
दृश्यमान इस
सकल भौतिकी
सुभग सभ्यता
तथा चतुर्दिक फैले
सुख-सुविधा-साधन अनूप के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सृजनहार इन
मनु के भोले
कोटि-कोटि श्रद्धेय वंशजों
दलित किसानों मजदूरों को
नित्य जलाता दु:ख देता है ।
उसी संकटापन्न समय में
उन अगणित कंठों का
आर्तनाद सुन
विधि-विधान अनुप्राणित
सहज लोक-मंगल व्रतधारी
सर्वकाम सर्वज्ञ
विषपायी दैवी विभूतियां
दिव्य तेजसंपन्न अभय हो
धरती पर आती हैं
और अमित पुरुषार्थ त्याग तप
बिहित कर्म-कौशल से
जनहित के उद्दिष्ट कार्य को
विधिवत पूरा करके
परमधाम जाती हैं ।

महामनीषी संत विप्लवी
यती शिरोमणि
स्वामी सहजानंद सरल-चित
करुणा की प्रतिमूर्ति सजीव
ऐसी ही विभूति थे,
जिन्हें करुण-क्रंदन सुन
शोषित-पीड़ित
दीन-किसानों-मजदूरों का,
त्याग धर्म का-
परम्परागत मार्ग प्रपंची,
कठिन रूढ़ियोंवाला,
वर्तमान के
ठने हुए कुरुक्षेत्र-समर में,
यो प्रयुक्त हो
सत्यन्याय का
सबल पक्षधर बनकर
विकट मोह संशय-विषाद में,
पड़े हुए उन
किंकर्त्तव्य-विमूढ़ जनों का
रथ हांकना पड़ा समय पर
अनुपम शंख फूंक प्रज्ञा का ।
और आजीवन
योगीश्वर-श्रीकृष्ण की भाँति,
निस्पृह निरभिमान निर्लेप
उन्हीं की सात्विकसेवा में
उनके अभ्यूदय विकास के
पुण्य कार्य में लगे रहे वे ।
उनका शुभ संदेश मार्मिक
सारयुक्त यह है कि-
'ये किसान-मजदूर वस्तुत:
नारायण के ही स्वरूप हैं,
सार्वभौम जनता ही

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जगन्नियंता जनार्दन है,
जनसेवा ही
उस जगदीश्वर की पूजा है ।
यदि यह मानवजीवन
सफल बनाना हो तो
निस्पृह सेवा कार्य करो ।
यह स्वधर्म है,
यही भजन है,
यही तपस्या-पूजा ।
यही अच्युतानंद महाप्रभु
विभुविराट् का
विश्व देव का
सर्वोत्तम आराधना ।
यही अगम इस भवसागर से
सद्य: पार लगानेवाला
सुदृढ़ सुरक्षित बेड़ा,
यही मुक्ति का
सुलभ-सुगम-शुभ-साधन ।
स्वामी जी के
विनय शील-सम्पोषित
जीवन-चरित्र से
यही प्रेरणा मिलती है कि
जन-सेवा का
मार्ग कंटकाकीर्ण कठिन है ।
सेवा-धर्म सुकृत श्रेयस्कर
परम गहन है ।
त्याग-तितीक्षा
अमित-धैर्य-साहस का
उपयोगी पाथेय साथ ले
दत्त-चित्त होकर इस ओर
कदम बढ़ाना होगा,
कर्मक्षेत्र में
कितनी ही बाधाएं
आती धकियाती हैं,
लेकिन कर्मठ व्यक्ति कभी भी
तनिक नहीं घबड़ाते
आगे आई चुनौतियों का
शीघ्र सामना करते हैं ।
वस्तुत: कठिनाइयां
कर्मशील जीवन का
पथ प्रशस्त करने आती हैं ।
उनके सम्मुख आ जाने पर
भीरुता अथवा प्रमादवश
अपना विवेक मत खोवें
कमर कसें टक्कर लें उनसे,
पुरुष धर्म है
सतत सम्यक पुरुषार्थ,
भाग्यवाद के सघन विपिन में
भाग शरण लेना तो
कायरता है,
घोर पतन है
आत्मघात है
अशुभ पलायनवाद असल में
पुरुष भाल पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है कलंक की टीका,
धर्मधुरंधर सेवक
नगद वही है जो कि
न्याय चुरानेवाले
शासक और शोषकों से भी
धर्मन्याय की
रक्षा के लिए सदैव लड़े ।
शुद्ध सचाई के विपरीत
किसी कीमत पर
दब झुक करके
अपमान जनक
कोई भी समझौता
सत्य न्याय के प्रहरी
सुधी संत सेवक या
सार्वजनिक कार्यकर्ता
करें कभी मत ।

न तन सेवा न मनसेवा,
न जीवन और धन-सेवा,
जिन्हें थी इष्ट जन-सेवा
सदा सच्ची भुवन-सेवा,
ऐसे अमृतपुत्र महान
स्वामी सहजानन्द विलक्षण
मुनि महर्षिवर
मानवता के सच्चे प्रहरी
और वस्तुतः
धर्मप्राण इस पुण्य-भूमि के
अतिबल धर्मदूत पटु
महाप्राज्ञ गौरव-स्वरूप थे ।
और दिव्य नवयुग के
प्रखर-प्रदीप्त
मध्यकालीन
सूर्य की भाँति
तेजस्वी बन
तपते रहे सदा ही ।
युगनिर्माता महापुरुष वे
वंदनीय हैं,
पूजनीय हैं,
विद्याविनय शील-व्रत
त्याग-तपस्या
धर्म-नीति के,
राजनीति के,
सभी कार्य उनके शुभ
सर्वभूत-हितकारी
अनुकरणीय स्तुत्य हैं ।

उनकी रचनाओं की
पारदर्शी पुष्करिणी में,
उनके व्यक्तित्व मनोहर का
शतदल खिलकर
हमारे सामने आता है ।
उनके रुचिर चारु लेखन से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके व्यक्तित्व दिव्य के,
अनगिनत पक्ष
उजागर होते हैं,
कभी वे सुविचारक रूप में
दिखते हैं,
तो कभी कर्मयोगी के
शुभ्ररूप में,
कभी एक राजनेता के
प्रखर रूप में
नजर आते हैं,
तो कभी सांस्कृतिक
देवदूत के सौम्य रूप में,
कभी एक योगी की भाँति
दृष्टिगत होते हैं,
तो कभी,
क्रांतिकारी की भाँति,
तथा कभी वे
एक भविष्यद्रष्टा की
भूमिका प्रस्तुत करते हैं,
तो कभी एक
समाज-सुधारक का
विशद कार्य करते हैं ।
यदि हम स्वामी जी के
लेखन के दर्पण के
सामने खड़े हो जायं,
तो उनका बहुमुखी
विराट व्यक्तित्व
साफ झलकता है ।

महापुरुष के
परमधाम जाते ही
विविध कला-कौशल से
पूर्ण अलंकृत
दर्शनीय वह-
महल मनोहर
अपनी नश्वरता बतलाता
हुआ धराशायी द्रुत,
काल-कर्म-स्वभाव-गुण घेरी
सहज पचीस प्रकृतियोंवाली
प्राकृत काया
पाकर योगपुरुष का
क्रियाशील रहती है,
उसकी अद्भुत लीला का
संवरण होते ही
इसे विखंडित होकर
निश्चय ही छितरा जान है ।
किन्तु कीर्ति-काया शुभ्र
अपना मधुसौरभ विखेरती
मंत्र-मुग्ध करती लोगों को
युग-युग तक जग में रहती है ।
आषाढ़ कृष्ण एकादशी
संवत् दो हजार सात विक्रमी
तदनुसार ईस्वी सन्

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनइस सौ पचास के
जून सताइस का
था प्रभात वह
जब कि स्वामी जी के
परमधाम जाने की
दु:खद सूचना
वज्रपात की तरह शीघ्र ही
फैल चतुर्दिक
लाख-लाख लोगों के
शोक-विलाप करुण-क्रंदन का
कारण बनी सताती
चिन्ता-चिता-अग्नि की
दु:खदायी लपटों में
बरबस रही जलाती ।

पर उस विषम घड़ी में
स्वामी जी के नैष्ठिक सेवक
पंडित यमुना कार्यी
धैर्य और साहस समेटकर
भक्तराज हनुमान समान
सक्रिय हुए शीघ्र ही ।
दूरभाष से
सूचित किया उन्होंने
सुधी बिहार-केशरी
डॉक्टर श्रीकृष्ण सिंह,
मुख्यमंत्री,
बिहार राज्य को
जो कि उस अवसर पर
ग्रीष्म-निवास रांची में थे ।

श्री कार्यी जी,
मुख्यमंत्री के ही
समुचित सुझाव पर
तथा वहाँ एकत्रित
सभी भद्रपुरुषों की
स्वाभाविक सहमित से
नगर मुजफ्फरपुर से
पूज्यपाद स्वामी के
उस पार्थिव शरीर को
मोटर-लंच सुसज्जित से
नारायणी तथा गंगा से
सद्य: लेकर पटना पहुंचे ।
उधर बिहार-केशरी,
और कृष्णवल्लभ सहाय,
श्री रामचरित्र सिंह,
श्री महेशप्रसाद सिंह,
पण्डित प्रजापत मिश्र
आदि सभी नेतागण
यथाशीघ्र ही पहुंचे
पटना के गांधी मैदान ।
महापुरुष उस
परिव्राजक का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहु प्रशंस्य गुणवान् शरीर,
गेरुवा वसन विभूषित,
चंदन-गंध सुपुष्प-सुसज्जित,
प्रचुर पुष्पहारों से
सविधि अलंकृत
जन-सम्मानित,
उन्नत झंडाचौक रम्य पर
चंदन की चौकी पर
दर्शनार्थ जनता के
रखा गया था
कुछ देरी तक,
उस अवसर पर
वहां जुटे बटुराये,
स्वातंत्र्य समर-योद्धाओं
और राज्य के
सर्वमान्य नेताओं
तथा हजारों-हजार
श्रद्धालु जनों के
श्रद्धांजलि अर्पण के बाद,
प्रणत मुख्यमंत्री ने
स्वयं आगे बढ़
पूज्यपाद यतिवर की
अर्थी को कंधा दे,
सामने लगी
खुली सजाई ट्रक पर
लोगों के संग
आदरपूर्वक रखकर,

उसके चलने पर,
पीछे-पीछे,
पैदल कदम पचास भरे तब
फिर अपनी मोटर में बैठ
नेतृ-मंडली
और बहुत से भक्तों
तथा राज्य के
उच्चाधिकारियों की
भारी जमात के साथ
श्री सीतारामाश्रम
बिहटा पहुंचे ।
वहाँ पहुंचकर
पूर्व व्यवस्था के अनुसार
परमहंस परिव्राजकाचार्य
अनन्त श्री विभूषित
दण्डी स्वामी का
वैदिक विधि से
पंचोपचार अर्चनपूजन कर
एकत्रित लोगों की
भारी भीड़ के बीच
'जय-जय' के गगन भेदी
तुमुल घोष के साथ
सांध्य-बेला में
उनकी रामकुटी के सम्मुखं
यती-परम्परा के अनुकूल
स्थल-समाधि दी गई उन्हें ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ठीक तीसरे दिन
उनतीस जून को
पंडित यमुना कार्यी के
सत्प्रयास से
राजधानी पटने के
अंजुमन इसलामियां
सभा-भवन में
सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता
पुरुषोत्तमदास टंडन की
अध्यक्षता में
देशप्रेमी सजग नागरिकों
बुद्धिजीवियों
तथा विभिन्न दलों के
राजनीतिक
कार्यकर्ताओं की
एक विशाल बहुमुखी
शोक-सभा
आयोजित हुई ।
जिसमें बिहार-केशरी सहित-
राज्य के सभी प्रमुख नेताओं,
और विशिष्ट विद्वज्जनों ने
श्रद्धापूर्वक शामिल होकर
भारतीय किसानों के प्राण
युगाराध्य श्री स्वामीवर को
अपनी भावभीनी
श्रद्धांजलि अर्पित की ।

तब आगे चल
यती धर्म की
शास्त्र-सम्मत मर्यादा
और लोक-अनुमोदित
परम्परागत रीति-नीति का
सम्यक विचार कर
पूज्यपाद स्वामी के
भव्य षोडशी भंडारा का
महानिर्वाण के
सौलहवें दिन
बारह जुलाई को
लोक-तीर्थ बिहटा-आश्रम में
भक्तप्रवर कार्यी जी
एवं स्वामी जी के
कट्टर सेवक
त्यागमूर्ति यदुनन्दन शर्मा
तथा अनगिनत
गणमान्य लोगों के बीच
हुआ सम्पन्न
और सबने लिया
एक ब्रत-
स्वामीवर की राह पर
चलने का,
उनके सिद्धांतों पर
अमल करने का ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दैवा की दिव्य विभूति

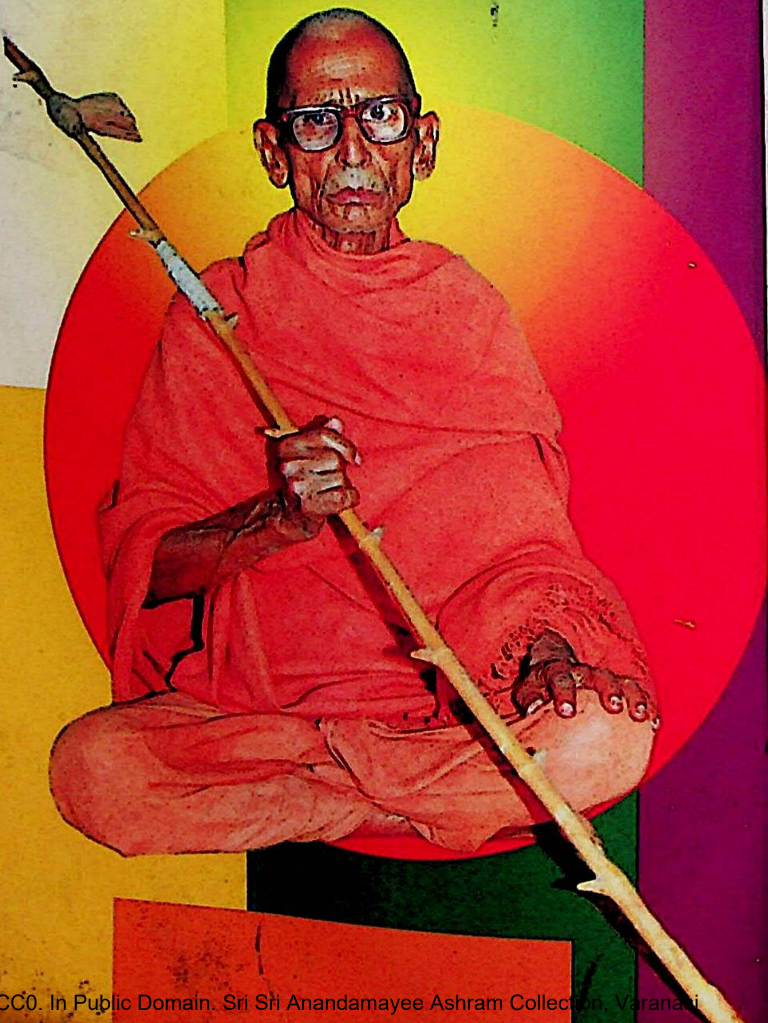

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi